

प्रकाशक

महिला मण्डल

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावर्क संघ,
बारह गनगोर का रास्ता, जयपुर ।

रचनाकार

रिय महासती श्री जडावकवरजी महाराज

मूल्य सवा रुपया

मुद्रक

जिनवाणी प्रिंटर्स
कोटे वालों का रास्ता,
जयपुर

अथ प्रारम्भ

ॐ नमः ॥ श्री विहराग्रमनमः ॥ श्रीपारवताभाजनमः ॥ अथ श्री
नवकार मंत्र सिद्ध्यते ॥ यमोअरिहताय ॥ यमोसिद्धाय ॥ यमोभाय रि
पय ॥ यमोअवच्छायाय ॥ ममो नोप सम्भसाह्वय ॥ एतोपययमोअमो-
॥ सम्भ पावपयाससो ॥ मगच्छाय ॥ सम्भेसीम ॥ पद्ममहेश्वरमगच्छा ॥ इति ॥
श्री साधुजी महाराज श्री १ ॐ पूज्य रत्नचंद्रजी महाराज ॥ वस पाट
पूज्य श्री हमीरमलजी ॥ वस पाट पूज्य श्री कजोहीमलजी ॥ वस
पाट पूज्य श्री बीनेचवजी महाराज ॥ तत्प्रसादात् ॥ साध्वी श्री बड़ाव
हू बरकट । दुहा । कवित । ब्रह्म ॥ स्लेक कु बलिवा । सबेय्य । बास्त ।
चोडबियो । समदासीयो । ससोको । सावसी । पद्म गोबीया ॥ कपदेसी ॥
आवक अगमाव पारणा करी ।

श्री जैन धर्म उपदेशमाला

‘जीवरै तू सीस तयो कर मग ’ यह एग

जीवरै तू आप ज्यो नवकरा ॥ और मत्र सब देखतारै मंत्र बड़ो
नवकर । माव सहित मवीयख मजोरै खरदै पूररो सार ॥ बीव
१ ॥ और रंग फर्गनारै एह किर्माणी रंग । गुह्य अनेक कला
खिपारै । म्यानी पांचमै अंग ॥ बीव २ ॥ शिवकर समपत
खैरै ॥ सीसबंटी सुरसास ॥ मूबै मन समरख कीयोरै ॥ सप
पद्म फुल्ल-मास ॥ बी ३ ॥ अगनी बल गज सीपनोरै ॥ भूत प्रेत
मय जाए ॥ दुममख से सज्जन हूबैरे । बिप अमरत सम बाया ॥ ४ ॥
रोग सोग मय आपडारै । दूर टसै ततकस ॥ बिद्धबिया बासा
मिसेरै ॥ बंजव भोग रसास ॥ बी ५ ॥ मसतां गुयता सीसता
रै । आतम उज्जल बाए । तूटे बसु कर्म ब्रैगनारै । अजर अमर

पद पाए ॥ जी. ६ ॥ इण लोकै मुख संपदारै ॥ परभव देव
विमाण । उत्कृष्टी भगति करै तो । पावै पद निरवाण ॥ जी. ७ ॥
इत्यादिक गुण छै गणारै । क्या कठालग जाए । गावै निज मुख
सरस्वतीरै ॥ तोपिण पार न पाए ॥ जी० ८ ॥ १६ सैं ६३
भलो रै ॥ जैपर मे वरमाल ॥ जाप जपै जडावजीरै । कार्तिक
दीपकमाल ॥ जी. ९ ॥ इति ॥

चोवींसी का २४ पद

दोहा ॥ अरिहंत मिद्ध समरुं मदा । आचारज उवझ्भाय ।
गुण गाऊ जिनराजना । विघन हरो महाराज ॥ १ ॥ ढाल ॥
रसीयाना गीतनी ॥ पद १ ॥ अ तरजामी हो आढ जिणंद तूं,
तो सम अर न कोय हो ॥ सोभागी ॥ तू सिवदाता हो भिराता
जगतैमै दीज्यो दर्शण मोय हो । सो. । अ : २ ॥ आकडी : मा
मरुदेवा रो ओदर उपन्या । नाभि रायजीरा नंद हो । सो० ।
जुगल निवारण जननी तारैया । प्रगथ्या पूनम चढ हो । सो० ।
अ. २ ॥ कचनवरणी हो धनुष्य पांचसौ । डिप २ करती देह
हो ॥ सो ॥ लाखचौरासी रो पूरव आउखो । जाणै देखे तेह हो ॥
सो० ॥ अ. ३ ॥ प्रथम परण्या हो पढमणि प्रेमसू । प्रथम
बैठा राज हो ॥ सो ॥ एकसौ पुत्र दोए पुत्री भली । सार्या
आतम काज हो ॥ सो. ॥ अ ४ ॥ भोग तजीनै हो संजम
आढर्यो । कीनो पर उपगार हो । सो. । आढ करी जिन धर्म
दीपावियो ॥ तीरथ थाप्या चार हो० । सो. ॥ अ ॥ ५ ॥
बीस हजार हो मुनि मुगतै गया ॥ समणी मैस चालीस हो । सो

कवल स्नेह हो करअ सीव कर्या । जग तरअ जगदीस हो ।
 सोमाः अतर ६ ॥ चोप्रीस अतिशय हो । बासी ३५ सै ॥
 इन्द्रय गुण मरपूर हो । सो । नित २ होज्यो हमारी बंशा । पोह
 उगते घर हो । सो अतर ७ ॥ प्रथम राजा हो प्रथम मुनिकर
 । इन्द्रहीअ भरत मोमर हो ॥ सो ॥ प्रथम तीर्थ कर प्रथम केवली ।
 सोम्या मुगत दपार हो ॥ सो ॥ अतर ८ ॥ समत १६ सै हो ।
 माहा सुभ १३ नै । जैपुर सपकल हो ॥ सो ॥ बे कर सोड़ी
 हो बंदै अडावजी । करज्यो हमारी सार हो ॥ सो ॥ अतर ९
 ॥ इति ॥

॥ पद २ ॥

जंघुडी रा भरतमै ॥ अजोण्या विन्यात ॥ अजत नमो जित-
 सभू राय तु मै फिठा । विजिपादे तु म मात । अज आंकडीः १ ॥
 तीन म्यान साथ सिया ॥ उदरबस्या नव मातै । बीत करी
 बननी तखी । नरपत दीस्या बासै ॥ अज २ ॥ जनम ययो
 फिराजनो । अजतै दीया सख नामै ॥ अ ॥ मोग तखी संजमै
 सियो । पोहोत्या अविचल ठामै ॥ अज ३ ॥ सुखदख साबे
 दुषा । सारै रया दुखदाए । अ ॥ धर्मनै धन संपियो । पापी
 दिया बिद्वज्य ॥ अज ४ ॥ तु म सरिखा मोए टालसी । ता हू स
 तारबाहर ॥ अ ॥ बिरद निधारी आपरो । मारी बेगीन्योसार ॥
 ॥ अ ५ ॥ कै म्हासायत सांपडी कै मुअ करम फटेर । अ बिबडा
 ज्यो अबसर नहीं । तो राखीन्यो बाडीसी ठोर ॥ अ ६ ॥
 मणिएडू अथवा नहीं । सो तुम देवो बठाय ॥ अ धीरअ घर
 करखी कठ । मनको अम मिटाय ॥ अ ७ । तीर्थकर हीबडा

नहीं । इण दुपमी आरा मांय ॥ अ. अतिसै नाणी छे नही । मैं
किणनै पूछू जाय ॥ अ. ८ ॥ १६ सै वरसे ५३ नै ॥ वद पद
कागण मास ॥ अ. ॥ जैपुर मांए जडावजी ॥ एम करै अरदास ॥
॥ अज ॥ ६ ॥

पद ३ ॥ राग पिचकारी नी

रे जिन संभव साचो ॥ वा प्रभूकूँ अब जांचोरै ॥ जी. आ. १ ॥
लेवो सरण मरण नहीं आवै किम नट थडने नाचोरै ॥ जि. २ ॥
नरप जितारथ । सैन्या राणी । तम सुत चरण चित राचोरै ॥ जि.
३ ॥ इंद्र जालरा ख्याल जगतमै ॥ ते किम जाण्यो सांचोरै ॥ जि.
४ ॥ अल्प दिनाकी है जिनग्यानी ॥ क्याने करमरस पाचोरै ॥
जि. ५ ॥ सब स्वारथ के न्याती गोती ॥ मोए ममत मत माचोरै ॥
जि० ६ ॥ ओ सी जाण आण मन समता छोड कूटंमको लांचोरै ॥
जि. ७ ॥ तज अग्यान नैत्रसूँ ॥ करम कागद तुम बांचोरै ॥ जि.
८ ॥ अब ही चेत देत गरु हेला ॥ जाण जगत सुख काचोरै ॥ जि.
९ ॥ ५३ नै साल जडाव जैपुर मे । प्रभूजी मुज कर बांचोरै ॥ जि.
१० ॥ इति ॥

पद ४ ॥ लावणी

धन ४ जवूकवरजी जोवन मे समता । नगरी अजोध्या भली
विराजै । कचन कोटकी ओट सही । सुंदर मंदिर बाग
वावडी । चौरामी बाजार कही ॥ मम्बर राजा इडकदीवाजा ॥
सिधारथ पटनार भइ । श्री अभिनदण नाथ निरजण । भव
दुख भजण आप सही ॥ आकडी. १ ॥ तसू कूखै तुम आण

उफन्या तीन म्यान से लार मही ॥ चउठे सुपना रजनी अंतै दखी
 अननी हरप मई ॥ तेढ़ाया पंडित परमात ॥ सुपन अर्थ सब बात
 कही ॥ भी २ ॥ तुम कुल मंडण अतिकुल खंडख ॥ अष्ट कर्मरू
 जीत सही ॥ रात्र कज्र कर संजम लेसी ॥ डेरा दसी मुगत मई ॥
 सुख सुख पाया बोत बचाया ॥ दान मान द साख दई ॥ भी ३ ॥
 गरम अकड़ पूरा कर अन्मा ॥ सुम बला सुम बार सही ॥ चोपठ
 इद्र छयन कु वारी ॥ हिंस्र मिल मंगल गाय रही ॥ पांच रुपकर
 मरु ऊपर ॥ जिगमिग बोली लाग रही ॥ भी ४ ॥ बाल प्याल
 कर बोवन बपमें, परण्या पदमख नार सही ॥ रात्र पाट बिलसी
 अग लीला, भोग रोग नम जाख सई ॥ कर डिटवाइ रीष
 छीटकरई ॥ एक बरस लग दान दई ॥ भी ५ ॥ चोयै ग्यान लियो
 जब संजम ॥ प्रम नरम होय करम दई ॥ कवल ग्यान ने केवल
 दशख ॥ लोखलोक प्रकस मई ॥ तीरथ थाप्या कर्मने क्षप्या ॥
 सन्म जरा कोई मरख नहीं ॥ भी ६ ॥ ३४ स अतिशय
 पैंतास बाखी तुम सम नाखा अवर नहीं । संशय छेद कियो
 चित निरमल । समकित जोत प्रकस मई । कई अनारी पार
 उवारी करब सारी मुगत सई ॥ भी ७ ॥ उपगार वार निज
 आतम ॥ साध साबरी लार छत्र मुगत पचायो करब साया ।
 अत्र अमर पद धान सही । तीन लोक के मस्तक ऊपर । जोत
 में जोत प्रकस मई ॥ भी ८ ॥ समत १६ से बरस ५३ नै ।
 । प्रभू मझिमा शुख पार नहीं ॥ पिब सबलेस देस औपुर में ॥
 जाइ लावखी अइत कइ । फागख बइ १२ स रविवारै । दर्शन
 दीजो आप सही ॥ भी ९ ॥

पद ॥ ५ ॥ देसी सहेल्यांए आंबो मोडीयो

श्री सुमत जिनेसर बंदीए । कर जोडी हो नीचो कर सीस कै-
 विघन टलै ममपत मिलै । सुखसाता हो पामै सूं जगीस कै ॥
 सुं. १ ॥ आंकडी ॥ कुसलपुरी नगरी भली तिहां सोमै हो मेघ-
 रथ राजान कै । आंण अखडत तेहनी । प्रजा पालै हो । निज पूत्र
 मान के ॥ सूं. २ ॥ तस राणी मंगलावती, जिन जायो हो त्रिलोकी
 नाथ कै । सुरनर नित पाए पडै । अ ग मोडी हो जोडी दोए हाथ
 कै ॥ सू. ३ ॥ दिन उ गै हरष बधावणा ज्यारै सायकहो । श्री
 सुमत जिणदके । दूजा देव मनावैता । किम भटको हो भूख
 मतिमद कै ॥ सूं. ४ ॥ आगै कदे देख्या नहीं । जो देख्यां तो नहीं
 पायो मर्म कै ॥ सुगुरुसे डरतो रयो कुगुरु घाल्यो हो । मिथ्यात्वरो
 भ्रम कै ॥ सू. ५ ॥ काल अनता भटकतां ॥ अवकै मिलिया हो ।
 तू साचो देव कै । चर्ण समीपे राखज्यो । कर जोडी हो सारुं
 नीतसेव कै ॥ सू. ६ ॥ जगतना देव डरावणा । केड वैठा हो स्त्री ले
 मग के ॥ शस्त्र विविध प्रकारना । रुठा टूठा हो कर रंग
 निग क ॥ सू. ७ ॥ जोग मुद्रा प्रभू आपरी । भवि पामै हो
 देख्या वैराग कै ॥ राग द्वेष जिणमे नहीं । सांचा जाण्या हो ।
 मोइ वीतराग कै ॥ सू. ८ । १६ मै वरसै ५३ नै । जैपुर मांड
 हो । फागण षड वीजकै ॥ टीज्यो दर्शन जडावनै ॥ भरपाइ होए
 मोटीगीज कै ॥ सू. ९ ॥

पद ॥ ६ ॥ देशी जवाड मानै प्यारां लागौजी

कुसुमपुरी नगरी भली । प्रभूजी हो श्रीवर राण उदारोरै ।

पदमप्रभू प्रास्य भवतारोरे । होषी मानै भिम जासो तिम वारोरे ।
 भांकड़ी १ ॥ सममाद पन्नासो । प्र । तम कुवे भवतारोरे
 ॥ प २ ॥ अग सुख जाय्पा करमा । प्र । लानो संजम मारोरे
 ॥ पद ३ ॥ अजर अमर पदवी लइ । प्र । सकल कियो अवता-
 रोरे ॥ पद ४ ॥ सिबरमन्वीरा मायना ॥ प्र ॥ अविषस प्रीत
 बभारोरे ॥ पद ५ ॥ तुम माता तुम ही पिता । प्र । तुम ही भक्त
 हमारोरे ॥ पद ६ ॥ खाना जात गुलामनै । प्र । जिम आयो
 तिम वारोरे । पद ७ । कैंपुर मोए जङ्गावरी । प्र । बिनतड़ी
 अवतारोरे ॥ पद ८ ॥

पद ७ ॥ देसी रीढमलरीं

बाजारसी नगरी बलाब । श्री प्रभूओ । प्रतिमैश राय
 सुभाब । हे राखी पोमावती माता तुम कशीए । हाए । देव
 निरंजसोए । मर दुख भंयसोए । सुपारसनस भांकड़ी १ ॥
 रुसियो में तो बल अनंत । श्री० । अजय न आयो मर भत । हे
 मोर करनै सनमुख राखन्योए । हाए ॥ २ ॥ दूही निरंजब
 दीनदयाल । श्री । मेरो मारी मरदुख भाल । हे सेरक जौबान ।
 सरखे राखन्योए । हाए ॥ ३ ॥ हूँ अनादि अघम अनाथ जी ।
 दुरबल बाखी राखो निब धाय । हे बल सतीन करस्यु पाकरीए ।
 हाए पाकरीए । हाए ॥ ४ ॥ पाउ दशम अवर न चाए । श्री ।
 पुदगल मरनै मिटाए । हे बर उतारो मोह मद बाकरीए । हाए
 ॥ ५ ॥ आठम अनुमै कितै ममाथ । श्री । दशन चारित्र म्याने
 अराथ । हे हुकम हुबै तो हाजर होबस्युए । हाए । ६ । म्या सरीखा

नहीं आवैं थांकी दाए । जी० । तोपीण थांरीठोरैं बताए । हे दूर रही
ने सनमुख जोवस्यूंए । हाएँ ॥ ७ ॥ कुधातु कनक सम थाए । जी० ।
पथर पारस नाम धराए । हे हूतो माख्यापत । पार्स ध्यावस्यूंए ।
हाए ॥ ८ ॥ १६ सैं ५३ नैं । सुखकार । जी० । माहा सुढ जैपुर
१२ म रविवार ॥ हे पार्मसू प्रमन्न थावो जडावसूँए । हाए ॥ ९ ॥

पद ८, देसीं डफकीं

चढा प्रभू । चढा प्रभू । सरण होज्यो तेरो । च० । आकडी ।
॥ १ ॥ लोक एकमैं तपत जोतकी । सकल प्रकास चढ केरो । चं० ।
॥ २ ॥ म्हासीणराए लिखमा पटनारी । अंगजात तूँतिणकेरो
। चं० । ॥ ३ ॥ नाम लियां नवनिधि घर आवैं । भजन किया
मिटै भवफेरो । च० ॥ ४ ॥ सरप मिंघ अगनी जल केरो । भूत-
पिमाच टलैं चैरो । च० ॥ ५ ॥ सात वीमन अरु पाप अठारा ।
करकैं भजन तीरैं तेरो । च० ॥ ६ ॥ संकटमाहे सरण तियारो ।
जो तुम नाम जपै गैरो । च० ॥ ७ ॥ माए मनोरथ चढ पीवणरो ।
पग लछण चढ केरो ॥ च ॥ ८ ॥ तिणथी नाम चढजिण
थाप्यो । जनक जात मिल मत्र तेरो । च० ॥ ९ ॥ १६ म ५३ न
तेरस नैं । म्हासीण सुढ पद केरो । च० ॥ १० ॥ जैपरमाए जडाव
कहत है । अब तो न्याव करो मेरो । च० ॥ ११ ॥

पद ९, देशी भीलारी

प्रभू जी नममा सुग थकी चव नगमत्र पायो हो । श्री
सुवध जिण्ड । नान ग्यान ले जननी क खे आयाहो । जिण्ड ।
आकडी० ॥ १ ॥ प्र० आकडी सुगरीधराधिप गया हो । श्री० ।

बधै सुपना देख रामा सुत जाया हो । जि० ॥ २ ॥ प्र० । चौसठ
 इन्द्र मिस कर म्होखर जाया हो । भी० । छपन हुबारी हस २
 मंगल गायाहो । जि० ॥ ३ ॥ प्र० । धनुष्य दक्ष्यौ काया । उग्रस-
 बरबी हो । भी० । संजम सेनै करिनी उत्तम करबी हो । जि० ४ ॥
 प्र० ॥ मनहो मारो मितवानै । उमायोहो । भी० । तन मन
 प्रसे । पिब जायो नहीं जावैहो ॥ जि० ॥ प्र० ॥
 दीन्यो दर्शय ओर कछु नहीं आठ हो । भी०
 महस सहस कर । फिर पाखी नहीं आठ हो । जि० ॥ ६ ॥
 । प्र० । सुबध सुबध दाता अगजीवन मिराह हो ॥ भी० ॥ जे तुम
 भ्याता ते पावै सुखसाताहो । जि० ७ । प्र० । माझा सुद पुनम
 ५६ ने । जैपुर बासो हो । भी० । जिनगुण गाया । पाम्या परम
 हुसासोहो । जि० ८ । प्र० । बे कर कोइ नडाव करै । मोण
 तारो हो । भी० । भवसागरमें मन्कट पार उतारो हो ॥ जि० ९ ॥

पद । १० । सीतलजिन २ सार करो मेरी

डीहसिख राय नंदा पटराखी । हात्री प्रभू जन्म दीयो धन मा
 वेरी ॥ सी १ ॥ तप्त मिट्टाई जनक तन फेरी । हा । गम
 धर्म मा कर फेरी ॥ सी २ ॥ सिखपी नाम सीतल जिन बाप्यो
 । हा ॥ गुबने पैसो मै मारी ॥ सी ३ ॥ अनम मरख की
 छाव बुझबो ॥ हा ॥ धग मिठ धुन मब फेरी ॥ सी ४ ॥ साव
 कर्म की सीन्या सखीनै । हात्री : मोहमहिष मोय लियो गेरी
 ॥ सी ५ ॥ मै बलहीन मोहमहिष म्होत दुख पाऊ । हा ।
 तुम लग जाब न दी बेरी ॥ सी ६ ॥ १६ सै १६ न तेरस मै

। हा. । अवीर गुलाल उडै घैरी ॥ सी. ७ ॥ चावत दर्शन जडाव
जैप्रमै । हा. नहींतो बतावो । मुक्तिकी सेरी ॥ सी० ८ ॥ इतनी
अर्ज गरजमै कीनी । हा. कै राखो चरणारी चेरी ॥ सी० ९ ॥

पद ॥ ११ । देसी मोत्यांरो गजरो भूली

सिहपूरी सुखकारो । विनराज । विनय दिनारों । सुभ बेला
सुभ बारो । तस्रं कूष लियो अवतारो । स्रंणो भव प्राणी श्री
हंस भजो वरनांणी । आंकडीः १ ॥ मात पिता सुख पाया । सुभ
सुपन बिलोकी जाया । इंद्र चोस्ट मिल आया । इंद्र राण्यां मंगल
गाया । सु. २ ॥ आतम अनुभव चीनो । तज भोग जोग तुम
लीनो । समग सुधारस पीनो । लियो केवल ग्यान नवीनो सुभ
३ ॥ लोकालोक उजासो । कियो घाती कर्मनो नासो । जोतमें जोत
प्रकासो । तिहां देखो जगत तमासो । सु. ४ ॥ तूं देवन को देवो ।
एक चीत करुं तुम सेवो । निज चरणामे लेवो । मुजै मुगतरीजमै
देवो । सु. ५ ॥ कुगुरूको भरमायो । मन हिंसा धर्म बतायो । काल
अनंत गमायो । अजू तुम दर्शन नहीं पायो । सु. ६ ॥ पुदगलको
रस पाको । मैं तो जन्म मरण कर थाको । दर्शन होसी थांको ।
जद मिटसी रूत्वो माको । सु. ७ ॥ थें छो पर उपगारी । अब
राखो लाज हमारी । चाउं सेव तुमारी । मैं तो भर पाहरीजवारी ।
सु. ८ ॥ १६ से ५३ नै वद फागण १४ स दिनै । कवे जडाव
ते धनै । तुम ध्यान धरै एक मनै । सु. ९ ॥

पद ॥ १२ । राग मोटीं जगसे मौवणी

बासपुज्य जिन बंदीए । जीकाइ कर जोड़ी हो उठी प्रमात ।

दर्शन न्याता दिल् बसै । अब दीज्योहो किरपा कर नाम आकड़ी
 ॥ १ ॥ तुम मात तुम ही पिता । बीछं तुम आता हो । भुज प्राप्त
 आभार । तुम बिन देव न दूसरो । इस जगमें हो क्य तारण
 हार ॥ बा. २ ॥ कर्मभेन चित्तमसि ॥ बीछं, मनबंछीय हो
 पूर पुनजोग ॥ तेवो सुख असतना ॥ बां बूझं हो सुधरे परलोग
 ॥ बा. ३ ॥ मगसागर में मगसा । दशन करहो देखीजो मोय ।
 नाच किया मैं नवानवा ॥ नटवा प्रिम हो रीजावा छेय ॥ बा
 ४ ॥ ज्यों सुप साधना ॥ बीछं देपीन हो सुख नाटक नाच ॥ तो
 तुम राखो तुम कनै ॥ निव रहस्यु हो चरखामै राख ॥ बा ५ ॥
 कै दुख पाया दपनै ॥ बीछं ॥ तो क्य दोहो हू अब मत नाच ॥
 रीज छीज दोन्यु मसी । नहीं नाचु हो मानू तुम बांच ॥ बा ६ ॥
 पुन्यहीन करणी बिना ॥ म गूची हो मनोरथ मास । पिछ
 तुम बिरह बीष्यारन । पूरिन्यो हो सही दीनदयाल ॥ बा. ७ ॥
 तारै निर्म आतमा ॥ बीछं बिन करणी हो इय तारण हार ॥
 कीनी इकनी बिनती ॥ तुम आगै हो सान्यो निषहार ॥ बा. ८ ॥
 १६ से १३ न ॥ मसो ॥ बीछं दिन इसमी हो बह फगवा
 मास ॥ जेपुरमाए बड़ापनै ॥ राखीज्यो हो चरखारी दास ॥ बा
 ६ ॥ इति

॥ पद ॥ १३ ॥ देसी यदुघर ताल लागीरै ॥

बिमल मत दीज्योही कर किरपा भुज साम ॥ फटे
 नहीं बुझ आपरी ॥ बस लेतां न सारी दास ॥ बिमल बिन
 देवे हमारोरी सागै प्राप्तज्यु प्यारोरी ॥ आ १ ॥ कर्मभेनमोम-

शीजी। लग रहे तणोताण ॥ किण वीद साजू हाजरी ॥ मानै
 नहीं आवै अवमाण ॥ वी० २ ॥ चाकर मांगे चाकरीजी ॥ ठाकर
 मांगे काम बिना रुजगारनी चाकरी ॥ तुम क्युनी कराओ स्याम
 ॥ वी० ३ ॥ गुणवतानै तारस्योजी । तो कांड आसान । पापी पलै
 पलै लागियो अव आवै वधाओ मान ॥ वी. ४ ॥ धनमै धन
 सब कूडताजी ॥ ए जगमै वीरहार ॥ निरधनस्रं नेह दाखवो ए
 उत्तम घर आचार ॥ वी. ५ ॥ दिया अछता ओलंभाजी ॥
 खमज्यो वारमवार ॥ सेवट तारै आतमा । पिण आप छो
 साखीदार ॥ वी ६ ॥ सुण सुख पाया सामजी ॥ तो मुक्त
 करोरीजवार ॥ खीज्या तो खिज मर्तै करो ॥ कैकाडो संसारस्र वारै
 ॥ वी. ॥ कीनी इतनी निनतीजी । भावै जाणमजाण ॥ १६ सै ५३ नै
 भलोजी ॥ जैपुर सेयै काल ॥ फागण वद १ मै दीनै । प्रभू नामै
 मगल माल ॥ वी ६ ॥

पद ॥ १४ ॥ देसीनगरी काकंदी हो मुनीसर आइए

जमवती राणी हो ॥ जिनेसर ॥ माता तुमै पीता ॥ सिंहस्थ
 नामै भूपाल ॥ सुण सुखदाता हो जगत विख्याता हो ॥ श्री०
 जिन ॥ अनत जिणद तु ॥ आ १ ॥ तुम सम ग्याता हो ॥ श्री०
 नही इण भरतमे दुपमी पचम काल ॥ सु० ॥ २ ॥ मनमे उमावो
 हो । श्री० नित पासै रहूँ । पिण मुज कर्म कठोर ॥ सु० ३ ॥
 सलाहा कृता हो श्री० थाम मिलणेरी ॥ विच २ कर रैया जोड ॥
 सु० ४ ॥ सगत अनती हो ॥ श्री० ॥ तुम हम सारैपी ॥ अतर
 मेरु समान ॥ ॥ सु० ५ ॥ इचरज मोटो हो ॥ श्री० टोटो भज

तैम ॥ रुस रया मगवान ॥ सु० ६ ॥ मैं अपराधी हो ॥ भी० ॥
 नाभी हुपै सया । नहीं पड़ी समझि छत्र ॥ सु० ७ ॥ माफ
 करीये हो ॥ अभिनय असातना ॥ बाब अम्पानी अवृद्ध ॥ सु०
 ८ ॥ समत १६ से हो ॥ भी ॥ बड़ अमावस्या ॥ ५३ नै ।
 फगवा मास ॥ सु० ६ ॥ जैपुर माण हो भी बाब बड़ावनी ॥
 निब घरवारी बी दास ॥ सु० १० ॥

पद ॥ १५ ॥ देसी आज सहरमै जीहजामारु सीप

धर्म जिनसर सु ब हीबडे बसो ॥ भूत नहीं खीण मात । सूरी
 जिन ठठल बैठा सुबत बागैठा ॥ पाद करु दिनरात ॥ भी ॥ प०
 आकड़ी ॥ १ ॥ पुदगल बेरी ओ सु ब केडे पठयो ॥ मीठो ठय
 दुख-दाय ॥ सु सानीषकरी हो ॥ तुम सरिखा हुपै । तो देठ
 हरे हटाय ॥ सु ॥ प० २ ॥ बिब सिध आगे हो । करि
 कृष्णामदी । फट मरत कब्र ॥ छ । गरब न सारी हो निब
 गुण भूतियो ॥ से दुख छुटके आज ॥ छ ॥ प० ३ ॥ राग ने
 बेरु दानु पोखिया । बौद्धि चारै कमाय ॥ छ ॥ आठ अमरो
 ओ बेरो लागीयो ॥ मिलन न दे म्हाराय ॥ छ ॥ पमजी
 ४ ॥ तन मन सरसैहो ॥ दशन देखवा ॥ बरस रया सु ब नैब
 ॥ छ ॥ सरदबीदा तो हम पासै नहीं ॥ किन्तु बिष आठ सैब
 ॥ छ ॥ प० ५ ॥ पंद बकोरा ओ मोरा मोहपशू ॥
 पतिवरता पति जेम ॥ छ ॥ इय बिद पाठ ओ दर्शय आपरो ॥
 पिब आइसे केम ॥ छ ॥ प ६ ॥ बीना बिलाप ओ बिब
 पेर तुम कनै ॥ कर कल्या कीरपाल ॥ छ ॥ बीजे दशय परसन

होयनै ॥ सेरग सामो जाण ॥ छं ॥ ध० ७ ॥ तुंम निरहै दिन
दोरा नाथजी ॥ खीण जायै छै मास ॥ छं ॥ पतलीचाछै ओ
पाणी खमै नहीं निस दिन जाय उदास ॥ छ ॥ ध० ८ ॥
ममत १६ से ओ वरस ५३ न भलो । फागण सुध पल गीज ॥
छ ॥ जैपुर माए ओ जोडी जडागजी ॥ सुंण लीज्यो धर
रीज ॥ छ ॥ ध० ९ ॥

॥ पद १६ ॥ राग पंथीडा वात कहूँ धुर छेहनैरै ॥

सरणो हो सरणो सत जिणदनोरे ॥ दीज्यो भव २ मायरे ॥
कीजे हो २ किरपानाथजीरे ॥ लीज्यो चरणा मायरै ॥ सरणो.
आकडी. १ ॥ नगरी हो नागपुरी रलीयामणीरे ॥ वसुसैण
भोपालरे ॥ अचलारे २ तस्र पटरागणीरे ॥ सु दीर रूप रसालरे
॥ स. २ ॥ स्वारथरे २ सीध त्रिमाणथीरे ॥ विलसी सुर
सुखसारहे ॥ चवनैरे आया मानव लोकैमेरे ॥ तीन ग्यान ले
लाररे ॥ सुखभररे २ सथी सेजमैरे ॥ जननी पाछली
रातरे ॥ सुपनारे २ चन्द्रै देखीयारे ॥ फल पूछ्यो
प्रभातरै ॥ स ४ ॥ भाखेर २ वाणी अमी समीरे ॥ होसी पुत्र
उदाररे ॥ उभयरे २ कुल उजवालैणोरे ॥ निज पर तारणहाररे
॥ स ५ ॥ जनमतरे मत हुई निज देममेरे ॥ मिरगीमार
निवाररे ॥ सूतकरे २ कारज सहकियोरे ॥ मिल कर छपन-
कुवाररे ॥ स. ६ ॥ चोष्टरे २ डद्र पदारियारे ॥ ले गया मेरुं
मजाररे उछवरे २ बहु त्रिद साचव्योरे ॥ जनीता जनक अपाररे ॥
सर. ॥ पोषीरै २ निज प्रवारनैरे ॥ पूरी मन की खतरे ॥ सउ

मिहारे २ कीची विच्यारवार ॥ नाम दियो भी संतरे ॥ स ८ ॥
 बालकरे बालपखै लीला करीरे ॥ बरस २५ स हमाररे ॥
 सीप्यारे २ कज्जा बोहतकरे ॥ परण्या पदमख नाररे ॥ स ९ ॥
 घाप्यारे २ पाट पिता तखार ॥ पदवी पद दोयर ॥ ग्यासबरे
 ग्यार मिग्या हू हो बसीर ॥ लीज्यो आगम बोयरे ॥ स १० ॥
 बिलसीर २ सुख संसारनारे ॥ मिसे लोकिजक देवरै ॥ बोत्तरे २
 ये कर बोझनेरे ॥ ग्यो सजम सै मेवरै ॥ स ॥ ११ ॥ बरसीरे
 २ दानब द करीरै ॥ बोग लीयो बगनाधरे ॥ बौबोर २ ग्यान
 सेद करीरै पदो पुत्र निज सापरै ॥ स १२ ॥ तपजप २ २
 करी सचेखवारै ॥ घायो निरमल ग्यानरे ॥ पासीरे २ करम
 खपायनर ॥ पाया केवल ग्यानरे ॥ स १३ ॥ कवत्तरे २ प्रग्या
 पासनर ॥ बरस २५ स हमाररे ॥ तीर्थरे २ सुष परताबियारे ॥
 पेल्या सुगत मबाररे ॥ स १४ ॥ संवतरे १६ से ५३ मल्लोर ।
 मैपुर शहरै मन्धरर ॥ संतब रे २ जपे ब्रह्मजीरे ॥ बसंत पंचम
 सनवाररे ॥ मर १५ ॥

पद १७ राग वेगे पदारो मैलथी

कुष जिनेसर नित नम् । ग्यामै गुख धनंत । गावै निज
 सुख सरस्वती । तेद न आवै धर ॥ कु आकड़ी १ ॥ सखद रूप
 रम गंध नहीं । नहीं फल नहीं मेद । देख्य रचना आपरी । मो
 मन अधिक उमेद ॥ कु २ ॥ ग्यान दीक पटमै नहीं । नहीं
 इख खेन समात । तुम सरीखी करखी नहीं । किय निष देख
 आय ॥ कु ३ ॥ राग बेख होतु नहीं । मोर करम सिपो बीत

सुण कोपियोजी । किण तेडाया भूपाल । जापो निज २ थानभां
 जी । नहीं प्रणाउं मारी बाल । मल० ७ ॥ मानभंग नृप चींतवैजी ।
 मणरा कर दिया सेर । महीला पुरी तिण अवसरेजी । घेर लीवी
 चौफेर । मल० ८ ॥ आपण जाणण गेकीयाजी । चिन्तातुर राजान ।
 दी धीरज निज तातनै जी । उदै महाप्रलवान । मल० ९ ॥ निज
 प्रकारे पुतलीजी । कचनमय रच लीन । भोजन गरस भरी हृतीजी ।
 उपगमू ढकढीन । मल० १० ॥ न्यारा २ तेडियाजी । चोज करी
 राजान । भाल सहित चित्रमालमेजी । बैठाया दे सनमान । मल०
 ११ ॥ मिणगारी मा पृतलीजी । देवी विस्मय थाय । एवी नहीं
 कोड अमतगीजी । तीन लोकरे माय । मल० १२ ॥ अति आसक्त
 जाणी करीजी । दूर फियौ ते टाट । निरुमी दूरगध आरुगीजी ।
 तुरत गयो मन फाट ॥ मल० १३ ॥ प्रतिरोध्या श्री मुख थकीजी ।
 अपमर देखी ताम । मत राचो डण रूपमैजी नार नरकनो ठाम ।
 मल० १४ ॥ वेगगी मजम लीयोजी । मुक्त गया जिन मंग ।
 जैपुर मांय जडावनैजी । थारा दर्शणगे उल्लरग । मल० १५ ॥
 १६ म वरम ५३नजी । फागण सुदी पखमाय । गुण गाया जिन
 राजनाजी । सूरता मिप्रमुख थाय ॥ मल० १६ ॥

पद २०

राग अवकै पीयर जाउ थारै कडाकड तीलाउंरे खटमल
 सुबादै । राजगिरी सुखकारी । गटमिंद्र पोलैप्रकारी । मनडा मेरारे
 हारे म मु मो व्रत जिन भेरा । मुनी । तुम टालो भन २ फेरा ।
 मुनी० ॥ १ ॥ सुमित्ररायकुलटीको । पोमाकोननणनीको

॥ म २ ॥ म्यान अनंत प्रद्योतो । तुम देखो अगत समाप्तो
 ॥ म ३ ॥ त दहनको दबा । मैं पाउ भरखली सेवा । म० ४ ॥
 म्मो मन मिलन उमातो । म ध्यान घर सुख भावा ॥ म ५ ॥
 सार करो द्विष मारी । मैपान्त्य तु मारी ॥ म० ६ ॥ मं तु मन
 नहीं ए पिच्छण्यो । मैं पच कुगल्लो ताप्यो ॥ म ॥ म० ७ ॥
 १६ म सुपवासो । मैपुर में प्रम दुलासो ॥ म० ८ ॥ ५३ न
 फाग्य मासो । बड़ाई करी भरदासो ॥ म० ९ ॥

पद २६ देशी कर हारे नीरु नागरवेल

बीजरथ राजा तुम पिताजी । कांई बिजियादे तुम मात ।
 चक्रे सुपना दलनजी । कांई । बाया तिरसोकी नाथ । जीसुखकारी
 मारा नमिण बीरद जिवांन बाया होए आस्यद । आकड़ी
 ॥ १ ॥ तु तारक विह लाकमेंजी । कांई तु म सम अवर न कोए ।
 अद्भुत रचना आपराजी कांई । सुगता इचरजमोए । जी० २ ॥
 मन प्रसै मिलन मलीजी कांई । इसल देखन नैख । किम
 बसावो मोमशी ॥ जी कांई । मिसकर मांचसैख । जी ॥ ३
 मोए मिथ्यात अग्यानताजी कांई । मारा निप्रगुल बिबा क्षियाय ।
 परगुलमणि फसैरदि ॥ प्रि ॥ मोय आयो क्षिब बिद आय
 ॥ जी० ४ ॥ अनंत म्यान प्रमख करी । प्रि कांई । देख रया
 जग मल्ल । मकड़ी प्रिम मांए फसीजी ॥ मानै अच तो बग
 निकल ॥ जी ५ ॥ कएक प्रक्रम ह कर्या । प्रि कांई । कएक
 आफ्नो साध ॥ तोडमला नहीं म्मार । जी । सही सीखै बंझ
 कए ॥ अ० ६ ॥ एह मनोरथ माहारा । जी कांई । गीगन

कुसम सम होए । निरधन जे जे चिन्तयै । जी कांठ । ते ते
 निरफल होय ॥ जी० ७ ॥ ओछी पूंजी पायनै मैं तो बात क्रियो
 घोषार ॥ सेठ मिल्या तुम माग्या जी । मारी । करता रह्यो
 सार ॥ जी० ८ ॥ १६ म वरस ५३न । जी कांठ । जैपुर फागण
 मास ॥ कीमन पल तीथ ३ नै जी । अग्र पुरो जडावनी
 ग्राम ॥ जी० ९ ॥

॥ पद ॥ २२ ॥ देसी नाथ कैसे गजको फंद छुड़ायो:

नेम प्रभु रापो मरण तुमारी ॥ एही अरज हमारी ॥ ने ॥
 आकडी ॥ समठ गीजे नरपें मोरीपुरको, सेमाको नदन नीको ।
 भयदुख भजण नाथ निगजन जाडव कुल मिर टीको ॥ ने० ॥ १ ॥
 तुम निन देव अनेरा जगत मे । ते मुज दाय न आवै ॥ छोड़
 इमरत फल डाडम दाखा । नीवोली कुंण सार्वै ॥ ने० ॥ २ ॥
 फिरत अनाड गड भव ० में ॥ दुखको छेय न पायो । दीन
 दयाल फिरपाल मिल्या तू । अक्के अक्कर आयो ॥ ने० ॥ ३ ॥
 ह मतहीन दीन तू समरथ ॥ जालो राय हमारी ॥ भवदधि
 माए । दृप्त मारो । अपनो मिठ मिचारी ॥ ने० ॥ ४ ॥
 तू ही तात मात अरु भिराता ॥ तू ही मैणमगेनो । तू सुखदायक
 मत्र मिठ लायक । प्यारो नेम नगीनो ॥ ने० ॥ ५ ॥ घरकी
 नार तार जम लीनो । अपनो कारज कीनो ॥ हमकूँ विसार
 मार नहीं कीनी ॥ यो अपजम किम लीनो ॥ ने० ॥ ६ ॥
 मण ओलभा मभाल करीजे ॥ तू मायक मोभागी ॥ अब ही
 तार सार कर मोरी भागदशा हम जागी ॥ ने० ॥ ७ ॥

१६स ४३न महा महीनै ॥ घरन सातम सोमवारो ॥ जैपुर
मंर बड़ाव जप्त है ॥ नाम प्रभू एक धारो ॥ ने० ॥ ८ ॥

॥पदा॥२३॥ देसी मेंदी तो धावण धन गई॥

सुगरीरा हो गाडा मास्त्री राय रतनक बाग मेंदी राखरी ।
आसवसैख छुत्त अस्तया उपगरी हो जिनबरजी । कइ मोमाद-
वीरा नन्द । भीजिनप्यारो छे । कइ प्रभू पासमिबंद ।
मोवनणरो छै ॥ आकडी ॥१॥ राखलीला सुख भोगरी ॥उपा॥
कइ लीनो सज्जम मार ॥भी २॥ कवलम्यान प्रकरसनै ॥उपा॥
कइ पोया मुगच मोम्हार ॥भी ३॥ मवसागरमे मरमा ॥उ०॥
कइ भीनी अनन्ती पार ॥भी ४॥ छइन मेदन तरबना ॥उ ॥
कइ कइता न आवै पार ॥भी ५॥ कठख करमम संचीया ॥उ ॥
कइ देख रयादो आप ॥भी ६॥ मायव बिरद बिप्यारनै ॥उ ॥
मारा कटो मबना पाप ॥भी ७॥ कमट काट निरमल कियो ॥उ०॥
कइ नाग ठवारखहार ॥ भी ८ ॥ मगत वीरल भगईत हो ॥उ०॥
मने दीज्यो मुगत मुफ्रम ॥भी ९॥ १६स ४२समै ॥उ ॥
सोवाग पचमीरा रात ॥भी १०॥ गुरबीबीरा प्रसादख ॥उ ॥
मैं छोव्या दान्यू हाथ ॥भी ११॥ चौमासो नवासहरमैं ॥उ०॥
कइ बड़ाव कर मोड़ ॥भी १२॥ गुण माया प्रभूकी कथा ॥उ ॥
कइ पूम्या मनरा कोड़ ॥भी १३॥

॥पद २४॥ देसी हा कनैया कान पियारो ॥

महावीर सामखके स्वामी ॥ बार २ प्रबभू सिर नामी । उ लात्तो ।
दीज्यो मव २ सेवइव तु अंतरबामीरे ॥भीरा॥ आकडी ॥१॥

क्षत्रिकुण्ड नगरी सुखकारी ॥ राय सिधारथ तिमला नारी ॥
 पीतमसे प्यारी ॥३०॥ रतन कूँख तस धारणी । जस जगत
 मोभारीरे ॥वीरा॥२॥ सुख सेजा सुभ पवनज कोलै ॥ पीतम साथे
 कर रग रोलै ॥ चाकर दासी चवर ढोलै ॥३०॥ कड सूती कड
 जागती निज खाट हींडोलैरे ॥वीरा॥३॥ दसमा सूरग थकी चव
 आया ॥ सुपन चत्र दस जननी पाया ॥ सुंण सिधारथ हरप
 मचाया ॥३०॥ पींडत मुख म्हारायजी ॥ सब अरथ करायारे
 ॥वीरा॥४॥ सुभ वेला सुभ मोरथ जाया ॥ चौण्ट इन्द्र मिल कर
 आया ॥ छपन कुवरीं मगल गाया ॥३०॥ पच रूप कर देवजी ।
 मेरू पर लायारे ॥वीरा॥५॥ भर २ कलस सरस वरसावै ।
 इन्द्र मन अनुकंपा ल्यावै ॥ बालक भै प्रभूजी दुख पावै ॥३०॥
 अग्रध ज्ञान जग भाण जाण निज सगत दीखावैरेः ॥वीरा॥६॥
 अनन्तवली अ गूठो चपे ॥ थर २ थर मेरूगीर कंपे ॥ महावीर
 सूरपत मुख भपैः जोडै दोन्यू हाथ नाथ कर किरपा हमपैरे
 ॥वीरा॥७॥ वरम २८स रया गिरचारी ॥ दोय वरस निरलेप
 निव्यारी ॥ भोग रोग से मनमा टारी । ३० । मात पिता सुरगत
 गया । लियो मजम भारीरे ॥वीरा॥८॥ तीन ग्यान घरसे सग
 ल्याया ॥ मनप्रजे मजम ले पाया । म्हो राजासे जग मचाया
 ॥३०॥ तपस्या कर महावीरजी मत्र कर्म खपाया ॥वीरा॥९॥
 केवल ले तीरथ उरताया ॥ चवढै मग भये मुनिराया ॥ गौतम
 मनका भरम मिटाया ॥ मुगत गया बीरदमानजी ॥ सासण
 बरताया रे ॥वीरा॥१०॥ १६म ५३न मुखदाइ ॥ प्रथम जेण्ट जैपुर
 कै माइ ॥ बाल मुनि चोमासो ठाड ॥३०॥ जोड लावणी

बीरवी बड़ाव सुखादरे ॥ धीर ॥ ११ ॥

कलस ॥ अवतार सार बोधीस माइ । सासस तेनो बासीस ॥

परम्परस सुख सबंद माप्यो ॥ अरु पाठ परमावण ॥ १॥

भी सिधनायक म्यानदायक ॥ पूज बीने म्हाराज ॥ कान

हुनी पि मेष पाट ॥ बालचंद रीप रायस ॥ २॥ पूज रतन

समुदाय मांस ॥ रंभाजी हुवा दिनमणी ॥ तास सिसवी बड़ाव

जपे ॥ ठाण बोधीस मणी ॥ ३॥ शुभ ओछी नहीं सोची ॥

बालक जू कर स्यास ए ॥ रस्व दीर्घ बिज्यस नहीं ॥ यह जोर

करस उत्रमास ॥ ४ ॥ ठास मिलती नहीं मिलती अधिक नून

ममामण ॥ आयो होय तो कर दीज्यो ॥ मत कीज्यो उपहामण

॥ ५॥ समत भी १६स करपा । ऊपर ५३न जोयपा । इचक ओछो

कवि सोचो ॥ मिळ्यादुकाँ मोयस ॥ ६ ॥ हाव घोड़ी मान

मोड़ी ॥ नयन कर निज मीसस ॥ चौहम जिनभरु ॥ कवि

बिचारक ॥ गृ नो करो बगमीस ॥ ७ ॥

॥ देसी गरणाइ हो हाली जा धारी भागडली ॥

रिपम अजित संस्र अभिनदस ॥ सुमत पदम प्रभू प्यारा हो ॥

जिखद मारी बिनतडी ॥ सुख लीन्यो प्रमोदी मारी ॥ १॥ ॥ १॥

मारी नित २ जेलो ॥ दुरगत दूरी ठेलो हो ॥ ३० बि ॥ म्हाने

अब मरी आगा मेलो हो ॥ ३१ बि ॥ १॥ सुपामचंद सुषस सीतल ॥

भीईस बासपूज माराहो जि मास ग्यान नोपइ ईस खेलो हो

॥ ३२ बि ॥ २॥ विमल अखंत भीषर्म सत ही ॥ सत करी सुख

पाया हो बि ॥ मान निज परबामै सेन्योहो ॥ ३३ बि ॥ ३॥ कृप

अरी मन्ली हुनी सुहवती ॥ मन्जीवारै मन माया हो ॥ ३४ बि ॥ ४॥

नमीए नेम पार्म महावीरजी । मायण मुध वरताया हो । जि० पि०
॥ ५ ॥ बहरमान गुण धरै गुणैमाला । जपता पाप पूलार्हो । जि.
वी० ॥ ६ ॥ १६ से ६१ ट एकादसी । दूजै जेठ यदी गुण गाया हो
॥ जी. वी. ॥ ७ ॥ वे कर जोड जडाव जैपुरमै ॥ चरणा सीस नमाया
हो जि. वी ॥ ८ ॥

छद छपनी लीखतै। सवैया इगतीसा ॥

प्रथम श्री अग्रहित नम्र । गुण द्वादशधारी । मिथ मरुल
भगवत । अष्ट गुण मोवै भारी । आचारज उवभाय । दो दो
पदवी पाट । मातृ सरय महत । विचारै दीप अढाई । विहरमान
यदू मदा । गुणधर गुणकी माल ॥ ग्यान द्रमण चारीवनो सरणो
होज्यो त्रिकाल ॥ १ ॥ पहला जाएँ वरण । दूसरै मात्रा लीजै ।
तीजै मुध उचार । चतुर्थे पद गण लीजे । पाचव भारी हस्त्र ।
छटै चाल चलैजे । जेमो होय समाम । तैमो आण धरीजे । ए
मान जाणया पिना कपिता कर्मभी कोय । कहत जडाव जगतमै ।
लोक हमाट होय ॥ २ ॥ दोहा । इतना तो जाएँ नहीं । जोड
करण उजमाल । किण मिथ थद जडाव तू । कपिता करो संभाल
॥ ३ ॥ छद छन्य । नाग चालै ले चलै । अपनी मकति नाय ।
पिनै बैल घोडा विनै । पारण माज तिराय ॥ ४ ॥ ग्यानी छोडी
गव । गुम्नै सीस नमानै । विधम लेनै ग्यान ॥ गुरुंख
गुर गण जाये । देस प्रदेसा नाय जठै आडर पावै । भरी सभामै
बैठ सकको मन रीजाये । ग्यान मण्या गुण छै वणा ।
मायुको मिणगार । जडाव कहै तिण काणै । उयमरो अधिकार
॥ ५ ॥ देता दूणो बधै । लेता सोभा पावै । खरच्या खूटे नाय ।

परती कठ न आवै । सांसा सेषो सार मार माहो नहीं लागै ॥
 बैस प्रदेसां आय बठै रेबे सागै । चोर ठगारा न लागे । गुप्त
 खजानो सार । अढ़ाव कहै । घटमैं दीयो । कर सत्गुरु उपगार
 ॥ ६ ॥ सबैया देखि । रस फेर चले । हमसै न मिले । पस
 ॥ ७ ॥ देख देख तोड़ टट । रही आन खुडी हलकार पही । मर
 जाइके मन होत सत्य । हरी सार फीरे तू काँइ करै । अब तेस
 पही तब आय कट्य । अढ़ाव कहै सति राखस पोखत । होउ
 पैरागन खोल बट्य ॥ ७ ॥ अंदधिमगी । सखी कह सुण राख-
 मती । ऐसी बात करो कहां जाय पति । फिर आवत है बरा धीर
 परो । नहीं आपंगै तो और बरो ॥ ८ ॥ सोच विचार सती हम
 पोखै । और पुरुष सन बंनय तोखै । झूठ कहू नहीं कहू साची ।
 ऐसी बात कहै मत पाखी ॥ ९ ॥ एक धमकर दान अ दीनों ।
 सैस पुरुष साधे मर सीनों । पड गिरनागी । ध्यान व कियो ।
 केवल द्रव्य ग्यान नहीनो ॥ १० ॥ राखत सुख समता रस पीनो ।
 छोड़ गयो सुख नम नगीना । अफस बमारो । अब नहीं हार ।
 दो आखां सुख करव सार ॥ ११ ॥ संजम से पालै सुख खंती ।
 पीर पैसाइ सुगत पहुँची अढ़ाव कहै बन २ सतबंती । अविच्छिन्न
 मेइ कीयो मरवंती ॥ १२ ॥ सबैया इतिहा । आनस आनै अ ग
 संग । महीलले मोयो । दिन रति स ग्यान ॥ मनम प्रमादै
 खोयो । कोष वपनी नास । रोग ठन ओषध खोयो । अपश्य
 आवै बस । मान मदिरा में मोयो । बरतो मार्ग दूरयी बम न धारै
 दान । मन चंचल निद्रा गरी । ममतामैं खूब दाय ॥ १३ ॥ दोहा ।
 एहीच तेरे कछिया । दूत अर कछु बार । अढ़ाव दस भगवमै ।

कह काठीया चोर ॥ १४ ॥ प्रथम खिम्या धरम । दूमरै लोभ न
 राखे । होवे सरल सभाव । मान मढ दूरा नाखै । हलको द्रवै
 भूठ मुखसँ नहीं भ खै । तप संजम सुध ग्यान । नील इमरत
 रस चाखै । ए दम धर्म अराधमी । ते गुरु लीज्यो धार ।
 जडाव निस्ते जाणीए ॥ तिरै सो तागणहार ॥ १५ ॥ जान तणो
 अंकार । गरव कुल बल को तोलै । लाभ हूवा चढै द्रप । पढीनै
 वाको बोलै । मोपै लेगो ग्यान । हागे मत जन्म अमोह ।
 ठकुराईमै जिल रयो । मढ छकीयो मारु । जडाव कहै सुण
 जीवडा । सिवसुख होमी दूर ॥ १६ ॥ एक कौ अणखोड । दूसरी
 लढै लडाई । तीजी लेवै नीद । चउथी करै बडाई । अदमिच
 उठै कोय । पूठ फेरीनै वैसे । सुखै तो सरध नाय । समझावै
 कैसे । घरको धधो छोडनै । मली हुई व्याग । जडाव कहै थे
 आयनै । कांड काडयो सार ॥ १७ ॥

छद कुंडलियां । बखाणकी त्यारी हुइ । भेली मिल कर व्याग ।
 माया वाणी भेलमी अब वाताको तार । अग करै केइ छाने
 छानै । केइ होय निसक वरजै तोई न मानै । सतगुरु वाणी
 वागरै । गावै गलोज ताण । जडाव कहै समझाय नै वाया सुणो
 बखाण ॥ १८ ॥ चेला चेली देखनै । कीज्यो चत्रु पिछाण ।
 जिस्या तिस्यानै मडता । रहमी खाचाताण ॥ १९ ॥ पछै नहीं
 लागै कारी । उपजावै अममाध । आतमा होसी भारी । मेख
 लजासी लोक मै । होय गूणारी हाण । जडाव कहै सुख
 पामसी करमी चत्रु पिछाण ॥ २० ॥ पहली जोए विचारनै ।
 ममत करसी कोय । आद अंत निपजानसी तो सुख साता होय ।

तोय होयको मन मित आवै । पूछे सुख दुख बात । खावै भठ
 सुखावै । नह दिन मित्री कीस्यो । बैसो नीपस छार । बड़ा
 कई सौमे नहीं । दिन पगड़ी सिधगा ॥२०॥ विरोध मत करो
 होय । प्रथम कर्जीती होय । बिगाडै दोन्यूर होय । परमै
 उग्राडै । नेहो कई आवै नाय । बैठ सध दूर जाय । छेदयां
 मित फांसी खाय । तोडै प्रहाडै । लोक केरु करै हास । तप अप
 होय नास । नरकमै पाय बास । बम फटै नाहरै । बगमै
 बड़ाव आव । मिनख बनम पाय । बैठो अप गम खाय । मत
 करो राडर ॥२१॥ मान करो मत मानपी । खीली गयो न कोय ।
 राबख सरीखो राजवी । बैठो संख खोय । बैठो । सौकमै मर
 फजीती । मंदोदरी सती । सभसुख माखी हूती । बड़ा २ मैया
 हुइ तो हुइ हुइ मत । तीम खंडको अभिपति । मरपो फरावे
 हास ॥२२॥ मान बकी माया पूरी । छनै छाय छगाय । गुल
 सगसा मसमी हूयै । चोडै दीखै नाय । चो । बुझैपा कैसे
 भगनी । बड़ा २ नैबस किया । ऐसी माया ठगखी । मुख मीठी
 हीरवै फठय । जियसिख मित आव । बड़ाव कई अंत्रजसै ।
 चोडै दीखैनाय ॥

सपैया ११ सा ॥ सोमपी लाज जाय । सोमपी मरबाद जाय ।
 सोमपी कृषत जाय । मूखा खेली हारसी । धंषाप्रमै घाय ।
 सारो दीन करै हाय हाय । मोडी २ रोटी खाय । रासू फड
 पारसी । सन्नन न्हे तोडै । हरामीछ हाय ओडै । फेजनाफ
 भाग होडै । मरसी कै मरसी । बगमाय घन ओह । माया
 प्रनाफ खह । फटव बड़ाव तह तिरसी कै तरसी ॥२४॥ समै

कर आतमा । मजो प्रमातमा । बंदो देवगरु वेह । भवजल
तारसी । अतिचार याद कर । पाप प्रदूर प्रहर । प्रभवसेती
डर लाग्यो दोष टारसी । कावगै आवसगै । पांचमेसु चित्त कर ।
छटै आवसगै । आगे पछखाण धारसी । आवसग कालो ।
काल क्रमाइ जाया लाल । कहत जडाव तेह जनम सुधारसी ॥२५॥
॥छंद धनाश्री॥ छाने चौडे लागे पाप । पछे करे पश्चाताप ।
हाय २ सेतो जन्म मिगाडोरे । गुरूपे आलोवे दोष । इण भव जावे
मोच । सणगार पाघे थोक । नंका न लीगाररे । वैद गुरु एक
सार । साचा राजा नाडे तार । वैद रोग हारे । गुरु आतमा
उधाररे । द्रवसाल एक रुम । आव साले रुम रुम । कहत जडाव
हीइडा मुख साररे ॥२६॥

॥मंत्रया २३ सा । कहै लगुभी रात । सुणो तुम नाथ । करी
कहा रात । महा दु खकरी । जगमे भोर मच्यो हे सोर । बज्यो
तू चार तक्रे पर नारी । कहा गइ बुध, रही नहीं सुध । करेंगे
बुध । लहेगे धमारा । कहत जडाव । भखमण व लत । नहीं
मिटे जगमे नोख हारी ॥२७॥ रावणराय रहे समभाय । मत
गनराय ए भील भिखारी । अपणो राज स्हाज सब आपणो ।
अपणो इलस कर ले कर लारी । आए खड़े रिण भूम धणी वण ।
लागत है ए भोड हमारी । देख करु धमसाण ॥ अणी प्रराखुं
सीत करु पटनारी । कहत जडाव भभीषण बोलत । कहा गइ
बधन अकल तारी ॥२८॥ कर आख्या लाल । फुलावत गाल ।
तिरसु लो भाल चढ़ाकर तोले । रे कगाल देउ क्या गाल । बके
ज्यू स्याल । बीर नहीं तू शत्रु तोले । है क्या माल करुपे

मान्ते । देखाठ क्याल । जातु कलत हुनके ओले । कलत
 अङ्गार ममीपय बोसत । साध क्या मा मारत डोले ॥२६॥
 संकपति कर जोड़ कहे । तुम राम सुयो अरज हमारी । न्यो
 सबसाय । करो एह राज । बरो तुम आस ही बात हमारी ।
 ए सुज बाय करो परमास । खुले सुख लाय । निचे रिब मारी ।
 सीतकी बार फिरो मतलार । ए बाता मोय सागत खारी ॥२७॥
 लिखमय राम कहे । सुय राख । क्यू कर बेठो खाँचा ठायी ।
 हु नर कोड हमार करे न्यो ॥ तोरे न जोड़ सीत शास्त्री । छंफ
 साज नहीं बेअफल । बात कहे तू निबट आसी । कलत अङ्गार
 सपी समझावे । मत खेचो अज दूटत ठायी ॥२८॥ रबामोम
 पड़यो पठ देख मनोदर । साय फँसी भीम चरक बाला । सुभ
 न रही तन भूखय की । दूट गई मोहनकी माता । लिख एक
 अंतर चेत मयो अज । नखामें नील बई परनात्ता । बिरग
 पड़यो संसार समुदर । इबत हे नर मावत बाला ॥२९॥ रह
 गये घाम निकल गये साम । पड़े रहे कम अरु राज रसात्ता ।
 सालतवास्त छठ तन भात । मया क्या क्याल । कुरे सब
 बाला । हाँहाँ गई सब बाल । रही नदी ओय । मया सुख बाला ।
 कलत अङ्गार सती शम बोले । छेठ बैराग तहु अजात्ता ॥३०॥
 तनकी विसना तनक । भोगाँ निरपत बाधे ॥ मनकी ममता बोले
 निखरो अंत न आये ॥ छपटे पल २ मास म्याल दिन बाग न
 पावे । हे कोई अगमें जब रसपर से मन समझावे । पाँच दिने
 उध बाल है । पूछे कोडा कीस । फिर फिर फेरा खाल है । देखा
 मन बेहोस ॥३१॥ किना बिचार्या बचन । सजनक कही मत

घोलो । देख नफारो डाग । गांठ हीरनकी खोलो । बेचो मुंगे
मोल । ज्ञान तराजु तोलो । कल्यो धर्म ढलाल । लाभको
लागो लेलो । भिन मतलब दुकता रहे । सो कीणही न सुपाये ।
मीठा मधुर गेलता सबहीके मन भाया ॥३५॥ ए काया किरतार ।
मिली किम दुख देवाने । उठ सवार राड मरे खावारने । तप
जपधूँ नहीं प्यार । त्यार फेरे जानाने । खाली करने पेट/फेर
बैठे नावाने । चरचे तेल फुलेलधूँ सगके लागी केंड । जडाव
कायाकुंजडी । भिन मतलब मत छेड ॥३६॥

॥छद् धनाश्री॥ महा व्रत जती धर्म । सजम व्यावच विरचे ।
नाण तीननपे वारे । करोधादीक ४ हैं । चरण करण धार । सुमत
गुप्त लार । पडमा पारे भावना । डंढरी बिखटा रहे । पचीम प्रति
लेखणा । आरादीगवेखणा । कहत जडाव च्यार अभिगर उदार हैं।

मवैयो मवायो कीयो । धनामरी नाम दीयो । साधूजीरा
एकमो चालीस । गुण मारहे ॥३७॥ प्रथवी अपतेउ वाय । सात
सात लाख काय । चौडम लाख हरी । बैर विरुलंद्री विच्यारसी ।
नगक तिरजंच देव । चार चारलाख भेव । मनुम चत्रुदस । लाख
इम चौरामी । ज्यानै चापी चूरी होय । राग द्वेष कियो कोय ।
तीन कण्ठ तीन जोग । मित्री भाव कीजीए । अठाग लाख चौइस
हजार । एकमोने गीम पार । कहत जडाव नित मिछया दुकडं
दीजिए ॥ ३८ ॥ नरमाड दिल्लीकी । कण्डाड किमनगड । मरोड
मेढताकी । ठकुराड जोधपुर धारी हैं । रहण अजमेर । खाण
बीकानेर महर । कमाट फीलकते । मौज ममाइकी न्यारी हे ।
गभीरी गुजगत । उमीरी आगरे । वमी लाज मरजाद । मारवाड

देस प्यारी है । फइत बढ़ाव । यामे क्यो एक २ मास । धीपूरकी
 जलूम देख । सुरग पूरी हारी है ॥३६॥ एक करे गुण गीराम ।
 कहे ए मोटा नाशी । एक बैदे ए ठोठ । कहे छोटा भीम काशी ।
 एक नमावे सीन । दान देवे हित भाषी । एक करे उपास ।
 भठ नहीं घोरख पाषी । दो इस्मकः छेखवै । सोही साध मईत
 बढ़ाव कहे । तिरसी सही । कस्यी मवनो अत ॥३७॥ मैहू अभम
 अपार । साध करतार हमारी । जनम मरबकी खोड़ । खोड़ मोल
 लागत खारी । बरा फिरि खोफे । हेर पुन खोइ सारी । प्रबल
 पार पछाया । आत्मा करेअ मारी । यह अवसथा हो रही । पर
 गुणके परमा । बढ़ाव कहे कैसे तरे । पाषी अदबीच मास
 ॥३८॥ दान मान दीनो न । प्रहू नाम न सीनो । धन धन कीनो
 दिन बंचाइमें जाना है । पापमें प्रवीनो । ठहू दम धामें दीनो ।
 परल नगीनो । रोनी मोड़ी मोड़ी जात है । नरमप पायो । सब
 अकल गनायो । ऐसो माइ पूछ आयो । कल कल जात है । पून
 को खजानो लायो । हरख हरख स्थायो । फल ने कमायो । माप
 आसी होय जात है ॥३९॥ दानभी मान बढ़े । अग मित्र । सीस
 फकी सीव सफल पावे । तप अपावत कम पुरावन माव बकी
 सब । मरम पूजावे । दया भरे सबसे सम भवत्र । लिप्या सकल
 कहेस मिटावे । यह सगरी सुख होत बढ़ाव । मिश्र सबहीमें मास
 मिठावे ॥४०॥

॥ सबैया इकसीसा । प्रथम प्रवर्तारीपाव मूठ बोले सुख
 खात । जोरी करे भाषी रात । इसीस मंगलसरे धन धान नहीं
 धोम । करोब मान माया लोम । राम धेक कलह । परतिर देवे

आलरे । पिसुन पराद नाद । बोले पगपगनाद । रीत अगति बदै ।
 होय सुखमालरे । माया मोमो मिथ्या जेल । ग्रं वचन देवे ठेल ।
 कहत जड़ाव । पाप दूरी देवो टालरे ॥ ४४ ॥ धर्म धर्म कीनो ।
 मर्म तो नही चीनो । फोगट जनम लीनो । गारे जिम पानरे ।
 कुगुरुका लाग्या कान । छोटी जाणे आसमान । ज्यां न देवे दान
 मान । चावे वीडां पानरे । हिंस्या करी धर्म जाण । खोटो मत
 लियो ताण आगीयाने केवे भाण । लागी एक धुनरे । नरमव
 पाया मो तो । गिणती न आया माया । कहत जड़ाव जिम अंक
 विन सुनरे ॥ ४५ ॥ सागमें मिरदार मार । दोत तव कहीए ।
 जीव अजीव पिछाण पूनथी सुरगत जहए । पाप अठारा छोड ।
 आश्रयथी मारी धैए । मम्बर पद निरवाण । निरजरा दोरिद
 होइए । बंध थकी ले ताण । मोखाष्ट सत्र मुख लइए । ए नव
 तत्व थोलखे । मोइ जवरी भाण । जडावनीकानग जडों । खोटाथी
 नुकमाण ॥ ४६ ॥ करोधे खिम्या जाय । मान नरमांइ नासे । माया
 तोडे प्रीत । लोम सत्र काज विण्णासे । ए चारुं चडाल । जाण मत
 राखो पासे । मीठा ठग दुख दाए । पून पूजी ले जासे । चारुं
 मिलकर चोगणा । नव फिग जामी लार जडाव कहे तूं एकलो ।
 कुंण चढ़ला वडार ॥ ४७ ॥ नचत द्रव वीनै । पनी तयोए गणी
 जे । कुमम बाण सेण । बंध सरजादा कीजे । नले पण वहु मेद ।
 अभमरो ढालो दीने । खट दीम नासण दोए । नान पाखी सो
 लीजे । ए चवदा पछवाणने । जाण के काथी मोई । निम्ते जाण
 जडाव । पामपड लेरी मो । ४८ । अथन नाजे रुन । दूसरे
 जावे उठ । आर चलने मत । नदने र अफूटी । नेणा न

मेले मीठ । द्रुस्ती नीची कर आके । परस माडे पीत । आपस रीत
 न राखे । सवन जैसा आसने । मत जाचो बरंपार । बडाव कडे
 सग जाणीव । ए पांवूनाकर ॥४६॥ देखी सामो आय । आया
 आसबाची ठठे । नैशा बरसे नेह । आद्र दे सनसुख बैठे । खोत
 डीयासी गांठ । बोले मुख मीठी भाषी । पूछे सुख दुख बात ।
 धायै मोजन करू पाखी । सवन जैसा भावने । रहिए ठनकर दास
 बडाव कडे जन आसती । पूरे मनकी आस ॥४७॥ तिररेरतिरे ।
 कैसे तिररे । नर देह मरी करखी न करी । ममता न मरी ।
 खाया सररे । गठ संग मद्र । दित सीत दई । अब मान कद्र ।
 आया भरर । बैपूर मांय बडाव कडे । तिररेरयांसे तिररे ॥४८॥
 धिगर २ कियकू धिगरे । नहीं दान दिया । अभिमान किया ।
 मधुपान पीया । खाया डीमरे । परमिगाव लिया । राखी न दया ।
 अम जाव मया । भट्टा बगरे । बैपूरमांय बडाव कडे । धिगरे २
 कियकू धिगरे ॥४९॥ धनरेरकियकू धनरे । किन दान दिया ।
 नहीं मान किया । प्रभु नाम लिया । तायां तनरे । उपगत किया ।
 बम अस लिया । सम रस पीया । मारघो मनरे । बैपूरमांय
 बडाव कडे । धनरे २ उबकू धनरे ॥५०॥ सडरेरकियकू सडरे ।
 करमनकर घेर लिया । चौ फेर लिया । ममसेर सन्या सररे ।
 पसो अबसेर । करो मत डेर । लेमो मय डेर । चला कररे ।
 बैपूरमांय बडाव कडे । सडरे २ इखसै सडरे ॥५१॥ सांजकू
 अषाय माय । रस दूध पका खाय । सु तो मुख सेबमांय । फमाते
 लागी भूखडी । पिबइ मोजन आख । पीरस्था बहु फज्मान । गंगा-
 जल पीयो आख । दो फेरा आपे सुखडी । खाय कीयो मीठो

धूंक । पान वीडां चावे मुख अजुये न भागी भूख जरा आइ
दूकड़ी । मनुष जनम पाय । खोय दियो खाय खाय । कइत जडाव
तोइ । भूखे काया कूकड़ी ॥ ५५ ॥

॥ छंद कुंडलिया । ध्याव मत कर बावला खोढ़े पढसी
पाव । खीली देसी खांचने । न्हास कडीने जाय । ना आय कर
दोल्या । फीरसी लेसी लाटो लूंट । जाय दुख कीणने कैसी ।
पहेला कह्यो न मानियो । अब बैठो पिछताय । जडाव कहे प्रणो
मती । खोढ़े पढसी पाय ॥ ५६ ॥ पांचू वैरण जीवकी । पुन
खजानो खावै । नवो न सचे नीच । कीचमै रतन गमावे । ठाली
होय नहीं ठोट होठ बैठो । लपकावे । देख प्राया लाड । मूढ मनमें
पिसतावे । रोयां गरज सरे नहीं । चेत सके तो चेत । जडाव कहे
सुतो किस्सू । चिड़िया चुग गई खेत ॥ ५७ ॥

॥ दोहा ॥ छंद छपनीएहमें । प्रसतावीक उपदेश । नून
इदक अणसोमतो । कवि जिन कीज्यो खेस ॥ ५८ ॥ पूज बीने-
चंद पाटवी । रतन मुनी समदाय । रंभाजी हुषा गुण मणि । मरु-
धर मंडलमांय ॥ ५९ ॥ तासदास जडावजी । बोले बे कर जोड ।
बिना समज कविता करुं । ए मुज मोटी खोढ़ ॥ ६० ॥ अढ़ारसें
अठावने । जैपुरमें चौमास । नथमलजीरा वागमें । एह कियो
अभ्यास ॥ ६१ ॥

प्राणी पाप न किजीए । डरतो रहए दूर । हंस्यारा फल
पाडवा । लागे हाथ हजूर । ला० । भूरसी परभोमांइ । सहसी
घणो संताप । कदे नहीं मिलसी सांइ । जडाव कहे कुरणा करे ।
सोई सांचा सूर । प्रा० प्राणी पाप करो मती । मनुष जमारो

पाय । बिन सुगत्या छूटे नहीं । पड़े पयो पिसवाय । होयगी
बोत खराबी । रूप सपेटी भाग । तिक्र किम रह ला दाबी ।
दाबी हूी न रहे । निसते प्रगट पाय । प्राणी पाय करो मती
मनुष बमारे भांय ॥ २ ॥ इति ब्रह्म ब्रह्ममी समपूर्वः ।

॥ आवकारो चौढल्यो लीख्यते

। दोषा । अरिहत सिध समठ सदा । आचारज उबभ्राय ।
भी गुरुरद फेकज भसी । बहू सीस ममाय ॥१॥ साधुने भावक
तथा । सब मुख कइपानजाय । पिश किंचित बरखन कर । कहेस्य
हात्त बनाय ॥२॥
हात्त पहेली । देसी बेग पदसोरे मोहल्यी । तु म्या नगर सुहाब्यो ।
इद्रपुरी सम माख । लोक सहु सुखिया बसे । धत्र भगवतीरी
छाख ॥ १ ॥ भावक करणीरा पखी । भांकड़ी । बसै सिद्धा महा
भाग । हाव—मीची धमंसुरगी । दब गुरीस राग । भा० ॥२॥
भक्त्यादिक रीच सोमती ॥ रच बोका सुखपाल । धन्य भान धीखो
पखों मोगवे मोग रसाख ॥भा० ॥३॥ नब छव निरखों कियो
आगम अर्थ पिछाया । स्वमत परमत धारखा । स्वास्या यत्र सुजाख
॥ भा० ४ ॥ सिख माधख मामेजमा । इत्यादिक बोपार । तिदनीक
बो लोकमें । तेह क्यो परिहार ॥भा० ५ ॥ बारे बरते विवेक्य ।
पासे निर अतिचार ॥ब पोस कर मासमें । जबदा नम चीतार ।
भा० ६ ॥ साधु साधमी क्यी । से नित सार संमाख । मातपिता
सम दाखिया । बीषे ठखे दयाख । भा ॥ ७॥ समक्षिमें सेठा
गया । बीरग द्रष्टी बहु भाख । डिगाया बीगे नहीं । देव बलावे
भाख । भा० ८ ॥ मात पाणी बहु निपजे । कमोष न हीसे कांय ।

वचे सो नाखे वारणे । काग कुत्ता पशु खाय । आ० ८ ॥ अभंग
दुवार रहे सदा । प्रतिलाभे निरदोष । वैमुख जाय सके नहीं ।
पामें सर्व संतोक । आ० १० ॥ गुण एकवीसे सोभता । वाराई
विरदावमें । उपगारे धन वाषरो । चूके नहीं जसदाव । आ० ११ ॥
गरु छे श्री विरधमानजी । । ज्यारी आग्या प्रमाण । चाले सुध
व्यवहारमें । छ अवसररा जाण । आ० १२ ।

ढाल दूजी । देगीजीलारीछे । तिण अवसर श्रीपामतणा रिखरायाहो
सुखकारी मुनिराज । विचरत रतिणहीज नगरी आयाहो । मुनी । १ ।
पच सया प्रचार मुनि । गुण दरियाहो । सु । फुफवइ उद्याने
आय उत्तरिया हो । मू० २ । पच महाव्रतधारी । सुध आहारी हो
। सु । सरत प्यागी ज्यारी । हू बलिहारी हो । मू० ३ ॥ क्रोध मान
माया मत्र ममता मारी हो । सु । अभिग्रहधारी तपसी महा
ब्रह्मचारी हो ॥ म० ४ ॥ ग्यान ढरसण चारित्र विविध । गुण
भरिया हो । सु । त्यागी वैरागी पालं । निरमल किरीया हो
॥ म० ५ ॥ जातवत कुलवत । महा बलवत हो । सु । इत्यादिके
गुण कहेता न आवे अत हो ॥ मू० ६ ॥ समि जिम सीतल ।
रविजिम तेज मवायो हो । सु । ढरमण देखी भनी जिन । आणंद
पायो हो ॥ म० ७ ॥

डाल तीजी । ढोहा । हुइ उवाई महेरमाहे हरख्या बहु
नरनारे । सत्रको थया उतावला । देखण गुरु दीदार ॥ १ ॥
रतनमुनी मार मन उस्या तथा जीदवारी । श्रावक मिलिया
एकठा बोले वचन रमाल धन दीयाडो आजरो । फलीय
मनोरथ माल । चालोरे श्रीगुरु मदवा । आंकडी ॥ १ ॥ गुरु

बंदा पतक मरे । होवे फम किम्बास । जीबादिके नम बोसरी ।
 पावे सब पिछाण ॥ बा० २ ॥ अममोग संनरमें । दूरगतना
 दातार । सगत करती साबरी निस्ते खेबो पार ॥ बा० ३ ।
 टोले टोले नीसर्या । आयेसी जति बार । पंच अमिगम साबरी ।
 बंद्या बारबार ॥४॥ निरखोरे गुरु दीपारने । बाये पूनमचंद ।
 मस्क बकोर निहालने । याया परम आसंद ॥नी० ५॥ आगार
 नै अद्यागारना । घर्म तथा दोय मेद । मिन मिन मात्र बसा-
 स्त्रिया । मुख्या कित उमेद ॥नी० ६॥ हाथ जोड़ करे बिनती ।
 नीचो सीस नमाया । शु पल्ल तप संजम तखो ॥ माखो भी मुनि
 राय ॥नी० ७॥ सजम रोक कम आवता । तप करपूर बहास
 तो सरग बावे किम साबरी । माखो एह रिनास ॥नी० ८॥
 तप संजम सैरागबी ॥ पूरब कम बसी संग । चितवर चार मुनी-
 सरु । उखर द्वियो निसक ॥नी० ९॥ मलो कुरमापो किरपा
 करी । समज गया मनमांय । दीनी तीन प्रदिषसा । आपा जिश
 दीस आय ॥नी १०॥

हाल बीबी ॥ बेसी करहा चले उठावसो । पगड़ आई गवाप्रेर ।
 ग्राम नगर पूर बिचरतांभी । आपा बीर जिख गोलम गलपर
 आद बेबी । साये मुनिवर बीरंद । बीर पचारीयाजी । राजगरी
 उधान ॥आ० १॥ बेसरो छै पारखो । बी गालमरे सिख दीन ।
 अबसर ठठा गोबरीबी । लोक कड़े धन धन ॥बी २॥ ऊच
 नीच मिस्रम छेजेबी । किरता पर पर बार । गली गली बेसतमें ।
 बीरम बोले नरनर ॥बी० ३॥ दुर्ग्या नगरीरा बागमें । बी पास
 तथा अरुगार । अस्स फलस पक्षिया । जी मास्यो सठ बिसतर

॥वी० ४॥ सुण गौतम एह वारता जी वीसम थयो हे अपार ।
 पूरण जाण पाछा फिर्या । जी पूछ करू निरधार ॥वी० ५॥
 आहार दिखायो वीरने । जी जोडया दोनूं हाथ । समरथ पास
 मंतानीया । जी भाखो श्री जगनाथ ॥वी० ६॥ कर्म बंदसे
 राग थी । जी धात्रे देव विमाण । तप संजम आतम भावथी ।
 जी निम्ते पद निर्वाण ॥वी० ७॥ श्रावक अति निपुण छै ।
 जी चरचामे सरदार । जीती सके नहीं देवता । जी मनुष तणो
 सूं भार ॥वी० ८॥ गीर कहे हां गोयमा । जी साधू चत्रु सुंजाण ।
 ग्रग्या जारी निगमली । जी बोले निरवद धाण ॥वी० ९॥ हूं
 पिण डम परुपणा । जी करू कराउ मोय । राग द्वेष दोए बंधने ।
 जी तोडया मिव मुख होय ॥वी० १०॥ कर जोडी गौतम कहे ।
 जी भलो निकान्यो नार ॥ चत्रु ढाल सपूरण थर्ड । जी प्रसणरो
 अधिकार ॥वी० ११॥ नून इडक सूत्र थकी । जी हस्व दीर्घको
 विरुद्ध । मित्रया दुकड तेहनो । जी कवि जिन कीज्यो सुध
 वी० १२॥ प्रज गतन समुदायमे ॥ जी गभाजी गुणधार । तास
 प्रमाद जडावनी । भाग्यो एह अधिकार ॥वी० १३॥ १६सं
 एकतालीसमे । जी जैपुर सेखे काल । फागणवद तिथ तीजने ।
 जी करी सपूरण ढाल ॥वी० १४॥

अनाथीजीरी ७ ढाल लीखीए छीए

॥ढोह॥ गिखवाडिक महावीरजी । वदु वे कर जोड । विहरमान
 गुणधर मभी । केवली ग्रन्येक कोड ॥१॥ सिध रिध नौनिध
 करो । आपो बुध रमाल । धर्म आचारज आद दै । बंदू मुनि
 तिरकाल ॥२॥ उतराधेने बीसमे ॥ अनाथी अधिकार । श्री श्रेणिक

समकित छह । बीर कियो बिसतार ॥३॥ सिख भुजुसारे हूँ करू ।
उठमरा गुण ग्राम । सरसत मत मया करी । अकसर आणो
ठाम ॥४॥ बिना पृष्ठ उघम करू । ए मुख मोटी भूख । पिण
सतगुरु सनिष करी । होवे काम कबूल ॥५॥

हाल पड़ेछी ॥ देसी अंजुखीरा तावनरी । तुम प्रबारी । मगददेस
राजगरी नगरी । भूमाप्रण सोर टीकी । सेशकराजा राज करे कै ।
प्रजा पासे नीकी ॥१॥ मुनि बड़मागी न्यारी छरत मुगत से सागी बड़ा
बेरागी । आंकड़ी ॥ २ ॥ नहीं दूरो नखीक नगरछ । मंडी झुझ
उघाने । छट अहुना फलफूल ठरु ठले । भरियो अनापीबी
प्याने ॥ मृ० ३ ॥ सैखकराजा सहस्र करखने । कर असबारी
त्यागी । हाथी भोड़ा रथ पाणकछ । आया बन मोझारी ॥ मृ ४ ॥
अस करवां फिरतां फिरतां देख्यां हुनीवर तेह । आयो मोइन भूसा
बिनोद । आग्यो अभिक सनेह । मृ० ५ ॥ अहो २ इशरख बरख
तुमागे । हो २ रूप मुनिको । अहो २ खंती सोम ससि त्रिम ।
दरसख पासो नीको ॥ मृ ६ ॥ अहो २ मुनि सोम कियो दूरो ।
बेरागी मरपूरो । बिप्यापर कोई राजपुत्र हे । छाती भर नर सुरो
॥ मृ० ७ ॥ सुम सखख मरीर बिराजे । तपस्या कर तन तापो ।
मदखखा हाथ खोदने । सैखक सीस नमाखो ॥ मृ० ८ ॥ दोहा ।
बीनो करी हुनीम्र कड़े । सामंत कीरपानाय । इस अबसर पर
किम तम्यो । कहो तुमारी बात ॥ १ ॥ तरुख अबस्ता आपझी ।
मोग बोग सरीर । ध्यान बीषे पूछ करू । माफ करो तफसीर
॥ २ ॥

हाल दूजी । इसी इसमी कचकी दूसरी । दीया दीपली

आदरीजी । काम भोग फल छंड । इहने मिलती छै । ध्यान खोल
मुनीवर कहेजी । सांभल प्रथीनाथ । गद्दा करणवालो नहीं रे ।
कोई मारे माथे नाथ हो राजींद्र सांभल पूरव वात ॥ आकडी
। १ । तिण कारण संजम लियोरे । अत्र मे हूवो सनाथ । सेणक
सुण विसम थयोरे । अहो २ इचरज वात हो ॥ रा० २ ॥
रुप संपदा कारमीरे । जननी मारी भार । इस्या पुरस दुखिया
थयारे । भूल गयो किरतार हो ॥ रा० ३ ॥ दुख मेट्ट हीव
एहनोरे । तो मागे सेणक नाम । नाथ होस्यूं में आपरोजी ।
पुरु मगली हाममो मुनिवर चालो हमारी साथ ॥ ४ ॥ मात पिता
सुत भारे ज्यारे दास दामी परिवार । खाणो खरची पूरस्युंरे
कमीय न राखूं लीगार हो ॥ मू० ५ ॥ दुलभ नर भव पामियोजी ।
सफल कगे मुनीराय । सुख विलमो संसारनांजी । मारा छत्रनी
छाय हो ॥ मू० ६ ॥ बलता मुनीवर हम कहेरे । सांभल राजन
वात । नाथ होमी तु केहनोरे । पोतड आप अनाथ हो । राजी द
गोलोनी वचन विचार ॥ ७ ॥ वचन अपूरव सांभल्योरे । दुख
पायो महीपाल । रुप रुडो गुण पायरोरे । अलीक बदै पंपाल
मू० ८ ॥ अथवा ए गीध माहरी रे । जाणे नही महा भाग ।
तो हीव एहने गतावह रे । तत्र बोल्या धर गग हो ॥ मू० ९ ॥
अहो मुनी मन्त्र उर्धा ओलग्योरे । सेणक मागे नाम । देस
मगवनो अधिपतिनी । एक क्रोड इकीनेर लाख गरामहो ॥ मू०
१० ॥ तैनीम न ममनीनी । हयवर गयवर जोड । सगरामीके
रथ एटलाजी । पायक तैनीम कोड हो ॥ मू० ११ ॥ अतेवर
प्रवारसु जी । भाई बेटा जाण । मोटा मोटा महीपतिजी । आण

करे प्रमाण हो ॥ मृ० १२ ॥ गडमड मंदिर सोमताजी । मरिया
 प्रभै मंडार । बाग बगीची बगिची नाटकना पूकार हो ॥ मृ०
 १३ ॥ इय अनुमाने आखमोजी । रीषतयो विसतान । सुवर्न
 अनाप किम आखियोजी । हुतो प्रत्यक्ष देव अवतार हो
 ॥ मृ० १४ ॥ आपणां गुण निख मुख बकीजी । कर्ता
 आबेछात्र । पिछ रीष दिखई आपनेजी । रखे कूठ सागे
 सु निराख हो ॥ मृ० १५ ॥

॥ दोहा ॥ ईस कर पाप्मा मुनिवठ । सांमस्त नर नाथा ।
 अनापपयो आखे नही । किम बिष होय-सनाप ॥ १ ॥ ठी
 माखो कीरपा करी । जोइया दोनू हाथ सु खसु चित सगायने
 । इकरव बासी बात ॥ २ ॥

हात्त ३ बी । देसी खोपन चामासारी । रदन मुनीसर
 मोटक । तब बलना मुनावर कहे । बी काई तब । तु
 सांमस्त हो राय फार सु वास । रीष संपदा करमी । कोइ राखेहो
 नर मुह अयास सुख सुख पूरव बारता आकडी ॥ १ ॥ कोसंबी
 नगरी मसी । बी काई कोसंबी० । पर वाट्या रीया मेइख हार ।
 होइ कले सुरसोफनी । तिहां कमळा हो सीनो अवतार ॥ सं० २ ॥
 अन वन करने दीपतो । बी काई अन० । बस कीरत हो कैली
 अमिराम पिता बसे तिहां माखने वन संचे हो मुखने पै नाम ॥
 सु० ३ ॥ मकनादिक रीष सोमतीजी काई मभ० । रय पोढ़ा हो ।
 बहु दासी दास । गज सके नही तेहने । सुख संपन हो कर मोग
 बिछास ॥ सं० ४ ॥ यह बेइना आखमें । बी काई यह । अति
 करकस हो मासू सहीय न जाय । रोम रोम अंग पीढवी । कर्मनकी

हो गत कही न जाय ॥ सं० ५ ॥ बैरी बाप भाई तणो । जी कांइ
 बैरी ० । कोई घाले हो मस्तकमें घाव । इंद्र वजर सम व्यापती ।
 अति दारुण हो ग्यानी गम भाव ॥ सं० ६ ॥ मात पिता चिंता करे ॥
 जी कांइ मात ० ॥ बिल बिलतां हो दुखमें दिन जाय । बेन भाई
 छोटा बडा कोई वेदन हो नहीं लीनी बटाय ॥ सं० ७ ॥ तिण
 कारण अनाथ छूं आंकडी फीरी छे । नारी प्यारी जीवसूं । जी
 कांइ नारी ० ॥ नहीं न्यारी हो सदा रहेती हजूर । खानपान भूक्तण
 तज्या । तिण मात्र हो नहीं रहेती दूर ॥ ति० ८ ॥ नेण भरे आंसू
 भरे । जी कांइ नेण ० उर सींचे हो जिम सुको बाग । अंजन
 मंजन सब तज्या । मुज उपर हो पूरो अतुराग ॥ ति० ९ ॥ तो
 पण मारी वेदना । जी कांइ तो ० । तिण मात्र हो नहीं लीनी तेह ।
 तिण कारण अनाथ छूं । जगमां ए हो जूठो सनेह ॥ ति० १० ॥
 वैद विचित्रण आविया । जी कांइ वै ० ॥ धन खरचे हो बहु किया
 उपाय । तिल भर गरज सरी नही । कर्मसूं हो कोई जोर न थाय
 ॥ ति० ११ ॥ मन फाटो संमारसूं । जी कांइ मन ० दुखमां
 ए हो धर्मनो आधार । जो मुज वेदना उपसमे । रिष त्यागु
 हो पूछी परवार ॥ ति० १२ ॥ इम कहेता वेदना गई । जी कांइ
 इम ० । हुइ साता हो मुज आइ नींद । घरका देव मनावतां । हू
 वणियो हो बैरागी वींद ॥ ति० १३ ॥ हाथ जोड़ कहेतां तने । जी
 कांइ हाथ ० । दो अग्या हो सुणी थया उदास । कुंठम सहु समझा-
 यने । व्रत लीनो हो तोडी मोहपास ॥ ति० १४ ॥ निज आत्म
 निसतारवा । जी कांइ निज ० । में हुबो हो छ कायारो नाथ । अ-
 नाथपणो दूरो कियो । भावारथ हो समझो नर नाथ ॥ ति० १५ ॥

॥ दोहा ॥ समझ गयो हो म्हा मुनि । ये जो मारा नाथ । करी
अन्त्या आपसी । मैं मूर्ख साक्षात् ॥१॥ कर कीरपा मुज ऊपरै ।
भेटो भारो मरम । पट दरसखमें ह्वसो । तारक साचो धर्म ॥२॥

। हस्त चौथी । देसी पोड़ी आप धारा देसमें मारुषी । निज
आत्म निजस करो । महाराजा । पर आत्मक पिछाख हो ।
समता प्रमाद मत सेवया । माहीं धम दयामें जाख हो सुचर्वा ।
धर्म सुख ओलखो महाराजा । आरुषी ॥१॥ देव निरागी बगल
हु । मा । नहीं मझर नहीं मेव हो । माहा । दोष अठारा न्यामे
नई ॥ माहा ॥ सोइ देव तू सेव हो ॥ माहा ॥ धर्म० २ ॥ सिध
सिधपुरमें सासता ॥ माहा ॥ मनम मरख दिया खेद हो माहा ।
बोखमे बोख चिराजिया ॥ माहा ॥ देखे जीवारी खेद हो ॥ माहा ॥
मिथ्या मत छोड़यो ॥ माहा ॥ धर्म ३ ॥ ओलख बीव छ कपना
॥ आखो मन बैराग हो ॥ माहा ॥ न्यास रहो प्रपञ्च ॥ माहा ॥
देव गुरु रारा हो ॥ माहा धर्म० ४ ॥ समता न कीजे राजनी
॥ माहा ॥ समता रस भर भुक्त हो । माहा । अन्धकमा पर जीवनी
॥ माहा ॥ ए ही धर्मो मूल हो ॥ माहा ॥ धर्म० ५ ॥ निस्ते देव
गुरु आत्मा । माहा सुगते निख कत कम हो ॥ धर्म० ६ ॥
तारे बुबोवे आत्मा ॥ माहा ॥ छोड़ी मिथ्यामत मम हो ॥ माहा ॥
॥ धर्म० ७ ॥ नैनख बन कुड साबली । माहा । बेवखी कामधेय
हो । मै । सुख दुख करता आत्मा । माहा । आप दुसमख आप
सेख हो । मै । धर्म ७ ॥ मेख देख मत भुक्तन्यो । माहा ।
मेखना मेद अनेक हो । गाहा । दूष गाय ने आकनो । माहा ।
अंतर होइ रिशेव हो । माहा ॥ धर्म ८ ॥ नाथ पपर कष्टनी

। माहा । सुगुरु कुगुरु तिम जाण हो । माहा । हूवे डबोवे
औरने । माहा । दोयांरी करज्यो पिछाण हो । माहा । धर्म० ६ ॥

। दोहा । गुण बिन गुरु कहाविया । गरज सरै
कीगार । कीरीयामें कायर हुवा । वे तिरन तारणहार ॥ १ ॥
सुमत गुपतरी खप नहीं । नहीं संजमरी ठीक । तप जप ऊपर
चित नहीं । फिर फिर मांगे भीख ॥ २ ॥ कहूँ जरासी वानेगा ।
कुगुरु काला सांप । मत छेड़ो हो मही पति । अलगा रहिए
आप ॥ ३ ॥ पिण ओलखाण कीजिए । सुगुरु कुगुरु की जोय ।
राजहंस बिन कुण करे । खीर नीरकूं दोय ॥ ४ ॥

॥ ढाल ५मी ॥

। देसी आछेलालनी छे । नहीं छोड़े आधाकरमी आहार । बस्त्र
पात्र सज्या संधार । आछेलाल । अगनी तणी दीनी ओपमाए
॥ १ ॥ कष्ट सहे चिरकाल । मूड़े मस्तक माल । आ । शीत ताप
तिरखा सहीजी ॥ २ ॥ पोली मुठी असार । नहीं संजमरो सार
। आ० । भेख पूजावे लोकमें ए ॥ ३ ॥ काच पात्र सम होय ।
पारे पूलेवे जोए । आ० । मोल न पावे सारखोए ॥ ४ ॥ शस्त्र
धीख ताल । मारे ते ततकाल । आ० । तो पिण एक भवमें वे
हरोए ॥ ५ ॥ कुगुरुनो उपदेस । घाले मिथ्यातनी रेस । आ० ।
नरक निगोद भभावमीए ॥ ६ ॥ कठनो छेढक थाय । थोड़ोसो
अहित कराय । आ० । तिणसू इधक वेरण आतमा ए ॥ ७ ॥
जोतक निमित उचार । भाखे सुपन विचार । आ० । जंत्र मंत्र
ओपध जडीए ॥ ८ ॥ महिमा पूजा काज । नहीं लोकारी लाज
। आ० । पेट भराई सुखे करे ए ॥ ९ ॥ नही मरजादा काण ।

अपहृष्टा अयाश । आ । दत्र गुरांश्च वेगलाय ॥ १० ॥ स्तागी
मगलतनी छाप । बय बैद्य बैद्यरा बाप । आ० । जाखे बफरा मंडी
क्या ए ॥ १२ ॥ इय एनाय जाय । परस फरो महिरास
। आ० । इगुरु कदे नहीं वारसीए ॥ १३ ॥ सुखजो सुगुरुनो
मेद । राखो सुगल ठमेद । आ० । घोडामें माछ पखोए ॥ १४ ॥

॥ ढाल ६ ठूठी ॥

॥ दसी श्री गुरु क्यारि नमीए । मुनी गुब सुखीपरे
भाइ । सेवा मव मवमें सुख दाइ । बंध्या सिब सुखर पावे । जन्म
बरा मरखो नहीं आवे ॥ मू० १ ॥ मद आदुहर गाले । निरमल
पंथ महाप्रस पावे । पांचे सुमतिर सुमता । क्यपा मायसु नहीं
ममता ॥ मू० २ ॥ संजम सतर २ घारी । फिर फिर करता पर
उपगारी । बासी मीठीरे मवा । चोख इंद्र करे न्यारी सवा
॥ मू० ३ ॥ दोष बयालीसरे टाखे । मन बचन क्यपा बस कर
पाखे । खाब वीकन केरे प्यारा । निज पर आत्म वारखहारा
॥ मू० ४ ॥ करती बैसारे धीरा । सायर जैमा होय गंभीरा । मरु
असार मोटा । कर्मा सामा म्हाण्या सोटा ॥ मू० ५ ॥ गुब
अनतारे न्यामें ॥ कबि बन पार किमी बिष पाम ॥ सुगुरु
पोतेरे गावे ॥ गुबरो दूर कद नहीं आवे ॥ मू० ६ ॥
सीकस बंदखरे यश । दिनकर दीपे जेम मुणदा । कटे । कटे
निज परे कदा । सखक पायो परम आनंदा ॥ मू० ७ ॥ दोहा ।
मछो फरमायो माहा मुनि । सुगुरु इगुरुको मे । मैं बाण्या सब
सरखा । सुगता ईस सफद ॥ १ ॥ सेराफ ममकिल सिडी छ ।
मुनि अनायी मग । पोयाही पछे नहीं । सोस मजीठी रग

॥ २ ॥ देव रागी गुरु लालची । जीव हिंसामें धर्म । तीन कर्ण
तीन जोगद्ध । छोड़ मिथ्या भर्म ॥ ३ ॥

॥ ढाल ७ मी ॥

देसी सेवग सभूनाथ कीरत कागद । धन मोटा मुनिराज ।
बुध थारी भारी हो । भलो दियो उपदेस । बड़े विसतारी हो ॥ १ ॥
धन धन तुमचा तात । मात थाने जाया हो । धन तुम छो अव-
तार । सफल करी काया हो ॥ २ ॥ छोडया छता भोग । जोग
तुम लीनो हो । दी समारथाने पठ । दया रस पीनो हो ॥ ३ ॥
तुम हो दीनदयाल ॥ आसरो थारो हो । सतपुरुषारी महेर
भलो होय मारो हो ॥ ४ ॥ फसियो जग जंजाल । भोग नहीं छूटे
हो । रहूँ आपसे दूर । हियो मारो फुटे हो ॥ ५ ॥ पट कायारा
नाथ । तात मोए तारो हो । होज्यो भव भव माए । सरण तुमारो
हो ॥ ६ ॥ फिर फिर सेव्या देव । गुरु पिण पेख्या हो । आप
सरीखा माहाराज । कठे नहीं देख्या हो ॥ ७ ॥ दीज्यो दरसन
आप किरपाकर माने हो । राखू हीयारे बीच । भूलूँ नहीं थाने
हो ॥ ८ ॥ धारचा धर्म अनेक । मर्म नहीं जाण्यो हो । सांचो धर्म
महाराज । आज्ञे पिछाण्यो हो ॥ ९ ॥ रोम रोम विगसाय । हरख
नहीं मावे हो । दे प्रदक्षणा तीन । अग नमावे हो ॥ १० ॥ तू
मोटो जोगिद । ध्यान रस लीनो हो । मेँ मूर्ख मति हीण विघन
थारे कीनो हो ॥ ११ ॥ निमत्या काम ने भोग । असातना कीनी
हो । नाथपणारी वात । रती नही चीनी हो ॥ १२ ॥ खमो खमो
अपराध । खिम्या धर्म थारो हो । पर उपगारी आप । विरद
विचारो हो ॥ १३ ॥ तुम गुण अनत अपार । पार नही पाउ हो ।

मो मुक्त रसना एक । किसी बिघ गाँठ हो ॥ १४ ॥ सहु परवार
समेय अंजलिपर माये हो । आया बीखा दीस माय । अतिबर
सयि हो ॥ १५ ॥

॥कलसा॥ महा मुनिसर माहा देसना । बांदी नीकर विसवारये ।
सेखक समझितबार हुवा । राजामें सिरदारए ॥ रा० १ ॥ सेखक
बहु ठपगत कीना । ठठकस्टी मफित करी । बीजो पिण मूनी
केवली । होय कैसिब बंदूबरी । हो ॥ २ ॥ सत हास सर्वष
मुनिको । कीनो छत्र खोयए । विरुद्ध विबापी अधिक भोखो ।
मिछमादुक्कड़ मोयए । मिछपा ॥ ३ ॥ शुष भोखी सुष नहीं ।
हस्त दीर्घ विचार ए । महेर कीन्यो मूरख ऊपर । कविजन सीजो
सुषारए । कवि ॥ ४ ॥ समतभी १६ से कहीए । ऊपर बाबन
सास ए । असाद बंद एकदसीने । करी बैपूर में सत हास ए
॥ ५ ॥ जूय रत्न समुदापमाय । रंमाजी हुवा गुखमणी । तास
सिख्यबी बड़ाव गूथी । मूनी गुखमाला मणी ॥ सु० ६ ॥ प्रसाद
भी गुल्देबशीको । गुखवतारी दास ए । अकसर हास सर्वष देखी ।
मव कीन्यो ठपहास ए । म० ॥ ७ ॥ इति अनाथी मुनीराजरो
सत हास्यो समाप्त ।

॥ नव चाढकी लावणी लीखते ॥

चासः—धन धन धन धन संभुकरजी । जीवनमें समठा
सीनी । परखी परखी तजी प्रमाथे । ए देखी । सीलप्रत सुष
पासो प्राखी । निर दोषण धनक निरखो । पसुपंडक महीलाको
बासो । मछपारी राखे बडको । मूस मंझारी जम विचारी । नास
करेसा मछप्रतको । सीलप्रत सुष पासो प्राखी । बेग मिछे सुख

सिवपुरको । आंरणी ॥ १ ॥ बीजी गड इणीपर कीजे । रस
पीजे जिन बाणीको । एकली नारी पुरुष संघाथे । वात निगत
चटको मटको । काम जगावे कद्रप नढावे । दृष्टात जाणो नौंरूको
॥ सी० १२ ॥ एरण आगण पुरुष अम्त्री । नहीं बैठे
कोई ब्रह्मचारी बैठे सोवे वाड बीगोरे । गरभ दोष पावे
नारी । कांजी दूध निगाडे देखो । वचन उथापे जिन-
वरको ॥ सी० ३ ॥ चौथी वाड चतुर नर राखो । रस खाखो
सिवरमणीको । भरनेणमें मत निरखो । ब्रह्मचारी अंग नारीको ।
काची कारी जे नरनारी । निरखे तेज जिम दिनकरको ॥ सी० ॥
॥ ४ ॥ टाढी भीत प्रं चक्र अंतर । ज्यां सोवे भोगी प्राणी । सीलवत
रहे तिन थानक । वाज मोर दृष्टात जाणी । विषय वचन जो पडे
कान मे । मन निगाडे मुनीजनको । सी० ५ ॥ काम भोग विलस्या
जे पूरव । बार बार ज्यो चितारे । चार बटाउ बुडीया दृष्टंत ।
सील बटाउने मारे । छठी नाड करे मन डीडता । विषे जहर दूरो
फेंको ॥ सी० ६ ॥ गरम आहार परज्यो भरभरतो । नितको नित
केवल नाणी । वाड भग करे सीलवतकी । न्यागे ते उत्तम प्राणी ।
मनीपातमे पावे पय मिश्री अरु सरवत नारीको ॥ सी० ७ ॥
पुरुष केवल वतीस प्रमाणो ॥ अठाइस नारी जाणो । कुलंग कवल
चोरीस प्रमाणो । दृट दृ डने नदी खाणो । ओछो भाजन इदको
उरे । फुट जाय मुग दडाको ॥ सी० ८ ॥ पस्त्र भूषण अंजन
मजन । केसर ने चदन चगचे । तेल फुलेल अरगजा लेपन । ब्रह्म-
चारी करतोलरजे । पि । कारण जो करे सुश्रुषा । सीलवत
थावे भाखो ॥ सी० ९ ॥ शब्द रूप रस गंध । फरस प्रमत विचरो ।

उठम प्राचीण अनापी टेप वीरकी । छोड़यां बैपड निरवासी । राग
 रंग अरु नाटक येण । प भी मरम है पुत्रगलको ॥ सी० १० ॥
 इन्द्र चंद्र निरंज सुरासुर । सीतकंठके पाए पड़े । सरप होप कुलनकी
 माता । मृत मित्र नहीं दखल करे । हरी अरी कुजर दूर रहे
 सब । तेज बड़ो ब्रह्मचारीको ॥ सी० ११ ॥ गजसुखमास अर्धतो
 बंधु । नेमकर राहुस नारी । बीजेकर अरु धीधीमाफंनरी ।
 बासपखे बया ब्रह्मचारी । सेठ सुदर्शय सीत प्रमावे । सिंघासय
 ययो सुस्त्रीको ॥ सी० १२ ॥ उतरायेन सोलमें माखी । बाढ मठ
 सिख साखी । लैपुरमाण बड़ाव ओढ़ने । निज आतम निज बस
 राखी ॥ १६ से बावनके बरसे । जेठ सुदी दिन मोमीको ।
 ॥ सी० १३ ॥

२२ परिसा

॥ दोहा ॥ पांच पद प्रसन्न सदा । सरसती लागू पाय ।
 बासत परिसा छत्रपी । कहीन डाल बसाय ॥ १ ॥ बास तेहीअ ।
 हुषा बगमें सबसे बूरी है । बडे बडेका मान गले । आदनायके
 चार संस शिष्य । मूल सगी बन माग बले । बन बन साधु सह
 परीसा । सुरवीर होए नाय करे । तप करबार मावका माता । करम
 अरीस मंग करे ॥ अर्धकी ॥ १ ॥ हुषा सिरसा अति लीली ।
 बिन पाखी मुनि प्राय तजे । आवा कर्मी काबो पाखी मगवावे ।
 सिख नाय भजे ॥ बन २ ॥ सीतकलमें ठंड सहे । अत भीरवत
 लै ठंडे नगि । भीरवावस्त्र अलप उपसी । ध्यान धरे बढते रंगि
 ॥ बन० ॥ ३ ॥ ग्रीष्म ऋतुमें धाम सहे । अत पवन बले अरु
 बाध । बसती बैसू संवे अतापना । शीत तपे अरु पग दावे ।

॥ धन० ४ ॥ निरखा रितुमें टांम मसादिक । जुं गाइड देवे चटका ।
तिलभर धेरु धरं नही तिख पर । समतारा पीवे गंदका ॥ धन०
५ ॥ एक सफेदी मगरु राखे । एक अंग कीमत जाणी । थोडा
मिलिया नही मटावे । इधकासुं समता ताणी ॥ धन० ६ ॥ काग
भोगमें रीत नही पाये । हित राखे मजम मेती । पुद्गल फंड रच्यो
इण जगमें । मुगतीस बाले छेती ॥ धन० ७ ॥ आयभाय मिणगार
स्त्रीके । मगाग टष्टिमें नही भाके ॥ सील रतनको करे जापतो ।
मन मे गल ताणी राखे ॥ धन० ८ ॥ ग्राम नगर पुर पाटण फिरतां ।
ककर अरुकाटा मुचे । पाय उमगाणा चढे थाकलो । गाडी बेल नही
बछे ॥ धन० ९ ॥ लेवे निमगमो वन मसाण । अथवा दिगख तले
मेमे । मन मचन काया मम राखे । स्वापड जीव नही बासे
॥ धन० १० ॥ मेज्या उची नीची अवखी । दुखदाट असमाध
करे । एक गतको जाणे पग्गिओ । दिनमायी चौमाम भरे ॥ धन०
११ ॥ रुचन जान पटे काटामा । आक्रोश केड द्वेष करे । दूध
पतामा मम मर पीवे । जाणे अनारज धीर धीरे ॥ धन० १२ ॥
केट अनर्खी अग्नी मायी । ले लफडीने लागकिरे । छूरी कटारी भाला
मुर्छी । नवे मयन परिहार करे ॥ धन० १३ ॥ करे जाचना केई
पुद्गलकी । देवे पिण अपमान करे । आयो नापडो दीयो उदारो ।
पिण माधु नही मान धरे ॥ धन० १४ ॥ उद्यम करतां नही
मीले तो । उती म्मन पीण नट जाये । द्वेष धरे नही गृहस्थ ऊपर ।
अलगव आडी आवे ॥ धन० १५ ॥ आयो रोग सोग
नही मरगो । पाया ते मगने प्राणी । मरुहार मो मरुज चुकावे ।
कायर ते भागा जाणी ॥ धन० १६ ॥ ठण वास के सुवे सधारे

घटक घटक देवे घटक । घोड़ा बस्त्र नींद न आवे । समतारा
पीये गटक ॥ घन० १७ ॥ पीछी मरदन नहीं नाचो बावो
। बावजीव लगे नहीं करखो । होय पसीनो मेल गले जब ।
समतारो सेवे सरखो ॥ घन० १८ ॥ कोई चरणमें देवे मस्तक ।
बंदन करु असकृती कर । कोई अग्यानी देवे ठोकर । दोपां परम
भाव घरे । घन० १९ ॥ ग्रम्यां म टी ग्यान अपूरष ॥ मसीर्यारो
काई पार नहीं । अदरदाता गुरु कर जाखे ॥ ग्यान ध्यान पोषार
सह ॥ घन० २० ॥ बोझबांक करै बहु उदम । तोपीय ग्यान
नहीं आवे । सम प्रस्थामे सह परीसो । घेरु करे नहीं सीदावे
॥ घन० २१ ॥ खरी आसता भिन वधनोकी निध्या मतने
खण्डन करे । अन्य मागनी महिमा पूजा । दखी बंधा नय घरे
॥ घन २२ ॥ अनूकूल इशमें मन गमता । सोमी सहना कटख
मय । प्रतिकूल प्रतक दुखरासी । बड़े बड़े सो माग गये ॥ घन०
२३ ॥ परीसो पचरीसी ओड़ी । बड़ाव जेपुगक माई । अमाद सुद
१८ से बावन । हरस सावशी मैं गाढ़ ॥ घन २४ ॥ इति संपूर्ण

बाल सहीअ । बिग बिग अगमें कपर पूरसा । सजम से आले
निबला । घन संसारमें उठम प्राणी । खो टाळे दोषस सगला ।
बि आकड़ी ॥ १ ॥ इस्त करम बली मइपुन सेवे । रात्रि भोजन
प्राप्त हरे । आदकरमी राजपीडत । इशने उदमाद करे ॥ बि० २
किरतार्गइपमीथेमद्धीनै ॥ असीसिट सामो आययो । पंच प्रकरे
आहार मोगवे । सप्तसो ए छटो बाखयो ॥ बि ३ ॥ पार बार
पचलाख मांगे वो । गुरवाशीरुपु नहीं लाज । छ महीना में मूत
सीयाडो । छोड़ी बीजामें माज ॥ बि० ४ ॥ उदक लप अरु माया

धानक । तीन तीन एक मास मधे । सेव्या सगलो दोषण लागे ।
 घीवघात संसार वधे ॥ धि० ५ ॥ जाणी हिंस्या जाणी मिरपा ।
 अदत्त पराड जाण गीरे । सचीत प्रयत्री सनगंध जागा । सुवे वेठे
 पाव धरे ॥ धि० ६ ॥ जीव महत्त गजोट पाटीया । कंदादी दस
 सचीत भखे । उदक लेप दस माया धानक । ग्रस मधे नहीं सेव
 सखे ॥ धि० ७ ॥ सचीत हाथ आहारादिक वेरे । इन्हीसइ सेवे
 सवला । कर्म प्रकृति डीढकर बांधे । संजम गुण धावे निवला ।
 ॥ धि० ८ ॥ टाले सवला पाले संजम । सो पावे पद निरवाणी ।
 जेपुरमाए जडाव कहत हे । असाढ सुद नोमी जाणी ॥ धि० ९ ॥

चाल लागणीगी छे । मत सेवो कोड बीसैअस असादया
 धानक माधजी । आकडी । द्रव द्रव करतो चाले साधु । नीचो
 नई निहाले ॥ चउदीम कपडा उडे धजा जिम । निन पूंज्यां पग
 ढाले । कठे पूजे कठे पग देवे । इरज्यामे टोटो घालेजी ॥ मत०
 १ ॥ मरजादा उपरन भोगवे । पाट पाटीया कोय । वडा गुरांसुं
 सामो गोले । मजम मादो होय । थेयर इकद्री घात चिन्तवे ।
 खिणखिणमे करोधी होयजी ॥ मत० २ ॥ निस्ते भाषा कलह-
 कारणी । गरुना ओगण वाढ । बोलतो नहीं सके मूरख । वेठो
 करे उपाद । जूनो क्लो उदंडै पाछो । ए वारे असमादजी
 ॥ मत० ३ ॥ अकाले मभाय करे । सट काले वीगता वाद ।
 । सचीत खरडया निन पू ज्या पग । सुवे बैठे साध । पोर रात
 गया पछे गावे । घाटे घाटे मादजी ॥ मत० ४ ॥ गछमें भेद
 पढावे पापी । अठी उठी मिलजाय । कलह करतों मूल न लाजे ।
 लोग हसाड धाए । आप गले परने मतावे । दोनू भव दुःखदायजी

॥ मत० ५ ॥ दीन रुम्यापी आयस सुधी । आसो आसो साय ।
। मत नहीं पड़खाब न जाके । मन मावे न्यु साय । अमुअसो अन
बोवे सतो । बढामुससु वायजी ॥ मत० ६ ॥ ए वीसु टासुन्यो सरे
। संजम रुडो धाय ॥ १६ सें वरस बावनेसरे । लेपुरमाए बढाय
। बोस मोकडो देखने मरे ॥ दीनी डाल बढायजी ॥ मत० ७ ॥

॥ ३३ असातना लीसीए छिए ॥

देसी । वीस बढासु बाद न कीजे । आगे पासे
आगे उबै । आगे बेठे आयजी । बराबर पासे बराबर उबै । बराबर
आससु अयजी ॥ १ ॥ मूख करे असातना । केइ अपछंडा
अपनीवजी । जमाली गोसासो देखो । हुना गहा फत्रेवजी ।
आकडी ॥ २ ॥ अयछंडाने ग्यान न आवे । ग्यान विने
अंधारजी । सीख दिया सामा थड आवे । गरु अडे गरुके
बरजी ॥ मूख० ३ ॥ तीन उपगरी । तीन बेठबरी बोयजी
। अडतो पासे अडतो उबै बटे । ए पूरी नव होएजी ॥ मूख० ४ ॥
गुरु पेला दोव ठंडील बाबा पहेला सुष करावजी । इरीपावइ
पडीरुम पहीला । करन राखे अयजी ॥ मूख० ५ ॥ गुरुमादिकहु
प्रससु पूछे । कोई माइ बाइ आयजी । पहेला उतर देवे ठिखने ।
आप बडेरो पायजी ॥ मूख० ६ ॥ इत्य सुवा इत्य आगो माइ ।
कीन्यो करअ आयजी । आगे पिश नहीं पासे उठे । बाबी नीइ
गुसायजी ॥ मूख० ७ ॥ अपाय गोबरी छोट्टा आगे । आसोवे
देखायजी । घामे देवे मन गमताने । अपासु सुवलव पाएजी
॥ मूख० ८ ॥ गुरु पेला दोव मेला बँठ । गुरु गरडा दांव न

कायजी । आछो आछो वेगो वेगो । आप जाण घटकायजी
 ॥ मूर्ख० ६ ॥ गुरु वतलायां जवाव न देवे । वातामें लग जायजी
 आसण बैठो उतर देवे । छ' कहो कहो थायजी ॥ मूर्ख० १० ॥
 रेकारा तुंकारा देवे । बोले सारो जहरजी । ग्यान न आवे अवछंदाने
 गुरुसुं राखे वेरजी ॥ मूर्ख० ११ ॥ गुरु सीखावण देवे आछी ।
 सीखो भणो सुजाणजी ॥ थेइ सीखो थेइ बांचो । पाछो कहे अयाणजी
 ॥ मूर्ख० १२ ॥ गुरु कहे भाइ सोढू न बोलो । तुम ही खोट
 सीखायजी । साचो अरथ न आवे तुंमने । में कहूं नीम थायजी ।
 ॥ मूर्ख० १३ ॥ गुरु गीतारथ देवे देसना । सुण राजी नहीं थायजी
 । भैसा डोलो वाले गीचमें । रस कथारो थायजी मूर्ख० १४ ॥
 हीवडा सुण कई हुमा राजी । फिर आज्यो मेला होयजी । अर्थ
 अपूर्व कहेस्युं तुमने । कठ कला मुत्र जोयजी ॥ मूर्ख० १५ ॥
 तेइ देमना तेही देला । तेइ पूरखदा मांयजी । घोट मठारी पाछो
 वाचे । मानभंग गुरु थायजी ॥ मूर्ख० १६ ॥ दिन साथे आयो
 नहीं सुजे । लानी कथा गणायजी । थतो वेठा हुकम चलानो । माने
 खाणो लायजी ॥ मूर्ख० १७ ॥ गुरु संथारे सुवे वेठे । नहीं लाज
 मरजादी । ठोकर लाग्यां नहीं खमावे । उपजावे असमाधजी ॥
 मूर्ख० १८ ॥ गुरु उचो आनण वेठे । मद छलीयो मानीसजी
 । गुरु चेत्तारो नही कायजे । ये पूरी तैनीमजी ॥ मूर्ख० १८ ॥
 उत्तम प्राणी दित कर लेनी । नहीं आणे मन रीमजी । जैपुर मांण
 जडाव करन है । नीलो बीमा बीमजी ॥ मूर्ख० २० ॥ छत्र
 साखे ढाल गणार्ड । पानीपात्री कोदजी । ओछी इदकी आगम
 सेती । मिछयादुकडभोयजी ॥ मूर्ख० २१ ॥ १६ से वावन

कलामें । आसल सुदभस्मी जायडी । असावना इफरीसी छ सने
मत्त फोईं सीज्यो तावजी ॥ मूख० २२ ॥ इति संपूर्णः ॥

॥ तीर्थंकर गोतरी ढाल लीख्यते ॥

निरमल त्रिन । सुच समगत् पाई । बांक कुमी रही नहीं फाई ।
ए देसी । अरिहत सिच माचारज ठपाप्पा । न्यारा सीजे सरखा ।
पंच पदारा मुख गारंता । मेटे आमण मरखा ॥ १ ॥ बांभे गोव
तीर्थंकर प्राणी । सेवे बीस बोल दित आशी । आंकडी । प्रपन्न
मत्ता गुरु गुण गाता । धेवरना गुणग्रामे । बहुयुत तपसी गुण
गाता । अविचल पदवी पाम ॥ बां० २ ॥ मणीयो गुणीयो यत्
करतो । समच्छि सुच पालंतो । सत्त प्रकारे दिनप आराधे ।
पड़ीक्रमखो नित करतो ॥ बां० ३ ॥ सीस आचार अरु व्रत
पालंतो । तीजो चौयो प्याने । बारे मेई तपस्या करतो । अमेदान
सुपाय दाने ॥ बां० ४ ॥ दस प्रकारे व्यावप करतो । सरव जीव
समादे । स्यान अपूरव मखतो गरातो । छत्रनी मक्ति आराधे ॥
बां० ५ ॥ मिथ्यामतने दूर करंतो । त्रिन मारग दीपाये । ग्राम
मगर पूर पाय्य निभर । तीवळं पर पावे ॥ बां० ६ ॥ देख
बोकडो ढाल पसार् । १६ सेने वावने । लैपुरमाए अड़ाव करत है ।
ते प्राणी बन बने ॥ बां० ७ ॥ इति संपूर्णः ॥

॥ पोसारा १८ रा दोपरी ढाल लिख्यते ॥

बाणी भी त्रिनराज सगी कनि पड़ी रे प्राणी ए दसी । दोष
अठरा टास पोप फीजे सही । रे प्राणी इय वेद कास भाव देख
भूके नहीं ॥ १ ॥ पड़ेसे दिन सरस आरे । इसीस न संवखो ।

रे प्राणी । नागो धोवो नाय । नख केम सवारणो ॥ २ ॥ पोसामें
हाथ पावे । चगावे जोषसु । रे प्राणी । होय बंठा निसंके । टरे
नही दोषसु ॥ ३ ॥ माला मोती हार । विलेपन चरचन्हो । रे
प्राणी । लेयें दिनकी नींद । शस्त्रादिक बरजन्हो ॥ ४ ॥ निन पूंज्या
खीणो खाज । उतारे मेलने । रे प्राणी । निद्या निगता विवाद ।
नजर निपे रागमें ॥ ५ ॥ बरका सुधारे काम । भोलावे कुलाभणी ।
रे प्राणी । नहीं देखो मनमान । उभगरण छूटा मणी ॥ ६ ॥ नहीं
बंछे मनमांण । बुगो पेला तणो । रे प्राणी । जैपुरमांय जडाव ।
कयो मानो हमतणो ॥ ७ ॥ १६ से गावन । श्रावण बंद बीजने ।
रे प्राणी । दीनी ढाल वणाय । मवि उपगारने ॥ ८ ॥ इति संपूर्णः ।

॥ बार भावनांरी ढाल लीख्यते ॥

देसी देनदानव तीर्थकर । अन्निय पहेंली असरण दूजी ।
तीजी समारस्वरूपे । एकते चौथी भिन । पांघमी देही असुचनो
कूपे । रे प्राणी । मावना सुध मन भावो ॥ आकड़ी ॥ १ ॥
अस्वर भावे समर कीजे । निरजरा करमनी पावे । लोक सरूपे
बीचार करता । धर्म ध्यान बध जावे ॥ रे प्राणी भा० २ ॥ बोध
मावना वाग्मी भावे । नमगत निरमल थावे । समगतथी संजम
सुध होवे । मजमथी मित्र पावे । रे प्राणी ॥ भा० ३ ॥ १६ से
वावन जैपुर में । अमाढ मुद तेरसे । रुहत जडाव शुद्ध भावना
भावो । अजर अमर पद पावो । रे प्राणी ॥ भा० ४ ॥ इति संपूर्णः ।

॥ समकितरी ढाल लीख्यते ॥

देसी प्रीत मारी जिनवर से लागीरे प्रीत तथा कर्म रेख नहीं

ले । ओलख जीव छद्मपना मरु । अणुसंघा आशोर । जीवक्षीम ।
 दवगुरु नय तन्व सिद्धाणो । दया धम जासो । खनसो मारग ह
 बाँकोरे । जन । फटख खडगरी धार । विषम ह सुइको नाको ।
 आँकडी ॥ १ ॥ मबहीम सममार । बाव एक मुक्तिको रागोरे । पा०
 । दिन बचनारी प्रतीत । भोगरी बँछा मत गछा ॥ व० २ ॥ प्रथम
 हिमा त्याग । मूठ कोड मुखसे मति माखार । मूठ । चोरी परस्त्री
 द्रव्यक्षी ममता मति राखो ॥ ३ ॥ पच महाप्रत मूल । अनुव्रत
 आरक्य आशोर । अ० । तिनसु गुण होय । शिवा प्रत धार
 पीछाक्षी ॥ व० ॥ ४ ॥ ए ममठटी जाण आण मन समता दह
 राखोर ॥ ॥मा ॥ कटु ब फविलो छोड ॥ विषय सुख छि
 छि मत भ्रंक्षे ॥ व० ५ ॥ दान मील तप भाष । धारक्षी चोडी
 कर राखोर ॥ आ० ॥ मन मान सा माल से जातो । शंख मव
 राखो ॥ व ६ ॥ एख जैन मत मर्म । धर्म एक सिम्पा के माँदर
 । वमा ज्यो पाले भव उसीक । मित्र-पूरक्षी साई ॥ वै० ७ ॥ १६
 में बानन । अठमैं अपुरक माँदर । समगत उपर बोड लावखी ।
 बडलजी गर्व ॥ व ८ ॥

॥ बालचदजी माहाराजना गुण लिख्यते ॥

दनी रतन मुलनी लाहनीलारी । बालमुनि दरसख क्यू नहीं
 दिराया । माने प्रस व्रम व्रसाया । जनबमुनि दर्शख क्यू नहीं दि
 राया ॥ आँकडी ॥ १ ॥ रसना नाम रटयो मुनी धारो । मनहो
 गयो उमायो । नैखे होए व्रसत है दमड । पावन छह दिखायो
 ॥ वा० २ ॥ काश करु में प्रन्ही पाइ । प्रबीने उडोह न बाइ ।

जंगाचारण विद्या न मोपे । सेवा सारुं मदाड ॥ च० ३ ॥ धन वा
 धरती ज्या पात्र धरत है । मीज्या अनड नमा हो । दीन दयाल
 कीरपाल कहीज्यो । तो माने किम ब्रसाहो ॥ वा० ४ ॥ ग्राम न-
 गर पूर पाटण बीचरो । करते ग्यान उजीवारो । धन वा जननी
 जनम दीयो हे । धन थारो अग्रतारो ॥ च० ५ ॥ धन वे श्रावक
 वाणी सुणत हे । प्रतलामें सुध आहारो । सेना सारे अष्ट पोहोरकी
 । दग्गन करत तुमारो ॥ वा० ६ ॥ ढो ढो वार नागोर जोध्याणें
 । उडलू फीर फीर जावो । पाली पीपाड पे कीरपा तुमारी । जेपुरमे
 चक प्रताग्रो ॥ च० ७ ॥ मत्र श्रावक ब्रसत है द्रसकू । याद करे
 नर नारो । कन मुनि पाव धरे जेपुरमे । जीवन प्राण आधारो ॥
 वा० ८ ॥ करता मभाल छे माम बरस मे ॥ पूरण कीरपा तुमारी
 । दोय वरम नीत गये तथापि । आ अतराय हमारी ॥ च० ९ ॥
 सुण ओलभा रीज करो तो । कैठ मुक्तके माड । रीज करो तो
 मीज सुख दीज्यो । दोन्यू ड मन भाड ॥ वा० १० ॥ सब संतन-
 से एही अग्रज हे । मो पर महर कावो । करुणा सागर सेप काल
 मे । नीचग्न जेपुर आगो ॥ च० ११ ॥ चुक हमारी कीरपा
 तुमारी । दोन्यू ड एक मारो । जेपुरमाए जडाव जपत है । नाम
 मूनी एक थारो ॥ वा० १२ ॥

॥ श्री मीमंधरजी ढाल लीख्यते ॥

॥ देमी ॥ गोराने बाड आजे वमो न जी मारा देसमें । प्रभुजी
 खेत्र पीदेह बीराजीया । जैठ बते छे चोथो आरो । श्री मंधीर
 स्वामी । श्री हम पीता तुम नणा । थाने मतकीमातमेलारो । श्री

मंघीरस्वामी माने आधार वो प्रभुजी आपरो ॥ आंकडी ॥ १ ॥
 प्रभुजी हासे धोरासी पूरब आउखो ॥ उधी पांच सो बनक घारी
 कियो ॥ श्री० ॥ कंचन बरवा सुहाबवा । मारो दरसखने मनबो
 उमायो ॥ श्री २ ॥ प्र० कपरपणे ँश लाइमें । पछे पिता गया
 फलोके ॥ श्री० ॥ बीस लाख पूरब पछे । पायो राज सीसा सुख
 मोग ॥ श्री० ३ ॥ प्र० लाख प्र पठ पूरब लग । बेटो शुभ बर्ताई
 नीते ॥ श्री० ॥ तीन ग्यान घरमें बस । घारी हागी सुगत सु
 प्रीते ॥ श्री० ४ ॥ प्र० काममोग बाप्पा करमा । बेटो बोहत
 कीयो उपगारे ॥ श्री ५ ॥ प्र० कर करबी केवल सीयो । बारा
 नाम बखी नीसतार ॥ श्री० ॥ लाख पूरब चारित पासने । बेटो
 वास्यो मुक्त दबारे ॥ श्री मी० ६ ॥ प्रभुजी मासे साख्य । बोधे
 चानैबी । समस १६ से बानन बरसे । श्री मंघीरस्वामी । जेपुरमाण
 बडावजी । बारा दरसखन जीव पबी बसे ॥ श्री० ७ ॥

॥ पचेंद्रीनी ढाल लीख्यते ॥

। दशी भरो कुम्भो हो हजारी मेदा बागमेंरे । प्राची पंच इंद्री
 बम कीर्तीपदी । अस्त अक्षर अमरपद लीजीपजी । उम्तात्तो । तिखसु
 सुख अनंता पावे । किर किर गरमा बास न आवे । जिनसु अनम
 मरवा मीन आवे ॥ १ ॥ प्राः आंकडी ॥ मात्र इंद्री बस दुख मो-
 गवेनी । मूल मीरपा मरवा होवावे । पूगी उपर सर्प बचावे । बरबस
 होइने बहु दुख पावे ॥ प्र २ ॥ नेत्रा बस होय पतंगीयोजी ।
 दीप सीखामें मसमी होवे ॥ प्र ३ ॥ पाख इंद्री बस मपूछ मरे की ।
 सोमी फुसपनमें कम आवे । रस मकरंठ होइ सुख पावे । इंदर
 फुजनमें गिर आवे ॥ प्रा० ४ ॥ रस इंद्री बसमार माखलोजी ।

गम कम लेवाने उमावे । तुरत गले कांटो पस जावे । साधू संजम
मूल गमावे । प्रा० ५ ॥ फर्म इंद्री वस होय मानवीजी । कंड
प्राणी प्राण गमावे । लंपट लोकामाय कहावे । कुंजर वृरे हवाल
मगावे ॥ प्रा० ६ ॥ इंद्री अकेकी वम दुख सहजी । पाचाके वस
केटण गीगू ता । मुरनग इंड होय फजेता । धन मुनीवर थे पांचड
जीता ॥ प्रा० ७ ॥ रुडा शब्द रुप रम गधसे भलाजी । आछा
पुरम थकी सुख पावे । सेज्या फुलनकी मन भावे । नकसी सर्प
तुरत डम जावे ॥ प्रा० ८ ॥ समत १६ में तेपन भलोजी फागण
मुढ पख मातम जाणी । जेपुरमाए जडाव वसाणी । निज पर
आतमने हीन आणी ॥ प्रा० ९ ॥

॥ करम रेखरी ढाल लीख्यते ॥

॥ राग ॥ कर्म रेख नहीं टले । करो कोड लाखा चतुराड । आंकडी
॥ १ ॥ धर कर वीरज ध्यान । ग्यान कर मनकुं समजाणारे ॥
ग्यान ॥ वीन भगन्या नहीं होय छटको । अवी चूका देणा । क-
रज एक कर्मनहा भाटरे ॥ करज ॥ क० २ ॥ फेर कहु कर्मनकी
उतकारे ॥ फेर ॥ वडे वडे मय चक्र गरु गये । रहे इतकाने उतका
। मनुष्य मय वाग वाग नहींरे ॥ मनु० ॥ क० ३ ॥ कर्ममें को
न जगर भाटरे ॥ कर ॥ मनीया माध तिर्थकर गुणधर । सरव हार
ग्याट । मजम लीयो मुक्तीके नाटरे ॥ म ॥ क० ४ ॥ करममें मीत
मर्ग मनमेरे ॥ क ॥ राजा रागण पकड मगाड । देव जोग छीनमे
। धीरज कर जगमे जम पाटरे ॥ धी ॥ क० ५ ॥ वीरने कर्म दीया
झोलावे ॥ श्री० ॥ कान्ठनमे खीली गटकाड । स्वान कीया दोला
ध्यानमे नहीं चक्रा काटरे ॥ ध्या ॥ क० ६ ॥ द्रोपडी सतीय नमे

मोटीरे ॥ हो ॥ मीम हायसें कोषक मूबो ॥ नीअर घरी खोटी
 । हादी जूग क माहरे ॥ हा० ॥ क० ७ ॥ मरमसें मेवारब
 मारपोरे ॥ म ॥ खंदक रीखनी खास उवारी । करासीं ब हर्मो ।
 हरीने मार सीयो माहरे ॥ इ० ॥ क ८ ॥ करमसें सुरपत बम-
 रापारे ॥ क० ॥ बड़े बड़ेकी मर फजेती । फमी बीन मुख गाया ।
 बाग्यकर मत बाँबो माहरे ॥ म्हा० ॥ क० ६ ॥ ध्यान मन नव
 पदक्य भरयारे ॥ ध्यान० ॥ तप अप संजम करषी से छे । सव-
 गुरुक्य सरया । सरया मब मबमें सुखदाहरे ॥ म ॥ क १० ॥
 गरब नहीं करया उन बनकरे ॥ ग० ॥ पलक एकमें पलट जाय ।
 या नारी है गणिक्य । दानसु संग से से माहरे ॥ हा ॥ क ११ ॥
 समत १६ से ५३ । अठ पद खेपुर के माहरे । अ । करम क्वारी
 बोड छावणी । अडावजी गाह । करमकु मत बाँबो माहरे ॥ क०
 १२ ॥

॥ राग होरी काफीरी ॥

मतलू टारे । हारे मत लू टोरे । प्राख पराया प्राखी ॥ मत० ॥
 आंरुडी । प्राख पराया आप मरीला । हारे बीरा । माख गया केरस
 नाखी ॥ मत १ ॥ अ रे अ रमें जीव अउरुया । हा० । बनासपवी
 में अनैजाखी ॥ मत २ ॥ वम अ र के ह खम प्राखी । हा ।
 अनाहरे बना करो करुणा आखी ॥ म० ३ ॥ पुन बीड्यानागा
 धार । हा । आनु बर कीया पठ दुख खाखी ॥ म० ४ ॥ अनर्ध
 बैर करे धेक्षमे । हा । ए ता प ड पराह न पीछाख ॥ म० ५ ॥
 इस इस पाप कर के मुख । हा । कांइ दुख सहेता कया ह मसाखी

॥ म० ६ ॥ धरम काज करे बहुहिंसा । हा० । यातो नरक जावणरी
नीयाणी ॥ म० ७ ॥ कहत जडाव जेपुर के मांइ । हा० । ज्यारी रक्षा
करो उत्तम प्राणी ॥ म० ८ ॥ १६ से फागण सुद तेगस । हा० ।
थे तो सुखे २ जावो निरगणी ॥ म० ९ ॥

देसी ॥ पूछे पीया क्यूं नै पाणीरे पंडीत

रोम कीसीसै म आणोरे भवीयो । रोस० । दोस करमको
पीछाणो रे भवीयो । रो० । आकडी ॥ १ ॥ रोस करीने निज
गुण वाले । परगुण दाय न आवे । काच ने साटे हीरा हारेतो ।
वीरथा जनम गमावेरे । भवीयो । रो० २ क्रोध-मान चंडाल
सरीखो । भाख्यो केवल नाणी । आगो पाछो कोइय न सोचतो ।
तोडे प्रीत पूराणीरे । भ० ॥ रो० ३ ॥ नेह गटावे बेर बधावे ।
अपजम पैडो बजावे । तप जप संजम भूल गमावे तो ॥ नरगनी-
गोदे भमावेरे । भ० । रो० ४ ॥ तिरजंच जोग लहे करोधी । सांप
वीछू गो थावे । आगला कर्म उदे में आया तो । फिर पाछो बैर
बधावेरे । भ० । रो० ५ ॥ क्रोध मान ए दोए मोरचा । माया
मान पडावे । पुरम थकी नारी होय जावे तो । नारीही ज कहावेरे ।
भ० । रो० ६ ॥ लोभी नर ए चारुइ सेवे । कयो दसमी कालरे
मांयो । सागर सागर में पड भूवो तो । नदराय धन खोयोरे । भ० ।
रो० ७ ॥ इत्यादिक केइ जीव अनता । ज्याने चार कपाय रुलाया ।
चारु गतमें चोपड खेली तो । छोटी ते सीय सुख पायारे । भ० ।
रो० ८ ॥ पर नीचा पर अवगुण करकर । मेल पायो धोवे ।
पग बलती नहीं देखे मुख । डूबर बलती जोवेरे । भ० । रो०

८ ॥ १६ से अड़ाव खेपुर में । तेपन होली बोमासी । निज आत्म
समझवस्य करव । जुगतेसु ओढ प्रकसीरे । म० । रो० १० ॥

देसी ॥ भांगरा गीतरी० ॥

कर न्यायोने करारे ले बासी । सुम्यानी जीवा । दुखसीरे गव
बासी । अब तु तिरजा । पापसु हर जा । अगत अस सेमारे
बीबडला । अनम सेखे कर जारे बीबडला । आकड़ी ॥ १ ॥ नर
मय पासो तु एल गमायो । सु० आगेरे गयो प सतासी ॥ अ० २ ॥
पूरव पु बी तु खाइ सुटाइ । मूर्ख प्राणी । रीतोरे होय आसी । अ० ।
३ ॥ पुदगल फरमें पडयोरे अनादको । सु० अब तोरे कंटो फांसी
। अ० ४ ॥ पाप बचायो ने पुन पटायो । सु० मय मयरे गयो दुख
पासी ॥ अ० ५ ॥ प्राख पराया तु इस इस लूटे । म० सेखोरे
आगे होय आसी ॥ अ० ६ ॥ सुष पल पुनम । मरयोरे मरयो ।
संस्त-पावन रे जैपुर बासो ॥ अ० ७ ॥ ओढ अड़ाव सुखाइ । अगलसु
। सु । येतोरे पबो सुख पासी ॥ अ० ८ ॥

॥ जरा टुक जीवो तो सही ए देसी

श्री गुरु देव उपदेस । चतुर सुख पारो तो सही । सुम्यानी
समझो तो सही । होजी तजो कोष मान अरु सोम । ममर्तक मारो
तो सही ॥ म० ॥ सु० १ ॥ होजी मारे पडे मजन में मंग । संग से
चाहो तो सही । होजी मारी अधरीष अटकी नाब । पार समझो
तो सही । होजी मनि प्रभू बीन दुख आचार । छारसे चाहो तो
सही । सु० । आकड़ी ॥ २ ॥ मरतागर बीच नाब बाबकर बछ
घो सही । होजी अब खेखवाहो दुख । समझमे फेडा घो सही ।

होजी मा० ॥ सु० ३ ॥ पड़े मीथ्यायतनी रात भ्रान्तनुं मटोवो तो
सही । सु. होजी अब गुरु बीन घोर अंधार । ग्यान गुल जोवो तो
सही ॥ सु. ४ ॥ धर्म धजा लो दादबाए । सुघ भावना सही ।
सु. होजी मारा सत गुरु खेवणहार । पार उतारेला सही । होजी
मा. ॥ सु. ५ ॥ रोको आश्रव छेद । भेद नहीं तिरवामें सही
॥ सु. ॥ होजी भरो दान सील तप भाव । माल ले देठा छो सही ।
सु. ६ ॥ पहुंचो मिवपुर ठाम । काम सीध होवेला सही । सु. होजी
तिहां बैठे जगजजाल । तमासो जोवेला सही । होजी माने गुरु ॥
सु. ७ ॥ १६ से तेपन महा ब्रद जेपुरमें सही । होजी तीथ सातम
ने समिवार । जुगतसुं जडावजी कही ॥ सु. ८ ॥

हा हुकम लीए दीया सदगसे । हा कनइयो कान पीयारो । महा
बीर मामण के मामी । आया प्रियमणी कूख मोजार । नहीं मीटे
जगमे होयणार । ए निस्ते कर लीज्यो धार । कहांकु सोच करो
नरनार । मीटे न जगमे होयणार । आकडी ॥ १ ॥ रावण तीन
खडको राजा । ले गयो रामचंद्रकी नार । पडयो नरकमें खावे
मार ॥ मी. २ ॥ सोकां आल दीयो मीर उपर । सीताने काडी बन
मोभार । पग्वर जाण दोय कु पार ॥ नशी. ३ ॥ सेण करारा समकीत
धारी । घणा जियसु कियो उपगार । बैठे नावा ब्रद मोभार ॥ मी.
४ ॥ कु डगीर माधु पीत भाजि । पहुंच्यो सातमी नरक मोझार ।
ग्यानामें तेनो अरीहार ॥ नशी. ५ ॥ पडन पच बुयके सागर । जुवे
खेल हारी नजनार । महा भागने छे पीतवार ॥ मी. ६ ॥ कृष्ण
महाराजा करी दलाली । मान देइ ताया परवार । माठी गतमे
लीयो अक्तर ॥ मी. ७ ॥ छाने जाय वध्या गूजरघर । मरया

फसुं बी बन मोझर । नही मन्पो पासी पावसइर ॥ नही ८॥
 दीपायशतपती संतायो । दुगारका बाली छीन मोझर । अतनिमजी
 वरुषार ॥ मी ६ ॥ अमासीरिख मझरीरनो । सरवा मूछ
 हयो मचइर । पोत्यो छीसमोप देव मोझर ॥ नही १० ॥ मोसले
 बाग्या दो साधू । वेछ समासल मोझर । तिर्बेकर दुख सया
 अपार ॥ मी ११ ॥ मीरग छीप्या मीरगावती सेती । मेखरपान
 अंजना नार । पतिवीरइ दुख सद्याअपार ॥ मी १२ ॥ होयइर
 टले दुख अमरे । स्थिर रर स्त्री अवतार । तेल चढी रह राखल नार
 ॥ नही १३ नीरुचय ग्यानी गम बाता । अदमस्तेसा ले बीरइर ।
 कइत जइत अपो नवकर । मी सीख सुगुरुछी लीजे घर ॥
 नही १४ ॥ पंखतोनी नती द्रोपदा । नारदा । नारद द्वेप चरयो
 अयुपार । मेल दीवी शिवा समुद्रपार ॥ १५ ॥

॥ लावणी लीर्यते ॥

तजिपरे आसत दर घर एकमना भजिय कृष्णकार सुनी
 सरधना ए देखी । तारो दुटे दीमरासीतज वृक्ष पेडे पूर अगत के
 भरती पूजे । दीसमे चमक बीज अरुले गात्रे । अ होय कइक
 सगइ । आकास कदी समे दाजे ॥ १ ॥ स्त्री सजाय पित साप ।
 अमनाय टाली ॥ अ या बायी छे सुखदार कटे कम बाली ।
 आंछडी ॥ २ ॥ हाइ मांर मे सोइराब टालीजे । मीरती
 पंच समानइ ईंमालीजे । बातअर जख बन ह । गिरख
 आछसे । गिर मीरतू ग मरेइ राज । मीनख वसेगसे । स्त्री० ३ ॥
 अनाद सुइ माझो आनोइ कती । ए पांडू पडपा बाख ।
 । पूनम केती । सरब सीख ए सांज सबस नही मझीये । आदी रात

दोफार चोतीसे गीणए ॥ क० ४ ॥ १६ सें वारन । फागण
चोमामी ॥ फा० ॥ जेपुरमांए जडान जोड़ प्रकासी । ए चोत्रीस
सुंइ टाल सुत्र भणसी । बीघन सहु टल जाय । सीव सुख वरसी
॥ करो० ५ ॥

॥ ढाल ॥

क्या परमान करुंदा वदा । ए देमी । वार वारमें क्या तुज
बोलूं । मान कद्दा मेरा । सन स्वारथके मीले मृसाफर । नहीं कोई
तेरा । नहीं० । रे चतुरनर । नहीं० । ए तन तेरा तनक तमासा
पाणी पतामा । आंकडी ॥ १ ॥ भूटा तन धन जूठा जोवन ।
भूटा आवासा । पाव पलकमें छूट जायगा । जंगल होए वासा ।
जं० । रेच० । ७० । ए० २॥ हाडकी टटी चामका पडदा । बंध
रह नामा । लोइ मांस अं मैं जलके । शौच नहीं मासा । सु०
रेच० सु ॥ ए० ३॥ नावे धोवे बेस । बणावे अंश्रुकी वासा ।
इदेही पर धोन उगेगी । गड चरे घासा । गड० रेच० गड० ॥
ए० ४ । कहत जडान लगी जेपुरमें । मुक्तिकी आया । १६ सें
तेपन सुखदाई । जुठ नही मामा । जु० । रे चतुरनर जुठ नही
मामा । ए तन तेरा तन० ५ ॥

धरजा टोपी ए देमी । मातपिता सुत बंध वाम रे । मृतलत्र
केरा यार रे । गरज मीटी पूछे नहीं । ए तोडे जूनो प्यार रे ।
चेतो क्युं नी गीवार थारी । पाप न छोडे लार रे । आंकडी ॥ १ ॥
नात जात लाइने बंधन । खाड गले ज्या जायरे । रोग आपदा
आय पडे । जद दूरथकी भग जायरे । चे० २॥ पुन पाप संजोग
मील्यो । सब मेला हुवा आयरे । हटवाडा मेला जस्यो । सब

चित पाझी उठ जायरे । ये० ४ ॥ सुतो सुतो क्या करे वाने सुता
 आगे नींदरे । फल सीराणे आय खडयो । त्रिम ठेरस आयो
 बींदरे । ये ५ ॥ छनक जीनकमें आयु जीजे । त्रिम अंजलीको
 नींदरे । फल फीरे विहू लाकमें । योतक योतक मारे बींदरे ॥
 ये ५ ॥ वन वन जोवन फारमा सरे । बतन करतां जायरे । दान
 सीयस तप खरची सेहै । आगे नहीं पिसतायरे । ये ६ ॥ क्या
 रंगी रंग फांगी । देख देख मठ कुतरे । चार दीनाझी चानची ।
 पिस छेद गोती पूसरे ॥ ये ७ ॥ मदमातो रातो बीपय नमें ।
 मन नावे जान खायरे । जीव पवित्री हसे दयावे । मरने दुग्गज
 जायरे । ये ८ ॥ मान सीख मगगुरुझी साची । मठ भर फेस
 फीगुरके । सेपुरमाए अडाव कात है । चेते तेइ सुररे ॥ ये ९ ॥

॥ बालचंदजी महाराजना गुण लिख्यते ॥

। गीते कुल गुलाबरो । ए देवी । सामीजी पचारया है सेखी
 । मारे हाथे हरख अपारो । मारी सजनी । दरसख देखी
 सुनोरावना । मरी सङ्गठ ठाँ भरारो । मा वालो सुगुरुजीने
 बँदश । आइयो ॥ १ ॥ वन दायदा म बरो । साइव बीरी
 आइ बरद मा । रोम रोम नव गमीयो मरी प्रगटी बडीए
 पूर्याइ । मा ॥ वा २ ॥ आइ करारख हु धैर । मरी कलीए
 मनोरख माझो ॥ मा ॥ सकल पडो दीने आजनो । दरसख
 दीना दीनदीयास्तो । मा । वा । नीत उठ सेवा सारस्या ।
 अपा सुबस्या भीरु राखी । मा । मन मुख पास्या मास्या ।
 देस्या दान उज्जट मन आशी । मा ॥ वा ४ ॥ जोग
 मीन्यो दस बोसरो । करो दान सीयस तप भावो ॥ मारी० ॥ ए

अबसर चूको मती । कोड उत्तम खेजो दारो ॥ मा० ॥ चा० ५ ॥
 घर धंधो छे कारमो । सब सुतलन केरा यारो । मा० । साचो
 सरणो धर मेरो । माने भर भरमें आयारो ॥ मा० ॥ चा० ६ ॥
 चैत सुकल छ तेपने । जडावजो जोड बणाई ॥ मा० ॥ जेपुरमां
 ए जुगतेसुं । सब बादांरे मन भाइ ॥ मा० ॥ चा० ७ ॥

॥ नेमजीरो वारा मास्यो लीख्यते ॥

। न्यालदेरा गीतनी दरी । अ राडमें आरा हुतीजी कह । आमी
 जान बणाय । आया तो फिर क्यु गयाजी । होजी कोइ पलुवा
 दोम चडाय । प्रर फार आगे नेर मरा कीजो । आंरुडी ॥ १ ॥
 सावणमे सजय लीयोजी कह । मग लेड परिवार । जाय जाय च-
 ढया गिरनारपेजी । होजी । कोइ हमारी न लीनी तार ॥ अ० २
 ॥ भाद्रवे परवा घणता कः नराता चना नोर । चारु दान
 परन जे कोलनोजी । होजी मारे लागे तीखो तीर ॥ अ० ३ ॥
 आसोज आमा बडीजी । अर आमी दीनदीयाल । मनरा मनोरथ
 पूमीजी । होजी माने कारमी गजो नीडाल ॥ अ० ४ ॥ कातीक
 कय नहीं आगीयानी कइ । यो मन मांमो थाय । पर दीशाली
 किम करुंजी । होजी मारो तन धन एलो जाय ॥ अ० ५ ॥ मी-
 गसर महीने पद भरेजि । कइ मगल माता जोय । मार न पूत्री
 साहीगजी । होनि मैते भुग २ पीनार नेय ॥ अ० ६ ॥ पौष
 महीने मी पडेजि कइ । जर्म नदीना नीर । नेन खडा गीरेनारपेजि
 । होजि ज्यादा कपे नगन गरीर ॥ अ० ७ ॥ मङ्ग वसंत वीराजि-
 योजी कइ । फुली मय नेवार । हुं तुम नानी केन ज्यु जि । होजि
 मारे पूरवली अंतराय ॥ अ० ८ ॥ फागण फाग खीलावज्योजी

कइ । अरअ करु कर जोड । अवर पुरयनी आखडीजी । होजी मारे
 येइ मायारा मोड ॥ अ० ६ ॥ आंचो महुडो पैतमेंबी कइ । नेम
 न बहुमयो लीगार । कठ सूप्यो कोयलसखोजी । होजी माने तु
 तु दे तु कर ॥ अ० १ ॥ फल पाका बैसाखमेंजी कइ । पाफी
 दाडम दाख । कचरी कर धारो प्रीतडीजी । होजी माने छोडा
 ओगण माख ॥ अ० ११ ॥ जेठ तप अति आकरोजी कइ ।
 पात्रे लू दो बाल । नेम तपे सिरे नारेजी । होजी देही अतिसुख
 माख ॥ अ० १२ ॥ बरस एक पूरो कीयोजी कइ । मूरत राज-
 सनार । इक रंगी फी प्रीतडीजी । होजी कइ धन न्यारो अबतार
 ॥ अ० १३ ॥ छे संजम सारे गइजी कइ । सकल कीयो अबतार
 । मुगत बीसो अयम कीयोजी । होजी पीव पहेला राजस नार ॥
 अ० १४ ॥ १६ से भावनजी कइ । जेपुरमाण बडाख । सावस
 कइ तिथि पंचमीजी होजी यातो मागे मुगत पडाव ॥ अ० १५ ॥

॥ दूजो वारा मास्यो लीख्यते ॥

राग बडे पर ताल सलीरे । ए देशी । अठ कडे तु पैत प्राची ।
 बीत्यो बाय बैसाख । बे साखा परम पापरी । बरि पाफी समझित
 दाख । मठ कर मारो मारोरे । धर्म बीने पूछे अमारोरे । आंखी
 ॥ १ ॥ अष्ट अष्ट तुम बाखजोरे । मानसो अबतार । पुन संजोगे
 पामीपोरे । सो पछो मठी शर ॥ म० २ ॥ असाढा आसा फलीरे
 । मेरया करतमसार । सत्गुरु इंद्र घडकीयो । बाबी बरसे सगन
 पने चार ॥ म० ३ ॥ सावस स्वस रस पीजिपरे । दिन बाबी
 मरपूर । मीध्या रोग मीठा बसी । न्यार सीव सुख नहीं छे बूरे
 ॥ म० ४ ॥ मछरे बीरखा गलीरे । दाख करत पूछर । जनम

मरण नदीयां चली । मत द्वे कालीघार ॥ म० ५ ॥
 आसोजा आसा करे । गुरु वचनाकी प्रतीत । स्वात
 वृंद जिम मेलज्यारे । नहींत्र होला फजित ॥ म. ६ ॥ काती
 किरतव आणणारे । देखो मत पर दोष । निज पर आतम थोलखोरें ।
 आणो मन सतोष ॥ म. ७ ॥ मीगसर ममता मारनेरे । समता
 करो घरनार । सहल करो सिव पुर तणी । राखो केवल चौकीदार ।
 म. ८ ॥ पोम महीने सी पडेरें । सह परीसा सुर । कायम
 भागा वापडा । ज्यारा भूंडा दीसे नूर ॥ म. ९ ॥ महा
 वसत भली रितु आइ । हुलस्या भयी सुखकार । फुली पुरखदा
 देखनेरे । दरमण गुरु दीदार ॥ म. १० ॥ फागण फाग खेलो
 भव प्राणी । समक्रीत स्त्रीके संग । पीचकारी पछकारणी ।
 भर डारो सील सुरग ॥ म. ११ ॥ वारा मास वीत्या केइ रीता ।
 पडी आउखामे हाण । गइ गइ सो जाणंदो । अत्र चेतो चतुर
 सुजाण ॥ म. १२ ॥ अठारसें वरस वावनेरे । जेपुर सेके काल ।
 जेठ महीने जडावजी । जोडी वारे मासरी ढाल ॥ म. १३ ॥

कहोरे उदा सामजी कद आसी । ए राग । साधुजीरी वंदगी
 में तो करस्यारे । माहाराजारी वंदगी में तो करस्यां । हारे मे तो
 करस्यां ने भव तिरस्या । सा । आकडी ॥ १ ॥ मूनी पंच माहा
 वरत पालेरे । मूनी हरिया पथ नीहालेरे । मूनी आतम गुण
 उजवाले ॥ म्हा. २ ॥ मूनी गुण सताइसधारीरे । तपस्या कर
 कठण करारीरे । खट कायाना हीतकारी ॥ सा. ३ ॥ मूनीग्यानदानरा
 दातारे । अनाथा जीवारा नाथारे । दरसण देख्या मीले सुख साता ।
 म्हा. ४ ॥ मुनी दोष वेतालीस टालेरे । सत्रे भेदे संजम पालेरे ।

बीन आम्हा प्रमासे बाहे । सा ३॥ मुनि गांव नगर पुर कीरतारे ।
 मुनि पर उपगार ब करतारे । एक ध्यान सुकल मन भरता ॥ महा.
 ६॥ अठारेसंससीलगरथ भारारे । मुनि उपसम रसना न्यतारे ।
 माने सागे साड न्यू खारा ॥ सा ७॥ संसार दुखासु न्यतारे ।
 मव बीवनि सागे प्यारारे । राग डेपने बीवस्यहारा ॥ महा ८॥
 न्यारी बाणी इमरत मेवारे । पोसठ इत्र करे न्यारी सेवार । बारे
 पारे षंडू मुनि एवा ॥ सा ९॥ नव बाड महत व्रत पारीरे । केव
 बाछपसे श्रीमचारीरे । करवी करे आत्मता तारी ॥ महा १० ॥
 केव तपसी त्यागी बेरागीरे । केव म्यानी ध्यानी बडमागीरे । सीव
 रमथीसु सीव सागी ॥ महा ११॥ न्यामें गुण अनंता पावेरे ।
 मांसु पूरा किया किम बावेरे । बडावजी सीस नमावे ॥ महा १२॥
 समत १६ सें वासीसेरे । नैगीन रंमाजी दुचासेरे । धीयो बोमासो
 सुबीछासे ॥ सा १३॥

॥ ढोढीया पद लीखते ॥

॥ राग काफ़ीरी बेसी छे ॥ मन बचस केसे सुढेरी । पापी
 बीन पांछे उढेरी ॥ मन बचस केसे सुढेरी ४॥ म ॥ आंकडी
 ॥१॥ परीए बीनमें सीन होय पुवगसमें । बीनमें बोगे सुढेरी ।
 करएछास । दास होय बोसोतो । बीनमें वाय सुढेरी ४
 ॥ म २॥ परीए मनकी मोत्र करे मनसुवा । मागे केव गढेरी ।
 सेखसही जिम कर्म कमावे तो । दुरगत जाय पढेरी ४॥ म ३ ॥
 परीए ध्यान सगाम धाम मन घोडा । उपर बाए पढेरी । मन बस
 राख बडाव केपुरमें तो ॥ कर्म कहीसें उढेरी ४ ॥ म ४॥

॥ राग तेहीज ॥

॥ मनकी गत कैसे लखेरी २॥ कभी जीन कह नहीं सकेरी ।
म. ॥१॥ आंकडी । एरीए नाटक चक्र वक्र गत एहनी । जावत
को नै दीखेरी । चउ दीसमांए भमे भवरा जीम । फिरतो कोनै
थकेरी ४ ॥ म. २ ॥ एरीए नीरलज लाजे नही मन मूर्ख । ठाम
कुठाम तकेरी । मनकी लहर सुणे कोइ सैणो तो । जाणे भूठो ज
करी ४ ॥ म० ३ ॥ एरीए मन मावत तन चचल हम्ती । ज्ञान
अंकुसनकैरी । मन बस राख जडाव जेपुमें तो । ज्यै सुख चावे
अखेरी ४ ॥ म० ४ ॥

॥ राग तेहीज ॥

। मनडा मेग वोहोत हरामी । जाणे एरु अंतरजामी ॥ म० ॥
१ ॥ आंकडी । एरीए निज गुण छोड रमे पर गुणमे । एही जी-
वकी खामी । सतगुरु सीख भीख नहीं भरतो । होत जगत बदनामी ४
॥ म० २ ॥ एरीए इमरत छोड । वीसन विप पीवत । होए कुम-
तको स्वामी । इणकी संग बहोत दुख पायो तो । अब तो छोड
गुलामी ॥ म० ३ ॥ एरीए मनकी फोज चोज कर जीते । सोइ
मुगतके गामी । जैपुरमांए जडावजी सीपू । नमत सदा सीर
नामी ४ ॥ म० ४ ॥

॥ राग तेहीज ॥

। मन चंचल हाथ न आवे । दोडथो वायर जावे । म० ॥ आंकडी
॥ १ ॥ एरीए घेर घेर लाउ नीज गुण में । तो पिण फंदे लगावे
। फाल भरे बदर की नाइतो । कूद कीनारे जावे ४ । म० २ ॥
एरीए राग रंग अरु ख्याल तमासे । वीगर बुलायो जावे । ग्यान

ध्यानमें आलस आवत । भरठ उयासी आवे । म ३ ॥ एरीए भूत
पीसाव कुंवर एहीकेहर । भूपत पीस्य बस बाव । वैपुरमाण बडाव
कहे । मन पांख बीने ठह आवे ४ ॥ म० ४ ॥

॥ राग तेहीज ॥

। पूजणी तो बडा उपगारी ॥ मांफड़ी ॥ एरीए पच महाप्रव
निरमल पाले । गुप्त पट तीस नीहारी । सुमत गुप्त मन डीङ्क
राखे तो । ममता सुमय पीढ़ारी । पूजणीस रहनीत न्यारी ॥ पृ०
१ एरीए सहर भेड़ी सजम पाले । तपस्या बीबिच प्रकारी । दोप
बयालीस गलत भली पर । सु नीरदोषण अहारी ॥ पृ० २ ॥ एरीए
बासी बरस । इमरत भारा । सुय समज नर नारी । भीष्मा पारे
धुप आतम को तो । सम अंदुर उगारी । क फल सागां सुख मारी
॥ पृ० ३ ॥ एरीए समतता सागर । ग्यान उजागर । प्रतरोषे
नर नारी आप तीर अवरनकु तार तो । कर कर पर
उपगारी के । अप तो बारी हमारी ॥ पृ० ४ ॥ एरीए बीधर ग्राम
नगर पुर पाण्य । पहीन फरो उपगारी । सहर सुपत्तूर बग पदारो
तो । बाट जोव नर नारी । के इच्छा पुरो हमारी ॥ पृ० ५ ॥
एरीए पाट बीरांज्या पूज रतनर । आचारस पद मारी । सांख्यी
छरत म्हीनी मूरव । दख ठख आउ बारी । क नीत नीत बनबा
हमारी ॥ पृ० ६ ॥ एरीए एरु जीमनु कजूर कछ सग । महीमा
इक विहारी । ब बर कोइ बडाव कइसहे । सहर जोप्याणा मजारी
। घेमाय सुकल गरुवारी ॥ पृ० ७ ॥

॥ राग तेहीज ॥

। सांवरा मती जागे गीतनारी । साइ परजव रात्रत नारी । सा०

वाला भैंतो कै कै हारी ॥ ला० ॥ आकड़ी ॥ एरी ए मती जाणा
मथुरा में आणा । करके जान तियारी । परण्यां पाछे जोगारम
लीज्यो तो । मैं भी साथ तुमारी के । लेउंगी संजम भारी ॥ सां
० १ । एरीए पसुकी पुकार सुण चाले । मेरी पुकार न वारी
। भुर भुर में पंजर भइ प्रतीम । विरह दावानल भारी के । दाजत
देह हमारी ॥ ला. २ ॥ ऐरीए पूरपोतुमको विद ने । जीव दया
दील धारी । मेरी दया न करी अलवेसर । छोड़ गये गीरधारी के
। वीलखत हे महतारी ॥ सा. ३ ॥ ऐरीए वोत
जलुस करीने आए । हरी हलधर संग थारी । उनकी जराभर
काण न राखी तो । मुरजरए हे मूरारी । लाजी सब जान तुमारी
॥ ला. ४ ॥ एरीए पहेला वैराग हुतो ज्यो थारे तो । क्या न कीयो
बीसतारी । विन परण्या मारे खोड लगाइ तो । किण आगे करु
ए पुकारी । जाणे कुण पीड हमारी ॥ सां. ५ ॥ एरीए वरण
सांवला । सोमांएगाठीला । लख न सके नर नारी । कपट करी
मेरो झीयो सगारथ । राखी अकन कवारी । करी व्हा चोरी तुमारी
॥ लां. ६ ॥ एरीए वारा मास विलाप किया केइ । दीया ओलंभा
भारी । बरसी दान देइ ब्रत लीनो तो । अब व्हां लागतु कारी ।
जगतमें होए गइ जहारी ॥ सां. ७ ॥ एरीए अब जाउं कहा पाउं
सावरीयो । दूँढत दूँढत हारी । सातसें सखीयां संग लेइ राजुल ।
चड गइ गढ गोरनारी । मीजे ज्या प्रीतम प्यारी । लां. ८ ॥
एरीए ऐसा कठोर भए तुम कबके । पूरव प्रीत बीनारी । तुंम
तोडी सो मैं अब जोडु तो । लेउंगी सजम भारी । रहूंगी संगे
तुमारी । सां. ९ ॥ एरीए कर एक तार । लार लेइ प्रीतम ।

पहुँती हुगत मम्हर । एसो नेह करे कोइ उतम । प्रतीवरता
 आचारी के । अवीचल प्रीत पचारी । सौं १० ॥ एरीए १६ स
 पचावन परसे । पोसमें ठंडफरारी । औपुरमाण बडाव कइत है । बन
 बन राजुल नारी क । नीत नीत पंदिया हमारी ॥ सौं ११ ॥

॥ लावणी लीख्यते ॥

॥ रघु बही रागु रघु बही बाद ननब आवत है ॥ रघु ॥
 वास्तो सखी छवि देखराहु । मला देखराहु ॥ रघु ॥ आंकड़ी
 ॥१॥ क्यन कोइ बाद व्यावने आए ॥ आगे अपहरा गावन है
 ॥ म ॥ तोरय आय बोहत बभाय । देख देख सुख पावत है ॥
 म० ॥ रघु २ ॥ पसुखी पूकार सुखी फित चाते । सबही मील
 समजावत है म० ॥ रघु० ३ ॥ बरसीदान बेइ परमरवर सुरनर
 आवांइ पावत है । म । स्य ४॥ संजम से गीतनार सीधाय ।
 सीमरमखीहु आवत है । म ॥ रघु ५ ॥ सब सखीयां बीछखी
 होए चाखी । राजुल सुख दुख पावत है ॥ म ॥ रघु ६ ॥ बहु
 सखीयां संग से कर चाखी । रहनेमी समजावत है
 ॥ म रघु ७॥ अवीचल प्रीत करी प्रीतमसे । अजर अमर पद
 पावत है । म ॥ रघु ८ ॥ बे कर जोइ जडाव बैपूर में ॥ सुख
 सुख सीध नमावत है । म ॥ रघु ९॥

॥ रसना लीख्यते ॥

॥ देसी बैरी लखरीया । ए राग । ए रसना बीचारीने
 बोलो ए । हीरासु पयर मती सोसो ए । आंकड़ी । बीगर बीचारी
 कर सक । थारो बाले अपवस होल ॥ रस ॥१॥ लाय बीगाडे

पापणी तुं । बोल घटावे तोल । लव लमधे लाली रहे तुं । हारे
जनम अमोल ॥ रम. २॥ दोष उधाडे पारका हे । विन पूज्यां
अयाण । ज्यों तोने नहीं आवडे तो । बोलो भीठी वाण । रस.
३॥ मीठी माणी प्यारी लागे हे । जन्मका बेर भागे ए । आ.
फीरी छे । निंया खोरीनापटेनी ररमो । परसुंगलावेपार । नीचली
रहनामभागणीनाने ममनाइ मो वार । रस. ४॥ भणगे गुणगे
सीखगे । थारे मल न अवे दाय । गाल गीतमे अग- वाणी ।
सारा प्हेली जाए रमना । हीगरी खडकी खोलोए । रस. ॥ ५ ॥
च्यारारी चुल्ली करे ए । अँडो खायनीसुग । मान पडावे
बोलने । मूडे मूल देवे मय जुग हे ॥ र. ६॥ होट कोटके मांए
बैठी । वरीम चोकोदार । सक न माने तेहनी । घस नीरसे तत-
खिण वार ॥ र. ७ ॥ वचन अमोलखा जिने क्या हे । गुणधर गुंठी
मान । गुण म्हालायत छोडने । ज्यारा अवगुण तारथ निहाल
र. ८ ॥ इमरत वाणी बोलणी ए । खट काया होतकार । जेपुरमांए
जडावजी । थाने साख दाना वारवार ॥ र. ९ ॥

॥ रसनारी ढाल दूसरी लीख्यते ॥

कर हारे घुमतडो घर आये । ए देखी । काल अनते तू भ-
योरे । जीवा लग रट । हारे प्राणी लग रट । खांचा ताणजी । सम-
जावे ए सुगुरु तोने । रमना हे गीगर गीचारीने बोल । बैरण ए कइए
गटावे मारो तोल । आऊडी ॥ १ ॥ गुण ढाके गुणवतनाए । पर
नादया हाए परनिंदा मे आगेमाणी ॥ स. २ ॥ तूं भोली समजे
नहींए । मारा नीज गुण ॥ हा. मे पडी हाणजी ॥ स. ३ ॥ वीगतमै

सागी रहए कैर बोले हा० अगए अप्याबजी स० ४ ॥ खक किम
 राजी रहे ए तू तो मेले हा० परायो घोपजी ॥ स० ५२ ॥ पर
 आत्म कर उजलीए तू तो मेले हा० कर द मोयजी ॥ स० ६ ॥
 बैर बसाव बोलेन ए तू तो खाय हा० बीगाह नाजजी ॥ स० ७ ॥
 खनम बीगाहे बीबनो ए तोनै मूलन ॥ हा० आवे साजजी ॥ स०
 ८ ॥ बंदीखानामें पबीए । धारे पाठ । हा० घोषीदारजी ॥ स०
 ९ ॥ हाम सया केइ मातना ए । तू ती अवतो । हा ए अवतो
 । साज गीवारजी ॥ सम० १० ॥ हे खंचल अपना खमी ए ।
 तू तो बोले । हा० बदन नट आपजी ॥ स० ११ ॥ पोषसके
 नहीं केवली ए । घासे कीरा बीद । हा० रास्तु समजायजी
 ॥ स० १२ ॥ प्रमूजी बचन रस पीजीए ए । नहीं कीजे ॥ हा०
 आल पंपासजी ॥ सा १३ । गुल गाओ गुलबतना ए । सदा
 बरते । हा ए० मंगल मालुजी ॥ स० १४ ॥ सीख दीपी निज
 बीबने ० । मेंतो धारो । हा० आब प्रसताबजी ॥ स० १५ ॥ बचन
 रतन कतना करीए । बोले जेपुर । हा माणजडाबजी ॥ स० १६ ॥

॥ देसी ॥ बड़े घर ताल लागी रे ॥ ए राग ॥

मन खंचल फिर न खोयि । जब तु म कीनो म्यार । तन सकि
 नहीं आपरी । तुम बोबो हीरदे बीचत । म्हराजारी । मीठी बाही
 र । सुगो अमीए समाही रे ॥ आंकी ॥ १ ॥ बेकर खोबी बीन-
 उबी । नथो सीस नमाय । अज कठ अलबेसठ । बे तु बज्यो
 पित सुगाय ॥ म्हा २ ॥ दुकर करवी आपसीबी । मार्ग भोग
 पाट । पगन्याठए पड़े नहीं ॥ चले बस आपा पूरा साठ ॥ म्हा०

३ ॥ गिराम नगरपुर वीचरताजी । तार्या गणा नग्नार । अथ अव-
सर थिर बासनो । तुंम याही करो उपगार ॥ म्हा० ४ ॥ तन मन
थिरता राखनेजी । भजन करो भरपूर । किण वीद मारग चालस्यो ।
मारवाड घणो छे दूर ॥ म्हा० ५ ॥ आग्याकारी आपरेजी । सिप
रतनारी खान । सीध सरब सेवा करे । थाने अनमती दे सनमान ॥
म्हा० ६ ॥ म्हाओ आओ मैं करांजी । मोरय्या जे में पुकार ।
ज्यो उपर कर जावसो तो । जोर नहीं है लीगार ॥ म्हा० ७ ॥
१६ सें तेपन भलोजी जैपुर सेंका काल । अर्ज करे जड़ावजी ।
तुम मानो दीन दयाल ॥ म्हा० ८ ॥

॥ देसी ॥ बैरी लसकरीयां ॥

ए राग । तुं पापी बहु पाप कीयाथी । तुं चुगली तुं चोर ।
बैरी तूं । तुं लंपट परनारनोरे । अधमीं अंगोर ॥ १ ॥ प्राणी पर-
देमीडां । थारी अबतो सुरत । संभाल पापी जीवडला ॥ आ० ॥ तुं
करोधी तुं मानी अंखारीं । तुं कपटी कठोर । बैरी तुं । तुं लोभी
तुं लालचीरे । नीसरमी नीठोर ॥ प्रा० ६ ॥ तूं रागी तुं द्वेषी
जगत को । तूं दूसमण तूं सैण । बेरी० सुख दुख करता तुंइ आ-
तमको । दुख मेटण सुखदेण ॥ प्रा० ४ । तुं वालक तूं बाबलोरे
तुंइ जोध जबान । बैरी० तुं कायरतुं सुरमोरे । तुं बूढो नादान
। प्रा० ५ । तूं किरपण तुं दाता कहायो । तूं मा तूं साहूकार ।
बैरी तूं० ॥ तुंइ रंक ने तुंइ राजा । थारा चरित अपार ॥ प्रा० ६ ॥
तूं अग्यानी तुंइ मुख । तूं ग्यानी प्रवीण ॥ बैरी० तुंइ सरागी
तुंइ बेरागी । तुं बडभागी तुं दीण ॥ प्रा० ७ ॥ तुंइ

बोगी । तु फकर फैकीर । बैरी० तुइ धर्मी तुइ अधर्मी । तु
 र्वचस तु धीर । प्रा० ८ ॥ तुइ सिध ने तुइ संसारी । तु तपसी
 तु सत । प्रा० ९ । चोरासीमें नाचता । पक्षा सांग व्यापो
 जगदीस । रीजाया प्रभू आपने । माने हुक्ती करो बगसीस ।
 मारा प्रभूजी दीन दयाल । माने बनम मरखसु टाल । आंकड़ी
 फीरी छे ॥ १० ॥ न्यो दुख पाया देखने । माने माफ़ करो
 मगरत । मति नाचे तु पापीया । पारे आप्यो, मबारो मत
 ॥ मा० ११ ॥ १२ से एकबनेजी । जेपुर होसी चोमास ।
 बरख करे बहाबजी । प्रभू पुरो हमारी आस ॥ मा० १२ ॥

॥ बालचंदजी महाराज ना गुण लीख्यते ॥

देसी । केरबो । स्वामीजी चतुमास दीपावनेजी । ये हुवा
 आपने स्था । सतगुरुजी माएत बीरद बीभारनेजी । हमारी बगी
 किन्यो सार । सतगुरुजी अर्ब हमारी सुख लीन्यो । कीरपा कर
 दरसख दीन्यो ॥ आंकड़ी ॥ १ ॥ सुख सुखने पदारीत्याजी ।
 पाके हुवा सिध सुखकर । सामीजी छे परवार पदारथ्योजी ।
 कोइ माने दुख आपार । स० २ सामीजीरा नेस फलत इछ
 पाखडीजी । बाको सुखडो पूनमचंद । सतगुरुजी मबक बकोर
 नीहालनेजी । कोइ पामे परम आवांइ । स० ३ । सामीजी अतसे
 धारी आपसाजी । कोइ बीराहा छे कलूकस्त । सामीजी सु
 पाखंडी दबीया रहेजी । कइ बाबे मूडो टाल । स० ४ । सामीजी

पाट वीराज्या फावताजी । जाणे केसी गोतमरी जोड । सामीजी
 गुरु भाइ गुण आगलाजी । नीत नमन करुं मद मोड । स०
 ५ । सामीजी रासी सबडा खीवराजजी । कांइ व्यावचमें भरपूर ।
 सतगुरुजी रात दीवस हाजर रहेजी । कांइ हंस वडा सिस सर
 । स० ६ । सामीजी फते फते कर पामसीजी । कांइ उत्तम गत
 प्रधान । सतगुरुजी तप कर कर्म खपावसीजी । काइ भजन करे
 भगवान । स० ७ । सतगुरुजी सत्र संतनके लाडलाजी । कांइ
 वालक सिप सुजाण । सामीजी सरणो लीनो आपरोजी । तुम
 राखजो जीवन्त प्राण । स० ८ । सतगुरुजी पुरण पुनमचंद्रमाजी ।
 थारे नव दीखत अणगार । सामीजी बोत जतन कर राखज्योजी ।
 ज्यांने दीज्यो पार उतार । स० ९ । १६ सें तेपन भलोजी ।
 कांइ जैपुर सेंखेकाल । सतगुरुजी अरजी एह जडावकीजी । तुम
 मानो दीन दयाल ॥ स० १० ॥

॥ बालचंदजी महाराजनी ढाल दूसरी लीख्यते ॥

। देसी । मनडो उमायोहो श्रीमिंद्र भेटवा । ए राग । दोहा ।
 आद नमु अरिहंतने । गणधर गोतम देव । सासण नायक
 वीरजी । नीत प्रत सारुं सेव । १ । सिधरिध नोनीध करे ।
 टाले सकल कलेस । बालचंद मुनीराजना । गुण केशुं लवलेस
 । २ । समत १६ सें हो वरसज तेपने चैती दसगवो जाण ।
 सुखे समादे हो । जैपुर सहर में । प्रगज्या मुनी जिनी भाण ।
 बाल मुनीसर हो मारे मन बस्या । १ । भूलु नहीं खिण मात ।
 पर उपगारी हो । तारी नीज आतमा । खट कायारा नाथ

। आ० बा० २ । सीध चतुर मील हो । कीनी बीनती । अठ
 पाखे बीराजो दीबल । पखन कीज हो खेत्र मायरो । कड़ो
 मीध्या सल । बा० ३ । उन बल खीया हो । माय्या नाय्यी ।
 छ पिश देखी फल । सीध सरबनो हो । अति आगर करी ।
 कीनी अर्ब मंजूर । बा० ४ । सासवर पारा हो । मीह बीम
 गूजेत । धूय गवा नरनार । बचन लषद फर हो । सहुने
 सु होकीया । मेटे मीध्यात अ पार । बा ५ । आज समाखो
 हो । संसार सपुद्रमें । ठारक नावा जेम । मायतनी पर हो सेता
 संमालया । भून्या आवे केम । बा० ६ । स्वमत परमत हो ।
 सहुने सुहावया । मीठ मीसरी जेम । दीवाख सुसदी हो सेवा
 नीत सारवा । बंदगी करी मूनी खेम । बा० ७ । ग्रीष्म अतु में
 हो सीनी अतापना । चार बीगेरा त्याग । नीत तप मोजन हो ।
 एक बल करियो । दीन दीन चढतो बेराग । बा० ८ । एकत्र
 चादर हो एक बीछनयो । सयो सी ठठार । अरस नीरससु
 हो देहीने संतोफता कड़यो तप अप सार । बा ९ । अलप
 उपादी हो मंदी चोकाडी । आदीअ बचन प्रमाख । बीरला हो
 सीडो । इस कस्तूरखे में । गुल रसनाली खाख । बा० १० ।
 समत १६ से हो । १६ सो मन्तो । मिलस्या सुखे
 चोमास । संजम सीनो हो । तिहा सुम महीरते । मूनी मय
 राजगी रे पास । बा० ११ । बरस साइजीस अ हो । संजम
 पासने । गयो कीयो ठपगार मरुबर माला हो । देस हू डाडमें ।
 याद करे नर नार । बा० १२ । बेदनी कमब हो आयो खोर

में । आउ करम गयो खुट । सास खासनी हो सठ बहु ग्रासना ।
 आहार पाणी गयो छुट । वा० १३ । चंदण मुनीसर हो ।
 भलाइ पधारीया । साज भरीयो भरपूर । व्यावच कीनी हो ।
 मुनी तन मन करी । रहत सरन हजूर । वा० १४ । करी आलो-
 वणा हो । सुध प्रणामे सु गुरु भाइरे पास । पींडत मरणज हो ।
 देस वीवारमें । एक मुगतरी आस । वा० १५ । वद वैसाखज
 हो । छपन सालमे । तेरस पाछली रात । राइ पडीकमणे हो ।
 सुध उपयोगसुं । करी हमराज जी सुं वात । वा० १६ । इण
 प्रणामे हो । काल करे कदां । तो पामे नीरवाण । इतनी कहने
 हो । प्राणज छोडीया । कर सागारी पछखाण । वा० १७ ।
 नीहरण कीनो हो । घोट उमंगसु । वाइ भाइ अरणपार ।
 वीरोहज खटके हो । मोटा मूनीतणो । पड़े आंसुहारी धार
 । वा० १८ । मरुधरमाए हो मोटो मानीज तो आखातीज
 तीमार । जेपुरमाए हो कहत जडावजी । अत्र मुज कुण आधार ।
 वा० १९ । इति संपूर्णः ।

॥ श्रीमदीर बहरमानरो स्तवन लीख्यते ॥

। देसी । प्रेमरस मैठी राचणी । ए राग । होजी श्रीमिंद्र
 जीनराय । जुगमीदर जिन दूसरा । वदू वाउंए सुवाउंजीरा पाए ।
 सुजत सम दीस्टीधरा । वदू बहरमान जीन वीस । वे कर जोडी
 भागसु । आरुणी । १ । मयम प्रभूजी छटा देव । रिखवा नंदण
 सातमा । करु अनत वीरजीनी सेव । भजो सुर परमात्मा ।
 व० २ । वीसार वीजेधर जाण । चद्रानदण चित धरो । चद

बाठ'बीरी आख प्रमाख । भूखंगजी सेवा करो । बं० ३ । इसर
भी नेमजीबांद । बीरसेख बीछ प्यावण । माहा म्हर बस आख'द ।
अन्त बीर गुख गावण । बं० ४ । ए बीसुद जिनराब । खेव
बीदेह बीराजीया । बन्ध सेव करे नर नार । म्भ संचित कर्म
मंजीया । बं० ५ । १६ से ने बरस फतालीस । पोमासो नवा
सहर में । बीना जिनकरबीरा गुख गिरांम । तबन मलो मैदी
रागमें । बं० ६ । ससीवार कपटी सुद बीज । रंमाजीरा प्रसादसु ।
माने भीसे सुक्करी रीज । अहाव कहे बीनराजसु । बं० ७ ।
इति संपूर्णः ।

॥ देसी जीलारी ॥

। एख बीनेबांदजी सुम मोरख आयाजी । मूनी खट्खी मसा ।
भारे मन मायाजी । आंकड़ी । नष पालो नष प्रेहरोजी । नषरी
करो नित हांश । निरखो करो नष बोस्तो । धारे कबसु पूरी
पख्खण । पू० १ । नक्कीनी मिरमें राखवाजी । नक्की दोष बाख ।
मप्रख करो नष बोस्तरोजी । नषसु सीयो मन ताख । पू० २ ।
तपसी नमू बसराजजी । मोमाबांदजी बडा है बनीत । हरख
हरख करखी करे । संखम पाछे इंदियां बीत । पू० ३ । म्यान
मखे गुस्तराजजी । न्यारे राख दीवस ओइ प्यान । बेरागी बख-
राजजी । सुनी सब रतनारी खान । पू० ४ । बरतमान मूनी
बरखम्पा । बली बेरागी हवा छे त्यार । सोक माया इम बाख ।
निस्थे बाखे बाखनहार । पू० ५ । सुअ तुम गुख मेरु कोड ।
कह न सह रसना पकी । अहाव नमें कर जोड । पू० ६ । १६

म एकाग्रनेजी । जैपुर में बरयाल । पूज तथा प्रसादसुं । मारी
फलीण मनोरथ माल । पू० ७ । इति संपूर्णः ।

॥ चाल गोपीचंदरा ख्यालरी ॥

सामण नायक चीन धरीम । कांड गणधर लांगू पाए । सिध
मकल कीरपा करेम । कोट नुध द्यो सरमती माय । आचारज
आदे करीम । कांड चट सीस नमायजी । मू० नी मुजाणमलणी ।
मर्लार पीन्यारी तारी आतमा । थारी मुक्त प्यारी । भजन करोछो
परमातमा । १ । आकडी । राणी मुख नेरागीयाम । कांड जाण्यो
अर्थार मयार । चोथे आगरम चेनीयामरे । धन थारो अवतार ।
छती रीध छिटकायनम । कांड लीनो मजम भारजी । मू० २ ।
पूज बीने गुरु भेटीयाम । कांड माहा उत्तम भवीजीव । कर्म कटक
दल जीनवाम । कांड दी ममगत की नीव । कुटमी भेल्यो भुर-
तोम । थारी पील पील करती धीयजी । मू० ३ । पटणी कीस-
तरचंदजीम लघ मुजाणमलजी भिरात । बालपणे सं
मुनी बालचंदजी साथ । बाल निर्मचारी दीपता सं
थारी मातजी । मू० ४ । खाणे पीणे पहरणे सकाड
चाले साथ । सीला अलूणी चाटवासरे । कोड्ये
बलीयारी जाड आपरीस । प्रीत अख्य
कीसतुरचंदजी । भलीरे बी

मंजन करोछो परमात्मा । मू० ५ । बैपूर सहेर सु हानयोस ।
 छठे नीकसी ईसा खास । मोल ठोल न्यारे नही सरे । चढया
 म्यान इरसास । मूनीकर न्यारा पारसु सरे । सीना रतन पीछ
 खजी । मू० ६ । १० से ५१ न सरे । बैपूर में चोमास ।
 अरख कर में बडावजी सरे । पुरो हमारी आस । मांगू बचाइ
 आसु । सुज बगमो सुगत अवासजी । बुझ बीनेचंदबी । मसोरे
 दीपाओ । मारग जैनरो । बे परठपगारी । पार न पायो गुरु
 म्यानरो । मू० ।

॥ देसी जीलारी छे ॥

प्रभूजी रीखद अजीत संभव अभिनंदस्य । प्याठ हो । सुख-
 छरी बीनराज । सुमत पदम । सुपासचंद । गुण गाठ हो ।
 श्रीखद । १ । प्र सुबन सीकल श्री इस पासपुत्र सामी हो ।
 सुख० बीमल अखत श्री धर्म संत सीब गामी हो । बीखद । २ ।
 प्र० इ य अरी मण्डी सुनी सोमत । जुग बीराता हो । सुख०
 नमीए नेम पारस बर्षमान । बीम्याता हो । बी ३ । प्र० म्यारेइ
 गुणकर । बहरमान बीनराया हो । ४० बैपूरमाण बडाव हरक ।
 गुण गाया हो । बी । ४ ।

राग तेहीअ । प्र श्री भीमिंदेव बडा देव नमे हो । सुख०
 दाय न आवे अबर देव । सुज मनमें हो । बी० । १ । प्र०
 खेत्र बिदेइ बीजेमें । अति सुखकरी हो । सु० इ बरीकसी नग-
 रीनी । छीब अत मारी हो । बी० । २ । प्र० संतकी मत ठाठ ।
 श्री इस कहीजे हो । सुख० न्याय तीन सीद्धमीरो सानो छीजे

हो । जी० ३ । प्र० ज्यारा कुलमें रतन । चिन्तामण सरीखा हो ।
 सुख० आयर उपन्या । सुरनरना मन हरखा हो । जी० । ४ ।
 प्र० कला व्होतर पुरखतणी प्रगटाणी हो । सुख० जोवन वयमें
 प्रण्या । सुखमण राणी हो । जी० । ५ । प्र० आउखो लाख
 चोरासी । पुरव वखाणी हो । सु० धनक पांचसो काया कंचव
 वरणी हो । जी० ६ । प्र० भोग तजीने लोग लीयो । जिनराया
 हो । सुख० चोसट इंद्र प्रणमें नीमदीन पाया हो । जी० ७ ।
 प्र० एक चीत करने ध्यान सकल मन ध्यायो हो । सुख० केवल
 ग्यान । केवल दरसन पायो हो । जी० ८ । प्र० फीटक सींघा-
 सण चामर छत्र वीराजे हो । सुख० भाव मंडलने देव दुंदुभी
 वाजे हो । जी० ९ । अदवीच आप वीराजो पूनमचंडा हो ।
 सुख० जीग मीग २ दीपे तेज दीनदां हो जी० १० । प्र० बाणी
 सुधारस वरसे इमरत धारा हो । सु० सुगनर तीरजंच समजे
 न्यारा न्यारा हो । जी० ११ । प्र. अतसे थारी देख भवक मन
 मोवे हो । सु. सो सोइ कोसामें रोग सोग नहीं होवे हो । जी.
 १२ । प्र. मनडो मारो मीलवाने उमावे हो । सुख. तन मन वरसे
 भिण आयो नही जावे हो । जी. १३ । प्र. गुणवंता तो वीन
 तारया तिर जासी हो । सुख. मोए मूरखने विन तारया किम
 सरसी हो । जी. १४ । प्र. एह अरदास सुणीने किरपा कीजे
 हो । सु. चाकर जाणी नीज चरणामें लीजे हो । जी. १५ । प्र.
 पूज रतन समदायमे बहु गुणधारी हो । सु. दीन दीन दीपे
 रभाजी इदकारी हो । जी. १६ । प्र. ज्यारे सरणे आय सदा

सुख पाया हो । सु बे कर मोह बढाव हरक गुन गया हो ।
 धी. १७ । प्र समस्त १६ स तेवरीसें सुख बासो हो । सु भावक
 भूगता । बढखू सुखे बोमासो हो । धी १८ ॥

॥ देसी पीचकारीकी छे ॥

समुद्र बीजे सुत नम करवी । सोरीपुर बनवारी रे । सेवा
 देखीरा नंदब । भा १ । अपन कोह बाढ़ब मील सारा । बान
 बखत मारी रे । से २ । तोरबा आया मंगल गाया तो । पसुर्बा
 करीए पूछारी रे । स ३ । कर करवा एय फेर चम्या है । बाये
 चम्या गीरनारी रे । से ४ । किम आया किम फीर गया पाछा ।
 तब राहुल सुखचारी रे । स ५ । बासो सखी बाठ गीरनारी ।
 देठ मी ओलमा मारी रे । से ६ । हमहु छोड गए नीरबारी ।
 बाए बरी सीकनारी रे । स ७ । बाठ मबारी प्रीत हमारी ।
 नभमें कर दीधी न्यारी रे । से ८ । में बाठ प्रभू तुम नहीं
 बातो तो । केसे रहे एक वारी रे । स ९ । महो ममत्सु बोहत
 दुख पायो । कर दयोनी खेबो पारी रे । से १० । से संजम
 तपस्या कर मारी । सुगत गया बखचारी रे । स ११ । करत
 बढाव । तेवीसे रहबमें । बाए हमारी बारी रे । से १२ ॥

देसी श्री श्रीमधीर स्वामी महाविदेह अ तरजामी

गोतमजी तपगारी । न्यां प्रसन्न पुछ्या मारी । न्यारो आगम
 में अविधारी हो । गुनधरजी गूखचारी । भा १ । अगनसुती
 बीनबंभो । मब मबना पाप नीकरो । बाएभूतीजी आतम वारी

हो । गुं. २ । वीगत मुनीसर चोथा । ए सुखे सुखे सीव
 पोथा । जारी वार वार भलीयारीहो । गुं. ३ । पांचमा सुध-
 रमा सामी । मन तारो अंतरजामी । एक थां उपर इक्तारी
 हो । गुं. ४ । छटा बंदू मंडी । ज्यां तार दीया पाखंडी । मोरीजी
 ममता मारी हो । गुं. ५ । अंक पीताजी मारा । संसार दुखाहुं
 न्यारा । ज्यां करणी कीनी भारी हो । गुं. ६ । अचल अचल
 सुख पाया । मैतारज मुगत सीधाया । सीसरमणी लागी प्यारी
 हो । गु. ७ । प्रभात उठी नित घ्याउ । मैं सेवा धारी चाउं । मोए
 राखो पास तुमारी हो गु. ८ । चवदेसे वावन सारा । मैं बंदू न्यारा
 न्यारा । मोए दीज्यो सेव तुमारी हो गुं. ९ । १६ सें वावनने ।
 वद जेठ पंचमी दीने । जेपुर में गुण बीसतारी हो । गुं. १० ।
 भगवंत भरोसो भारी । पूरीज्यो आस हमारी । जडावजी दास
 तुमागी हो । गुं. ११ ॥

॥ देसी । मोत्यारो गजरो भूली ॥

। मत कर जीव गुमाना । नीस्ते एक दीन उठ जाना । धरी
 रह धन माया । बल भसमी होवे नीज काया । म. १ । इद्र चक्री
 हरी राया । सब बादल जेम वीलाया । वोत करी चतुराइ । पिण
 धीर नै रइ ठकुराइ । म. २ । रावणसा अभीमानी । हर लाया
 रामकी राणी । परम पूरांण वखाणी । सब लंक भइ धूलधाणी
 । म. ३ । आठमो चकरी जाणी । यो तो हुव मरथा परपाणी ।
 इत्यादीक बहु राया । अभीमान थकी दुख पाया । म. ४ । सावण
 वद १२ स । जेपुरमें प्रम हुलास । छोडो जीव गुमाना । जडाव

कदे मरजाना । म ५ ॥

॥ ढाल ॥

। प्रमो आनीयो हो । होयन हु सीपार । ए देसी । मोए
नीछामोए सुतो । सुतो बीपय बीछर । हेलादेए अगाबीयोरे ।
सतगुरु चोखीदार । मनवा मानरे सतगुरुनो उपगार । आंफखी ।
१ । अगत दुखसु क्खीयोरे । दीयो संजम भार । कंफरसु संफर
कीपोरे । पुजा म्म अपार । म २ । दीन बाणी दया आखी ।
म्हलीयो निज हाथ । क्खीयो संसारसुरे । लीयो आपखी साथ
। म ३ । समझीत रत्न दीखाबीयोरे । मायत बीरद बीचार ।
ग्यान दीपक पटमें कीयोरे । मंत्रीयो अपार । म ४ । म्म
समुद्र में इच्छोरे । लीयो मोष्ट जेस । धर्मम्हम्ह बैठायनेरे ।
दीयो कीनारे मेस । म ५ । जोग लीयो दस बोसुनोर ।
सोम्लो मत हार । ए सामगरी दोहलीर । पेट क्यूनी गीवार ।
म ६ । १६ सें पंचाबनेर । बेपुर सके फल । कइत बडाव निम
बीबनेरे । अम्ह लो सुरत समाप्त । म ७ ॥

॥ हारे काय थका ए देसी ॥

। हारे बीबइछा । सत घातखी पूतलीरे । हा जीवन रग
पतंग । कया क्खीरे । मत राखो माया क्खरमीरे । हा मत
राखो इश फ्यमेरे । हा लीशमें होय बीरग । क १ । हा हाइ
छोही नसा जालमेरे । हा परम मांसरो पीड । क २ । हा
मछ मूत्रखी बीबडीरे । हा केस रोमरो छुड । क ३ । हा बार

नाला वहे नारना रे । हा. पुरुष तणा नव द्वार । का. ४ । हा.
प्रत्यक्ष दुखनी भाकसीरे । हारे असुच तणो आगार । का. ५ ।
हा. काचो कुंभ सीसी काचकीरे । हा. अथीर मानव की देह ।
का. ६ । हा पलट जाए पल एकमेरे । हा मत कर इणसुं सनेह
। का. ७ । हा जनम जरा दुख देहसुं रे । हारे सुखरो नहीं लव
लेश । का. ८ । हा जेपुरमांए जडावजीरे । हा एम दीयो उपदेश
। का. ९ ।

॥ देसी । उदाजी करमकी गत न्यारी ॥

। ए राग । उनालारा आलस करने । दरसण नहीं ए
दीरायो । अब वरेसालो उतरण लागो । उपर सीयालो आयो
। १ । चनण मुनी दरसण वेगे टीराजयो । धेतो फिर पाछे । थे.
जैपुर जाज्यो । च आंकडी । १ । रीयां पीपाडे पधारो । सामीजी
वडलूवी प्रसीजे । बायां भायां सवे वाट नीहाल । मौपर किरपा
कीजे । च. २ । मीष्य स्वामीजीरी जोड भली हे । दीपे रही जग
माही । तपसी त्यागी बेरागीनीरागी बाल मूनी सुखदाह । च.
३ । खीवराजजी खीम्या सागर । हंस बडा उपगारी । शिष्य
सबला मोतनकी माला । सेवा करो नर नारी । च. ४ । अड-
तालीमें रीया चोमामो । कीयो उपगार सवायो । बे कर जोड
जडाव जुगतसुं । अजीरो पद गायो । च. ५ ।

चाललावणीरीं

सुण पुत्र हमारा दीख्या मत लीजे माने छोडने । ए देशी ।

भी गुरुदेव किरपा करीसजी मला पचारण्य थाप । मन
 चीन्त्या पासा इन्त्या । मलां कटो मवनां पापजी । मूनी बाल
 कंदजी मला पचारणा अजमेर सहरमें । हूँ करू बीनती । करोनी
 बोमासो इह सहरमें । आंकडी । १ । नंदरामजी मला बीराज्या ।
 किरपा कर सुनीराज्य । पचा मूनीसर अठे पदारे । दरसब करवा
 कज्रजी । मू २ । जनब जनब पवनो सरे । दे सीतल उपदेस ।
 मब मब तपत मीटाय दे सरे । बावा देस बीदेसजी । मू ३ ।
 खेमराजजी खिम्या सागर । सिस बडा सुबनीत । तप जप संभ्रम
 सप कर सरे । रात दीवस एक रीतजी । मू ४ । कीसनलाल मूनी
 ईसराजजी । हे अबरसरक बाब । सब बापारी बीनतीम । कहे
 भास करो प्रमादजी । मू ५ । १६ सें पंचालभसरे । अजमेर में
 पर बाब । मगन ककरक केबसु सरे । मोड करी बदावजी । मू ६

देसी असवारीकी छे

जनबमूनी दरसब बेगे बीराज्यो । सिप सारा तुम साथे
 न्याजो । मोपर किरपा करजो हांजी बे तो बीचरत जेपुर आन्यो
 हावो मूनी अब मत आगा आन्यो । आं १ । सब भावक
 बसत हे ब्रसड । पाद करे नरनारी । कब मूनी पाव परे जेपुरमें ।
 जीवन प्राण्य आचारो । २ । प्यार करी नबे सहर पचारणा ।
 जेपुर केम बीसातयो । दे निरबास करी ३ निरासा । ओ कद
 आपे बीचरयो । ३ । मरुपर देस में किरपा तुमारी । जास्त
 बारंमबारी । चुक नहीं मूनीनिरजीबाको । या अ तराय हमारी । ४
 ४ । पापी पाव बले नहीं कडे । सब तन छेह दीखायो । मन

म्हमंत धरे नहीं धीरज । दोख्यो तुंम दीस आवे । च. ५ ।
 बहोत कठण है तुमारी छाती । निन अपराधी वीसारथा । कहा
 कहूँ मोए उपजत नहीं । वीनती कर कर हारथा । च. ६ । वीजे
 द्रसण प्रग्न हाय कर । भरपावरीजवारी । जेपुरमाए जडाव
 कहत है । आही अर्ज हमारी । च. ७ ।

देसी कलालीरी

चंद चढो गिरनार हो कवरजी । आठ नमुं अरिहंत हो ।
 मूनीवरजी कांड पाचे पदाने सीस नमावसुं हो राज । म्हामूनी ।
 पां. । १ । दिल धर डधक आणद हो । मू. कांड मरव मूनीवर-
 जीरा गुण गावसु हो राज । २ । वाल मुनी दीन दयाल हो ।
 मू. कांड चनण वावनो हो राज । म्हा० च० । ३ । खेम
 खिम्या गुणधार हो । मू० कांड हंस प्रसंस मुनी मन भावनो हो
 राज । म्हा० ह० । ४ । भाग बली भगवान हो । मू० कांड
 तपसी सोभागी रागी मृगतना हो । म्हा० त० ५ । धन धन
 मूनी सुजाण हो । मू० कांड वाल चिरमचारी । वारी तेहनी हो
 राज । म्हा० । वा० ६ । मला पधारथा म्हा भाग हो । मू०
 कांड आमा हूती । जीम चातक म्हेनी हो राज । म्हा० आ० । ७ ।
 १६ से तेपन सहो । मू० कांड देम प्रदेसा । मैमा आपरी हो
 राज । म्हा० दे० ८ । जेपुरमाए जडाव हो । मू० कांड चरणामे
 राखो । सफली चाकरी हो राज । म्हा० । चर० ९ ।

॥ चाल गोपीचंदरा ख्यालरी ॥

नमू अगीहतने मरे । म्हागीर मद मोड । सासण नायक

गेहनो सरे । बंधु बे कर जोड़ । गुण गाउ सुनीराजना सरे ।
 पूरा म्हो मन कोड़ हो । तपसी बसवारी मलोरे दीपायो मारग
 प्रिनरो । बे पर उपगारी । मज्जन करोखो मगवानरो । आ० १ ।
 बालबद्धमुनी दीपना मर । बैरागी भरपूर । ध्यात बीगे त्यागन
 करो सरे । तपस्या कठख कर । काखी करखी सारखी सरे ।
 कर करम पकड़ुर हो । व० २ । बनख बनख बाकनो सरे । दे
 सीतल उपदस । भीष्या तपत मीटवता सरे । पाश देस बीदेस ।
 म्यान ध्यानमें लीनता सरे । नही प्रमाद बीसेसहो । व० ३ ।
 खेस खिम्या गुण आत्मता सरे । तप कर बारा मेद । गरु अम्या
 आताबने सरे बांज्या मूख ने छेद । बीनो आराधे आत्म साधे ।
 संगी सुगत उमेद हो । व० ४ । ईस दीपावे बंसने सरे । बन
 बन कह नर नर । उनखो अतापना सरे । तपस्या बीबीच प्रकार ।
 सुखदख गुरुदेवने सरे । अहो निस अम्याकार हो । व० ५ ।
 अठाइ आद करी सरे । पनरा ने इकबीस । दीपरया इस मरठमें
 सरे । तपसी बीसबा बीस । माग बली भगवानदासजी । नमन
 करु निज सीध हो । व० ६ । ओखी पुद छे इम ठगीस । कोइ
 तुम गुण अनंत अपार । सुर गरु जो पोते भखेस । कोइ बीम्या
 करी इबार । तोपिख पार न पासिण सरे । गुणनो छह न पार
 हो । व० ७ । १६ से समत भखो सरे । जेपुरमें पर पाव । गुण
 गाया गुरुदेवना सरे । सुखजो पर उछाव । टीजे मुगतरीजमे
 मोषू । अरु करे बडाव हो । व० ८ ।

चाल लावणीरीं छे

देसी तजीएरे आलस दूर थइ एक मन्ना । भजीए रे । धन
तपसी मुनी बाल २ ज्यारी दीपे । बाल० खीम्या खडग संभाय ।
करमकुं जीपे । कीनी मंद कसाय । चाय पुदगलकी । चा० तज
कुमतीको संग । सुमतकू परखी । ज्यारे सीस बडा सुवनीत ।
नमूं सीर नामी । न० । धन तपसी भगवानदासजी सामी ।
आंकणी । १ । ज्यां क्रोधमान माया सव ममता मारी । म० छोड
सकल प्रपंच म्हाव्रतधारी । तज वीषयनको संग । थए वीरमचारी ।
थ० भए सुमतीको सीरदार । जती धर्मधारी । तप कर तोडे कर्म ।
मुगत के रागी । ध० २ । पूज रतन समुदायमांण बडभागी । मा०
करे तपस्या घोर जोर बेरागी । एक मुक्तीको ध्यान । ग्यानके
रागी । ज्यां० लीयो जोवन वयमें जोग भोगकुं त्यागी । भूल चुक
अपराध । खमो मुज स्वामी । ख० । ध० ३ । समत श्री १६ स
साल चोपने । सा० कीया वास ईकबीस । दोए दस दीने । अस्या
विडला हे अणगार । कहे सब धन्ने । क० ज्यांरा दरसणसुं दुख
जाए । भजो एक मने । जेपुरमांण जडाव नमे सिरनामी । न. ध० ४

देसी जवाइ

माने प्यारा लागोजी । पंच म्हा वरत आदरथा । म्हाराजा
हो । पाले पच आचार । तपसीजी माने प्यारा लागोजी । म्हारा०
। आंकडी । १ । दोष बयालीस टालने । म्हा० ल्यो निरदोषण
आहार । त० २ । पंच इंद्रीने बस करो । म्हा० सुमत गुप्त सुख-
कार । म्हा० ३ । संवर बांध्योसेवरो । म्हा० सीलरो कीयो ।

सीतागार । त० ४ । किरिया किरागी खुल रह । म्हा० तपस्यारो
 तिलाक लीलाट । मा ५ । सिम्या लुङग न्यारा हाथमें । मा०
 ग्यान पोडे असवार । त ६ । मुकरीरा डंका बाजीया । म्हा०
 संजम संन्यास्तार । मा० ७ । अचल अलै सुख माखपा । मा० होप
 रखा छो त्यार । त० ८ । १६ से चोपन मलो । मा० जेपुरमें बर
 सात । मा ९ । जुगत करी बडाकजी । मा० बोडी बाल रसात । १०

चाल चलेरेलगाडी

ए ससत असार जाखने । जिनमें छीटकाया । कन मूनीरे
 शिष्य मेगजी । न्यारे पुरा चीत ज्ञाया । म्हा में बालमूनी दीपेरे
 म० अष्ट करम इस कष्ट मूनीमर पाखंडी जीत । भा० १ ।
 पंच म्हावरत नीरमल पास्त । दोपख सब टास्ते । सुमत गुप्त मन
 डीठ कर राखे । आठु मद गाले । म० २ । नारी नागख खाख
 मूनीसर । तडक न्हे तोड । सुमत सखीरो हुक्म उठावे । उषा
 कर जोड । म ३ । चार बीगेरा त्याग मूनीरा । एक बगत
 अहरी । परपुदगल परचाय अलप है । निम गुप्त उर भारी म
 ४ । बाखी मधुरी । फन जीम गाख । मवि जिन हीतकारी ।
 भावक बीर सोम मुक्त आगे । खूली केसरकी कपारी । म ५ ।
 क्रोध मान माया अति पतला । बिसनाइ मारी । बिचरे गिराम
 नगरपुर पाटख । मवि जीवां ठारी । म ६ । एक बीमसु गुप्त
 किम गाठ । महीमा अति मारी । कहत बडाव गुप्त सीपू सम ।
 अलप बुध मारी । म ७ । १६ से समत अठख । रीयां सुख
 बासी । दरसख छो एक बाल । मूनी में परचारी दासी । म ८

तन वसंतरके रंग लगाया ए देसी

न्यारी मती करो नेणामुं । अग्जी धूलभद्रमुं । आं० ।
 आप वेरागी । भए हे नीरागी । मारी लीन लागी चरणामुं । न्या.
 १ । मुगत म्हलकी स्हेल वताड । हुमत राखी भन जलमुं । न्या.
 २ । मेंतो पलक एक संग नहीं छोडु । पिण जोर नहीं करमांमुं ।
 न्या. ३ । दीवस भूस निस नीदन आमी । दरमण कद करमुं ।
 न्या. ४ । प्रेमचारो करणी अति दकर । गरु कहे सनमुखमुं ।
 न्या. ५ । न्हे लगाड दइ छिटकाड । अत्र कहो क्या करमुं ।
 न्या. ६ । कोस्या दासी । मड हे उदासी । गत दीवस तरसूं ।
 न्या. ७ । गणिका नार । पार उतारी । सनमुख की समगतमुं ।
 न्या. ८ । वीकानेर ७३ चोमासो । जडात्र कहे जुगतमुं । न्या. ९ ।

श्री मंधीरजीरो स्तवन लीख्यते

देसी असवारीनी छे । खेत्र बीदेहे वीराज्यां सामी । गुण
 गाड' सीर नामी । जीन हमारी वीनतडी । अवधारो । होजी माने
 भवनीधि पार उतारो । प्रभूजी. । आं० १ । दूर दीसावर अति घणो
 आगो । आवणरो नहीं थागो । जी० २ । दरसण चाड' फिण बीद
 आड' । नीसदीन तुम गुण गाड' । प्र० ३ । लवड वीद्या नहीं
 पांख न मारे । हाजर आड' तुमारे । जी० ४ । पाचमो आरो नहीं
 मारो सारो । अधम अनाथ उधारो । प्र० ५ । चोसठ इंद्र करे
 तुम सेवा । बाणी इमरत मेवा । जी० ६ । धन भव प्राणी ।
 सुणे नीत बाणी । पूरव सुकरत जाणी । प्र० ७ । श्री मंधीरजी
 सुणो मारी अरजी । राखो पूरण मरजी । जी० ८ । उद्रा मेसर.

मंगल बासर । बड़ाव जपे परमेसर । श्री० होजी माने जिम वाखे
जिम ठारो । प्र० ६ ।

मोटी जगमें मोवणी ए देसी

श्री मधीर-श्रीनसायबा एक सुशून्योजी अब्तारी अरदास ।
बे कर बोडी बीनबु । मल बगमो हो प्रभू मुगत अबास । श्री
मधीर श्रीन समरीए कर बोडी हो उगति सूर । कर्म कटे संकट
मोटे । सुखसाठा हो पामे भरपूर । श्री० १ । आं० । आप बीराज्या
म्हा बीदहमें । हूँ दुखमी हो आरारे मोए । जनम लीयो श्रीन-
राजजी । मारे पूरी हो दरसवरी जाय । श्री० २ । सबद बीघा
नहीं मां कने । कइ पांखज हो नहीं दीनी दब । किश बीघ आठ
तुम कने । दुरासु हो सारु नीत सेव । श्री० ३ । हूँ कमती
कइदगरी । कइ बें बोजी प्रभू दीन दयासु । सेवक बाखी आपरो ।
मारा कइये हो प्रभू कम बंजाल । श्री० ४ । सबसागर में मरकीयो
हूँ पापी हो अनंती पार । अब तो सरखा आपरो । मुन्तारो
हो प्रभू बीरष बीवार । श्री० ५ । बोइत न मागू तुम कने ।
खोटीसी हो कीजे बगसीम । मुगत नगर देखाय हो । तो खासु
हो किरपा बगदीस । श्री० ६ । समत दसे नब आगले । बतीसे
हो सुद कठिक मास । गुरबीजीरा प्रसादसु । पांचमने हो कीनी
अरदाम । श्री ७ । प्रम करी पाछासखी । जोमासो हो कीनो
पर पाव । प्रम ध्यान आबंदसु । कर बोडी हो जप बड़ाव । श्री ८

॥ ढाल ॥

बारी हो अंजुजी बेरामी । ए देसी । प्रथम गुणपर मोलम

सामी । ज्यां गुण नमुं सीरनामी । श्री वीरजीणंदजीन प्रसण
 पूछ्या । भव जीवां हीतकामी । भवी जीन ध्यावो श्री गुणधर-
 जीरा गुण गावो । सीव सख पावो । आंकडी । १ । अगनभुती जिन
 वाय मूनीसर । चोथा वीगट वखाणी । कंचन वरणी देही दीपे ।
 इमरत ज्यांरी वाणी । भ० २ । पांचमा गुणधर गूण कर गाजे ।
 ज्यारो नाम सुधरमा वाजे । श्री वीर जीणंदजी २ पाट वीराज्यां ।
 आतम कारज साज्या । भ० ३ । मडीपुत्र जीन मोरी पूत्र । ए दोए
 ग्यान गेरीठा । आमम वेण सुणी तुम सोभा । नेणा कदय न
 दीठा । भ० ४ । अकपिता जीन आठमा कहीजे । ज्यारो पे सम
 ध्यान धरीजे । ज्याग चरण कवलरी सेवा । चाउ प्रभूजी तुंम
 दीजे । भ० ५ । अचल पिता जीन मुगतना दाता । ज्यारा नाम
 लीया मुखमाता । मेतारज जिन श्री प्रभावे । ए दोए सकल
 वीख्याता । भ० ६ । ए इग्यारह स्हाण कुलमे । आय लीयो अव-
 तारो । माहाण माहण धर्म सुणीने । लीनो संजम भारो । भ. ७ ।
 इत्यादीक गुणधरजीरे आगे । अरज करुं कर जोडी । गरीव
 नीवाज वीरद तुंमारो टालोनी भवनी खोडी । भ. ८ । समत १६
 स बरस बत्रीमें । पालासणी सुख पाया । पुज रतन समदाए
 रंभाजी । तत सिष्यणी जडाव गुण गायां । भ. ९ ।

देसी हरजसनी छे

बण गए वैद आप गीरधारी । आ. । जी लख चोरासी
 फिरता फिरता मीनखा देही पाइ । आरज देस उतम कुल ध्याए ।
 सतगुरु सग सुणी रे जीन वाणी । सु० तज अभीमान भजोजी

गुरु ग्यानी । म० तब । ओ १ । जी गुरुप्रम अगमें नहीं ठप
 गारी । जीव अजीव बतावे । इ ठपडम कलेप मीटाय । तार दीए
 मय अलसे शास्त्री । अ तब २ । जी आइहेपर चढ़कर आए ।
 संजिती गुरु पाए । पाखी सुबकर मीच गए इ । लीनो संजम
 इपर अग आखी । इ त ३ । जी परदेसी राजा अति पापी । केसी
 गुरु समझाय । लीम्या करक करम खपाए । तपस्यामें बहर दीयो
 नीब राखी । इ त ४ । जी अगहनमाली मुद्रगर म्भली । मनुष्य
 इत्या बहु छीनी । बीर बचन सुब समता लीनी । सुत्र में जीन
 राज बछाखी । रा त ५ । जी बोर पीलायत संपट छूटेरा ।
 पापी और गबेरा । इत्यादीक सुब गुरु मुख बाखी । केवरक अए
 बरी सिब राखी । इ त ६ । जी गुरु भाराचो अछम साधो ।
 तिर एए ठतम प्राखी । कइत जबाव खैपुरके माई । सुल गइ
 अर्नत सुखारी खाखी । सु तब ७ ।

श्री १०५ श्री रंभाजी म्भाराजना गुण लीरूपते

देखा । गुबकतारा गुब कीयां । प्रगटे अछम बोत । बीस
 बेस्तमाए कीयो । बदि तिरबंकर गोत । १ । सात समुंदर सखी
 कर । सेखय सब बनराय । गुरुबीजीमें गुब बधा । मो मुख
 कथा न बाप । २ ।

बास १ छी । देसी सकजीनेसर सोलमारे सास । अरीहंत
 सिब समरु सदारे सास । आचारअ ठबझाय । सुबीचारीरे ।
 साधू साधवी आमकरे सास । बंद गुरुबीजीरा पाए । सु । १ ।
 सखीया रंभाजी दीपतारे सास । बाबा देस बिदेस । सु गुब

११ ३ ३ ।

1. 7. 1954

15

171

- 17

Figure 1

17

१११

7

T Y Y

177

— १ ३ ४ ५ ६

चायन

२३ । परम

- 11 -

- 7 -

— ११ —

77

इ बनम ज कइसी । पढ्यो मोए बंजास । १ । साइ दासजी
 वरा । भक्तक सैठ बास । मामारो सगपस हतो । इह बिद
 म्या बास । २ ।

हास २ बी । बेसी आज खेद बासी सुरज उगीयो । बाइसी
 निन्दा मती करो । करो नित धर्म प्यान । मोटी सती हो ।
 न सपात्र दीजीए । जोडोनी आरत प्यान । मो धन २ समता
 पाएरी । बारा गुबरो छेप न पर । मो हुत मरवादा में पालस्यो
 तरो बस फैलेला संसार । मो आकडी । २ । एह बचन सबने
 सुबी । आययो मन संतोह । मो धर्म करवारी मनरसी । बास्यो
 मोहन रोग । मो, प १ । बंदूजी मोटा सती । कांकीयारो हुत
 बंद । मो बिरदफे धाखे रया । बाइ मायारे हरक आबंद मो प ४
 म्यारे सिप्यसी दीपता । राम कवरजी म्हासाध । मो दरसख कर
 परसख म्या । अब सारस आत्म कज । मो प ५ । समापक
 पोमा करे । सुखे नित बासी हुलास । मो खद हरी चोम्यारनो ।
 एक सीखवरो बम्यास । मो प ६ । सत दीवस सेवा करे ।
 न्यारा बीस बसीयो बेराग । मो हुटम सहु समाजएने । आम्या
 सीनी म्हा माग । मो प ७ । समत १६ से नबाछुमि । बह
 पांचम फगख माए । मो पुज रतनबीरे सनमुख । संकम सीनो
 हुलास । मो प ८ । राम कवरजीने सुपीया । वारे सिप्यसी
 छे सुपीनीत । मो । साधु आचार सीखावन्यो राखन्यो रुडी
 रीत । मो प ९ । गुरु आधामे पालन्यो । दीनी संसारया
 सीख । मो पंच प्रमाद नीशतन्यो । बेगी करन्यो ये ब्रगत
 नबीक । मो प १० । ए सीखावख बीस परी । करे नीस

एवो उपगारबी । सु. ६ । फटीमें सेद हुए गखी कांइ । ॥ बीना
 मनेक इलाज । भाया बाया करी बीनतीजी । अठ याखे बीराजो
 म्भाराजजी । सु ७ । दीक्षमाण बेठी नहीजी काइ । रहवारी पिर
 शास । आगे बासी बारसीजी । हात्त बीचरसु मास दोमासबी
 । स ८ । तन बल बीखो बासीयोजी कांइ । नेत्रांमें पड गइ
 हीस । मन बल सठो राखनेजी कांइ । व्यासकीयो प्रबीसबी । सु
 ९ । दरसरा दीक्षागुरबेननसी कांइ । बडसु पवार्या मामाग भाया
 बाया करी बीनतीजी । अत्र बीचरखरो नही मागखी । सु १० ।
 मायत बीरद बीचरनेजी । मारी कीजे अर्ज मंजुर । तन मन सेवा
 सारस्याजी । सदा रहसां पररा इज्जरी । सु० ११ । बार २
 करी बीनतीजी कांइ । मानी दीन दयाल । तन मन भरता राख-
 नेबी । अथ ठोडसु कर्म बंजालजी । सु १२ । बल पात्र अहा-
 रनीजी कांइ । छोडी ममत दियाल । समता सागर जूझवाजी
 कांइ । ए बइ तीसरी हासखी । १३ सु० ।

दोहा । तपस्या बीषद प्रकरनी । आमल नेह बास । सीयाखे
 एकसखा । एकत्र सोमास । १ । अखोदरी वष सासठो । करवा
 बार मास । मखबो गुबबो सीखबो एक मुग्तरी आस । २ ।

हास ४थी । बेसी भू डीरे भूख अमागखी । ए राग । खबे
 इम्पार बीराजतां । मुखसातासु आपसाखरे । सोखे सत्पारां अदे
 फटी । करवा बाप उबाप साखरे । १ । गुरबीजीमाण मुश पखा ।
 मो मुख क्याप न आय साखरे । कोडे जूगां सग बरखवे । सुरः

गरु पार न पाए लालरे । आंकडी । २ । सगला मेला सटे नहीं
 कठण साधरी रीत लालरे सखसाता छे मायरे । थे वयुं नहीं
 बीचरो नचीत लालरे । गु० ३ । जतन कवरजीन राखीया । सेवा
 वदगीमाए लाल रे । व्यार करायो जडावने । जेपुरकांनी जाए
 लालरे । गु० ४ । दोए चोमासा वारे कीया । फिर आइ तुम
 पासे लालरे । जीन मारग दीपावीयो । श्री मुख दीस्या वास
 लालरे । गु० ५ । जीम जाणो तिमही करो । मेतो हूवा नचीत
 लालरे । जीन मारग दीपावज्यो । चालो गुग् वचनारी रीत लालरे
 गु० ५ । सिपण्यां आपरसावडी । मूडा आगे ठाठ लालरे । रात
 दीवम् हाजर रहे । एक वृलाया आठ लालरे । गु० ७ । किरपा
 श्री गरुदेवरी । प्रससे मुनीराय लालरे । चौथा आरारी वानगी ।
 कोइ रह गइ पाचमामाए लालरे । गु० । सिध सरव सेवा करे ।
 धर्मध्यानरा ठाठ लालरे । चदणमालानी परै । सोभरया वेठा पाटे
 लालरे । गु० ८ । देही जाणी देवालणी । नही करी सार संभाल
 लालरे । अरसालग काडीयो । तप जप रुप्यो माल लालरे ।
 गु० ९० । आउथित थोडी रही । वेढनी कर्म वीसाल लालरे ।
 ते आगे तुम साभलो । ए थड चौथी ढाल लालरे । गु० ११ ।

दोहा । पलक पलकमे पूछता । कतनी छे अत्र रात । पडिक-
 मणो मनमे अस्यो । ओर न दूजी बात । १ । स्हाग सुकल
 एरुस दीने । पोर एरु चढ्यो सुरे । कारण पुखीया वाएनी ।
 वेढन मही करुर । २ ।

ढाल पाचमी । राय बडगर ताल लागी रे । जीव, सम प्रणामे
 भोगवीरे । प्रस पणारी खेद । करम लणायत जाणने धूकाया

ध्यात्र समेत । १ । गुरखीजी ए गुख मारी रे । मैमा मरत मजारी
 रे । आकड़ी । करोष मान कथा पातलारे । माया सोमसु दूर ।
 करम कटक इल्ल खीववा । इमा सतवादी ने सुर । गु० २ । भोख-
 दरी नहीं आसतारे । सरस नीरसममाव । निज परभातम ठारवा ।
 बेठ छीलभरमरी नाव । गु० । सत्र मीत्र सारखारे । समगिण रंक
 ने राव । संजम पाले सुरमा । ज्योरा दिन दिन चढता माव ।
 गु० ४ । पांचम मुख बीराज्जारे । रुचसु सीनो आहार । पचलास
 कराया भी मुखेरे । सरब सत्यां लीयां धार । गु० ५ । म्हा भत पांच
 आसोचनेरे । सरसा प्यारु सीध । चोरासी लख बीवसुरे खमत
 लामबा कीध । गु० ७ । तीन फरख तीन खोगसुरे । त्याग्यां पाप
 अठार । सैगारी अससख सीयोरे । पचस्या चारु इ आहार । गु० ७
 कीतरीक रात गना पछेरे । पोठ्या मुखे समाव । वतखिख पाछा
 ठठीपा । एक समरख रो उदमाव । गु० ८ । मोरख दोपरे आस
 रेरे । मजन कीयो भरपूर । पंचपदाने बंदखारे । स्वमुख दीनीसुर ।
 गु० ९ । पाक गया बेठा धरारे । पोठ्या पाकली रात । मनमां
 माला फेरता । ज्योरो बीसवा उपर हात । गु० १ । ध्यान मुकल
 मन ध्यापनेरे । पाप पूज प्रजास । निज आतम नीरमल करी ।
 संपूरख पंचमी डाल । गु० ११ ।

हाल वटी । दयारखमिचो बाजीपो । भागो २ नरनार ए
 देसी । तीजी बार उपनी हो । पुखीया बाय नीपेद । सुवाचो २
 पूजरा । एक संघारसी उमेद हो । गरखीजी गुख सागरा ।
 आकड़ी । १ । पार २ ज्ञान पूछीयो हो । तीन हांकरा भास्य ।
 संघारो करत आपन । व सरब सीज्यो मममां हो । गु० २ ।

तेरे सत्यांरी साखसु । मनमांए सेठी धार । त्याग कराया जडावजी
हो । जाय जीव चोव्यारहो । गु० ३ । पुष नक्षत्र तिथ पंचमी हो ।
सिध जोग गरुवार । मुध प्रणामा सरधीयो हो । संधारो चोव्यार
। गु० ४ । सरणा च्याग सुणावीया । सलेखणारो पाठ । पर-
भाथे पूज पधारीया हो । नर नारच्यांरा ठाठ हो । गु. ५ । त्याग
वेराग हूवा गणा हो । खद कुसील चोव्यार । रंभाजी मोटा सती
हो । कर दीयो खेवो पार हो । गु. ६ । आलोइ नोंदी नीसल
थया हो । अष्ट पोर चोव्यार । सधारो पाल्यो सुरमां । ज्यारे टीसे
अलप ससार । गु. ७ । पोम करसन छट सुक्रने हो । चोथा पोर
मजार । सुरगत जाए वीराजीया । जठ वरत्या जे जेकार हो ।
गु. ८ । श्रावग वरग मैला हुवा हो । खरचे होडा होड । निहरण
कीधो मरीरनो हो । पूरथा मनरा कोड हो । गु. ९ । गरस एक-
तालीस वीचरीया हो । नव वरस थिर वास । वावीस वरस घरमें
रह्या । सजम पाल्यो वरम पचास हो । गु. १० । बोतेर वरसारो
सरय आउखो हो । भोगव्या पुन रसाल । जीन मारग जोर दीपा-
वीयो । माने गीरह खटक जिम माले हो । गु. ११ । गुण गुर-
णीजीमे छे घणा हो । मो मुख रमना एक । पार कीसी बिदे
पामीए हो । नही कबिता गीवेक हो । गु. १२ । पूज मिने प्रसादसुं
हो । सकल फली मुज आय । गुण गुरणीजीरा मन वस्या हो ।
ज्यूं फूल बीच वाम हो । ग. १३ । अरुमर पद हीणो कयो हो ।
रस्व दिरग कोइ पिरुव । ते मुन मीळ्यामी दुकडं हो । कवि जीन
कीजो सुध हो । ग १४ । उडलुमे गुण जोडीया हो । बोत हूवा
प्रसीध । पुख नक्षत्र श्रद वीजने हो । सिध जोग सपूर्ण कीध हो ।

कलस । पूज रतन समदाम्पाए । बडा २ हुआ म्हासती ।
 पाटोपर भी पाट दीपे । कलमात्रि इक्षी रति । ६ । १ । तस पाट
 बीजे देख रीति चंदूजी चंदा समा । तसपाट तीजे रामफरजी ।
 तप स्य में हुआ सुरमा । ७ । २ । तस पाए बंदूकर्म निकंदू ।
 रमाजी मोटा सती । आप पोते पाट पोथे । प्रसंस मोटा बती ।
 प्र०३ । छट डास बारु राग पाठ । सामंजता बहु रस है ।
 प्रसत् भी गुरुदेवजी को । कवि जिन दीजो अस है । ४ ।
 समत भी १६ स कड़ीए । बरस बत्ती ४६ स है । ये कर बोड
 बडाव बपि । गरबी बिरी गुण रास है । २ । ५ ।

आत्म निंदयारी ढाल लीखते

देसी भरतजिरी छे । देव नमू आरिइतने । गरु गिरवा
 भीसाप । पर्म केवलीको माखीयो । मैतो समस्ति रतन व साद
 जिरइला । तूतो अवन फरीजे जेयना । १ । आद रयो तीरजंघमें ।
 पासठ साख बीजार । तप पावर केद अखमें । तूतो ममीयो अन
 तीवार । जि० पारो इख आख एक केवली । २ । कर्म गस्या ।
 इछबो हुबो । इंद्री पाद बोए । बे इंद्री से इंद्री चोंद्री । पारी
 अनंत पुन्याद बोए । जि० तूतो कास संख्याता तिहा रयो । ३ ।
 असंती तिरबंघ पिब हुबो । इंद्री सादी पब । पवदे ठीकसा मीन
 छरा । बठे सख नहीं पायो रंघ । जि तूतो मरमरने उपज्यो
 तिहा । ४ । संती बलपर आद दे । उपज्यो म्हेमाप । सीठ उसन
 परबसप्यो । सही भूख तिरखा अमाप । जि० पारी गरज सर नहीं
 प्राखीपा । ५ । म्यान रहत अम्यानमें । बठे सही बेदना पोर । जि
 कोद नासख नसेगी नहीं । ६ । प्रमाधामी देस्ता । ज्यारी पनरे । अख

मार देवे एक जीवने । वेतो करे अनंती घात । जि० तूतो पल
सागर तड मही । ७ । तिरर पून्याड प्रगट्टी । देव हूयो सुभ जोग ।
खमाए खमा करे देयता । जठ पाय्या नवल भोग । जि. तोऽ तिर-
पत नही हूयो जियडो । ८ । भोग अग्र लोडने । भूगंतो मनमांए ।
मरण लीयो परम पणे । उपन्यो देम अनाज मांए । जी. जठे
पुन पाप जाणे नही । ९ । मदिरा माय भक्षण कीया । खाया
आधी गत । पीटा न जाणी पारकी । जल करी पचंद्रीनी घात ।
जी. थारे दया दील व्यापी नहीं । १० । सास भरी लांच लेएने ।
दीना अछना आल मरम मोमा प्रकामीया । परने बोली माठी
घाल । जी तूतो नीया कीधी पारकी । ११ । दगो करी धन
चोरीयो । परपुरुषांस प्यार । थापण गप्पी पारकी । थारे समता
न आड लीगा । जी. तु तो रुपट करी धन मेलीयो । १२ । कल्लो
करी जीव दूरीया । सेव्या कर्मादान । आरभ भेदन वावरो ।
नहीं दीनो मुपात्र दान । जी तु तो मान करी मदमे छक्यो । १३
पापे करी न गोपव्या । लोप्या गुरुना वैण । कर्म उदे जग
आसमी । थारे कोण न दीसे सेण । जी. सहू आप कीया फले
भोगमी । १४ । आत्म भाव न ओलव्या । सेव्या पाप अठार ।
कुगुरु कुदेव कुर्म म । गयो मनुष जनमारे हार । जी. थयो
चोरामीनो पावणो । १५ । चारु गतना चोक्रमे भमतो २ आए ।
आरज देम उत्तम कुले । जठे धर्म केवलीरो पाए । जी. तूतो
जोग लयो दम गोलगे । १६ । साग यणायो मावरो । गुणवीन
गुरुजन पाए । मोनने भग्मायीयो । तूतो धर्मी नाम धराय ।
जी. मारी गरज मरे नहीं भेखसु । १७ । काल अनता तू रुख्यो ।

अब पुद्गलारे साथ अब केडो कद आबसी, एक बाब भी बग-
नाथ । बी तू तो से सरबो अरीईतनी । १८ । आसु नीपा में
करी । पर करी ओ कोय । पूर कपट जो केसम्प्यो हो । मीक-
यामी दुकडंग मोय । बी बारे अरिईत सिभारी सासुसु । १८ ।
१६ से समत मसो । उपर चोपन सासु । सेपुरमांय बडाबजी ।
ओडी सुगतसु बाल रसाल । बी आलो मगसर बद एकदसी । २०

लावणी लीख्यते

पासु बीब बोत राजी । सेलतो कुमत संग बाजी । होय
रखो ममताको मोजी । सुमतकी सेज नहीं साजी । मीध्यामतमें
मुलतो । सास्या कुगुलका कन । मब मबमें मयकबसी । बारे
सुली कुगतकी खान । अ बेरा म्यान बीना । तेरा बन्म इक्ष्मारब
धर्म बीना । तेरा धर्म इक्ष्मारय मर्म बीना । प्राची नहीं पत्तो
मब पार गरुका हुकम बीने । आकडी । १ । बीब तू पुद्गलको
रसीयो । बगत बंजालमें कमीयो । कमको कष्ट नहीं पसीयो ।
धमसु हर बाय बसीयो । माया माया कर रड्यो । पय रयो रत
ओर दीन । कोडी कोडी ओढने । मेसो कीचो धन । अ बेरा ।
तेरा धन इक्ष्मारब दान बीने । तेरा दान इक्ष्मारय मान बीने ।
प्रा २ । कया तरी मोड बजी रंगी । पलकमेंगी सवा मंगी ।
धर्म बिन देय तेरी नंगी । निष्ठामें होय कोब संगी । तप अब
किरया बानरो । खाया ताजा माल । कर्म उदे अब आबसी ।
वारा नरक पडे इवाल । अचे तेरी देय अलूखी बेतना । तेरा
बेतन अलूखा दया बिना । प्रा ३ मयकौ बिया कया । पूर पर

वार और भाइ । खानेमें सब मेला थाइ । संकटमें होए कोण साही ।
तेरा कीया तूं भोग ले । मन कर आरद ध्यान । अवसरमें चेत्यो
नहीं । थारो गयो हीयाको ग्यान । अंधे, तेरा ग्यान इख्यारथ
भजन विने । तेरा भ. समज विने । प्रां. ४ । जुलम तुं न्होत किया
भाइ । जरासी जदगीमांइ । अब तुं चेत जागेला । देत हे सतगुरुजी
हेला । १६ में एकावने । फागण होली चोमास । जैपुरमांए
जडावजी । करी लावणी तास । अं. तेरा जन्म इख्यारथ धर्म
इख्यारथ धर्म विने । प्रां. ५ ।

सभाय लीख्यंते

देसी जिलारी छे । वारे वारे मति भटको हो । जिवांजिवो ।
आवो ग्यान घरमांए । सु० ग्यानी थाने कया समजाउं हो मना ।
आंकडी । १ । हिंसा परित्यागो हो । जि० । दान दया सुखदाय ।
मूर्ख० । २ । झुठमति भाखो हो । झुठारी दर जाय । सु० ३ । चोरी
मती कीजे हो । जि० । दोन्यु भव दुख दाए । मू० ४ । परनारीसुं
डरीए हो । जि० । पचामे पत जाए । सु० ५ । समता नहिं कीजे हो
जि० । समतारे घर आए । हटी० ६ । किरोध मान बूरो छे हो ।
जि० । कपट लोभ द्यो छोड । सु० ७ । रागधेग रुलावे हो । जि० । कल्लो
हो कियांपत जाए । मू० ८ । आल देणो सोरो हो । जि०
भूगत्या छूटको थाए । पा० ९ । पिसुन पराइ हो । जि० परै २ वाद
नहीं भाखे । सु० १० । रत अरत निवारो हो । जि० । माया
मिरखा नै दाखे । ११ । मीथ्या सल साले हो । जि० । समगत सेठी
राखे । अ० १२ । पाप अठारा खोटा हो । जि० । भटकासी भवमांए ।

मू० १३। पापेसु प्रप्यो हो । जि० ताम्पा छुट्को बाए । मू० १४
निज मन समझावे हो । जि० बेपुरमाए बडाव । मू० १५। एकवन
होली हो । जि० खोड करी घर पावे अ १६ ।

स्तवन होलीको

बेसी फगवाछी । होलीखेलोरे । हारे होली सुमतसु पित-
भाषी । हो १ । आ । सुमत गुफ्छी । करो पिपछरी । समबर
सीस मरो पाखी । हो २ । मन मिरवंग सुरत सारंगी । मधुर
२ गाबो दिन बाखी । हो ३ । नेम भमक्य दोए मजिरा । सरदा
होर करो प्राखी । हो ४ । म्यान गुलास । अवीर प्यानको ।
आवीर प्यानको । आठ करम करो पूस पाखी । हो ५ । स्तस्वार
फिरछी मेरी । चरघा चंग बजाबो म्यानी । हो ६ । एसो फग
खेलो मव प्राखी । सुखे सुख आबो निरबाखी । हो ७ । बेपुरमाए
बडाव करत हे । फगस बढ बढस बाखी । हो ८ ।

राग तेइज

मती होखोरे । हारे मती । नीर मसुम बीगडे । म १ ।
आछखी । नीरसु बीर अगत सब जिबे । नईत्रि सोग दुनीया
अरडे । मती २ । रूप गिरतना दाम सगत है । पाखी होल
घारो क्या बिगडे । मती ३ । गली गली में फिररे मटछो । पके
पडे वो बचा पकडे । मती ४ । माए सुखेरे घारी बेन सजत है ।
सीरडी तिम काँइ अरडे । म ५ । राख रतसु होलीरे खते

मिसटासुं देइ खरडे । म. ६ । धर्म ध्यानसुं सरम आवत हे ।
गाल गीतमें आगे अरडे । म. ७ । जीव असंख्या क्या जीन-
वरजी । चिन मरजादा कह रेडे । म. ८ । आण वैराग त्याग सुध
कीजे । नहीतर जम ले सीस कटे । मती. ६ । एकावन फागण
सुद तेरस । सुस करे तो कह अकडे । म. १० जैपुरमांए जडाव
कहत है । जीव दयासुं जन्म सुधरे । म. ११ ।

राग तेहीज

कीजो २ रे हारे कीजो २ रे । सुक्रत थारे संघ चाले । १ ।
आंकडी । धर्म करे पिण मरम न जाणे । कुलकी रुढलीवीजाले
की. २ । धर्मीसुं द्वेष पापीसुं प्रच्यो । ज्याने मारग कुण घाले ।
की. ३ । मात तात मुतलबका गरजी । मुखमें सीर सबी घाले ।
की. ४ । आयो अकेलो ने जासी अकेलो । पुन पाप थारे संग
चाले । की. ५ । सतगुरु सीख मानी नही मूर्ख । सो भव भव-
मांए साले । की. ६ । तरसत देखी परकी सायबी । अब तेरा जोर
नहीं चाले । की. ७ । जेपुरमांए जडाव कहत हे । खर्ची लायो
सो खा ले । की. ८ । एकावन फागण सुद पुनम । उत्तम गरु
मारग घाले । की. ९ ।

राग तेहीज

पीज्यो २ हारे पीजो २ रे । सुगण समतारा प्याला । १ ।
आंकडी । ममता डाकण बोत बुरी है । सब जगत खाया लाला
पी० । २ बालपणो हम खेल गमायो । जोवन में त्रियांका वाला ।

पी ३। बूढापे मगबत नहीं मजीयो। मूढामें फट रही सामना।
 पी० ४। देस प्रदेसमि फिरेरे मटक्यो। माग बिने नहीं मीछे
 गहसा। पी० ५। बनके कछ अनेक मूषा पछे। छोडेसो सिब
 सुख छेला। पी० ६। नरम्व पायो हू एल गमायो। आगे
 ब्याव कइ देसा। पी० ७। जेपुरमाण बडाव कहत है। प्रभू भत्र
 पार छतरमहसा। पी० ८।

राग तेहज

सीओ २ रे हारे सीओ २ रे। धर्म बनको छावो। सी०।
 भाकडी। १। छावो न सुटे चोर न छुटे। नहीं छागे राजसो
 दावो। सी० २। मार नहीं याको माडो न छागे। मन आवे
 न्यां जेबावो। सी० ३। गले नहीं बिरखा छुट जापा। फले पयो
 बिरदामें बालो। सी० ४। कठ न आवे कीडा न सावे। हसी
 पडे न्या पर बावो। सी० ५। बांर दीपां कितभर नहीं छूटे।
 दान देबखको राखो जावो। सी० ६। १६ स एकजन बरसे।
 कसख सुद पुनम गावो। सी० ७। जपुरमाण बडाव कहत है।
 सुखे २ सीवपुर जावो। सी०।

राग तेहीज

दीओ २ र हां २ दीओ २ रे। सुपात्र दान सदा। दी० १।
 भाकडी। दानसु मान बदे इख जगमें। गूबीजन नील कीरत
 गावे। दी० १। सेठ बनो भी हंसकरजी। सासम्य सुख सीयो
 सगबा। दी० २। संख राजा मेपरव अपकंठी। गोत बिरयकर

बांध्यो सुगणा । दी० ४ । मान बडाइमें क्या धन खोवे । दानमें
कर बरसावो सुगणा । दी० ५ दान दीया थारो धन नहीं खुटे ।
खेत चीणा जीम जाणो सुगणा । दी० ६ । पात्र कूपात्र देखने
दीजे । उत्तम फल लागे सुगणा । दी० ७ । जस कीरत तांइ धन
खरचे । भावे ज्यांबलजाव सुगणा । दी. ८ । १६ स एकावन
जेपुर । फागण सुद पूनम सुगणा । दी० ९ । हित उपदेश जडाव
दीयो इम । नर भव सफल करो सुगणा । दीजो दीजोरे । १० ।

राग तेहीज

मत खावो रे । हारे मत खावो रे । भवक कांदो मूलो । १ ।
म. । आकडी । जीव अनता क्या जीनवरजी । परभवको तूं डर
भूल्यो । म. २ । फाड चीर आचार बणावे । मांए वोत भरे लूणो ।
म. ३ । अंतकाय सखाय मणा बढ । सोगनकर मनमें फुल्यो ।
म. ४ । बेगण खाय भणीढो बणावे । पाप उदे जब क्यां सुलो ।
म. ५ । धर्मी बाजे खाता नहीं लाजे । ज्यारे सिर पडसी धूलो ।
म. ६ । कादो बादो खाय सरावे । भव २ में होसी लूलो । म. ७ ।
अभख अनत क्या जीवनरजी । सुणतां २ कह भूलो । म. ८ ।
आणे बेराग त्याग सुध कीना । देख देख मन क्यूं डूलो । म.
९ । वास बूरी याको नाम निकामो । खाय खाय चीत क्या
फूलो । म. १० । १६ सें एकावन जेपुर । फागुण शुद उडे
धूलो । म. । कहत जडाव जमीकद त्यागो । नहीं तो निगोदमांए
भूलो । म. १२ । हित उपदेश सुणी भव जीवा । हीर दारी खीड-
की खोलो । म. १३ ।

राग तेहीज

मथ बायो हरि मती आखोरे । मत्रक क्यया मेरी । म १ ।
 आकडी । मेरी २ करता खोल दुख पाया । या कत्र ही नहीं हे
 तेरी । म २ । क्यया रंग फलंग सरीखी । उड़ता नहीं लागे देरी
 म ३ । इससे मोए करे सो मूर्ख । खियमें होए मतम देरी म ४ ।
 इयमें राखनाथ मत्र २ में । खोरासी में दी फेरी म ५ । होए
 निसक कर्म तु बांधे । सुगतथ में क्यया न्यारी । म ६ । पूगी
 सुदत रहस नहीं पावे । बीषमें सम से घरी । म ७ । जब पिछ-
 तासी झुड़ झुड़ासी । नासखन नहीं हे सेरी । म ८ । तप बप
 सार बहास क्यड से तो इज्जत रहसी तेरी । म ९ । १६ से
 एककन खेपुर । हित सीलामस हे मेरी । म १० ।

राग तेहीज

मथ पीबोर हरि मथ पीबोरे । तमास्तु खनम बिगडे म ।
 आकडी । १ । हस्य बसरबारोधुकरे क्यतनो । भरड उवासी आबे
 सुगथा । म २ । रूप गयो पारा दांत छाडरो । पमक्य पूक
 पडे सुगथा । म ३ । नाकबरे पसा बीसन बीगाडे । डाडी मूख
 मरे सुगथा । म ४ । सुप करे तु साब संतकरी । परकी पेंठ पीबे
 सुगथा । म ५ । दास कट बारो पटत कापदो । बदन बूरो
 बासे सुगथा । म ६ । बहट बनार हजार मीनपमें । ह कने दुरडे
 सुगथा । म ७ । तनक तमास्तु मागे मगता जिम । साब सरम
 नहीं आबे सुगथा । म ८ । इस मत्रमें इतना अक्षयुख । पंचामें

पत जावे सुगणा । म. ६ । मान क्यो तु छोड तमाखु । नही
तम नरक पडे सुगणा । म. १० । अगन वरण कर हुको पासी ।
पीछे घणो पीसतावे सुगणा । म. ११ । १६ सें एकावन जेपुर ।
फागण सुद चउदस सुगणा । १२ । हित उपदेस जडाव दीयो
इम । सुण २ त्याग करो सुगणा । म. १३ । इति संपूर्ण ।

ढाल चंदरी

रे रगीला सुडा । सतगुरु दे छे हेला तुं समज २ नै गेला ।
दिल सुं वीचारोने पेलारे । तीरो भव प्राणी । संसार समुद्र
जाणी । ती० । १ । आकड़ी । परभव निस्ते जाणो । थे लीज्यो
धर्मको नाणो । आगे नहीं नाणोरे । ती० २ । मात पिता पर-
वारो । सब हे मुतलब का यारो । दुखमें कोई नहीं थारो रे ।
३ । सु सवरत किया मोटा । जम जोर पडयो किया खोटा । तू
खाय नरक सोटा रे । ति० ४ । पाततणो वोपारी । तुं कर्म
कमाया भारी । सतगुरु की सीख न धारी रे । ती० ५ । इद्वारे
वस पडियो । तु भव भवमे रडबडीयो । थारो आतम कार्ज नै
सरियो रे । ती० ६ । वेम वणावे भारी । तु तके पराइ नारी ।
थे घर की नार बिसारी रे । ती० ७ । भाग तमाखु खावे । तूं
घर वेस्यारे जावे । थने लाज सम नहीं आवे रे । ती० ८ । राजा
जाणो तो डडे । खर चाढे न मिर मु डे । थने न्यात आतमे माडे
रे । ती० ९ । दया जरा नहीं तेरे । तुं नवकरवाली फेरे । तुं
माल वीराणा हरे रे । ती० १० । सतगुरु ग्यान सुणावे । जठ
भुक भुक भोला खावे । वाता मे रात गमावे रे । ती० ११ ।

आतम काप्र सीगाडे । तू पाव पताया नबेडे । तू पडयो कुतम के
 डेरेरे । ती १२ । कुगुरुको मरमायो । बने हिंसा धर्म बतयो ।
 तु छुब समगत नहीं पायोरे । १३ । अब के अवसर आयो तु ।
 उत्तम नर मव पायो । बाने सतगुरु धर्म सथायोरे । १४ । कागस
 शुद्ध १६ से । जेपुरमें बीसबा बीस । कांइ बडाव दीयो उपदेसेरे ।

ढाल

कटो २ करमकी बेडी । बागो २ रे मूर्ख मन मेरा । क्या
 सुता होए सचेरारे । बा आंकडी १ । मजो नाम । प्रभूविष्णु
 गेहरा जियसु टले मव फेरारे । बा २ । तू बाखे एह पर मेरा ।
 पिब हो ए अंगल में डेरारे । बा ३ । काया कपटस ठग २
 छाबे । नितछ करे बनेरारे । बा ४ । धन धन करतो फिरे
 मरक्यो । पिब बिलसे कोइ अनेरारे । बा ५ । कुतम सहु सुत-
 सब का गरबी । अर्तसमे नहीं तेरारे । बा ६ । आयो अपलो न
 जासी एकलो । मेन मिथ्यात अ डेरारे । बा ७ । फेव सुधी बानन
 में बरसे । तीजे बडी गख पोतरारे बा ८ । जेपुरमाए बडाव कइत
 हे । मान क्या गुरु केरारे । बा ९ ।

राग तेहीज

लीज्यो २ र सगरुख सरखा । न्यो बाने मयबल खिरखारे
 । ली । आ । १ राय संचेती पापी प्रदसी । मेठ दीया सन्म मर
 खारे । ली २ । बीड फीहारी जोर बत्तायती । सुगरतमें अक-
 तरखारे । ली ३ । मव कबर बनोरिखराया । स्वारथ सीध अक-

तरणारे । लीज्यो० ४ । साल कवरने रिख अवंतो । आंतमें
कारज करणारे । ली० ५ । इम अनेक गया सीवतमें । ज्यांरा
सुत्रमें कीया निरणारे । ली० ६ । जेपुरमांए जडाव कहत हे ।
अव उतम कार्ज कारणारे । ली० ७ ।

राग तेहीज

रहो २ रे जगतसुं न्यारा । ज्यो चावो नीसतारारे । रहो.
आंकणी । १ । बैह रही जन्म मरण की धारा । डुब रया संसारारे
। रहो० २ । आढी रातका पुत्र जायो । सरख्या सहु प्रवारारे ।
रहो. ३ फजर भइ जब गुजर गया है । हाय २ करे सारारे । रहो.
४ । परायो निरख हरखने मुंद्र । माने सुख अपारारे । रहो. ०
५ । आयो काल कपट ले जासी । कोई न राखण हारारे । रहो.
६ । चार दीनाकी है चतुरा । छेवट घोर अंधारारे । रहो. ७ ।
जेपुर रमाए जडाव कहत है । अय तूं जित जमारारे । रहो. ८ ।
१६ सपावन मे वरसे । चेतमास उजियालारे । रहो. ९ ।
वृत्ति सपूर्ण ।

देखो पयपाडारी या वारामासीरी छे । पहेलो आलस करम
काठीयो । करे ग्यान की घात । उदम नही किण वातरो सरे ।
पडयो ग्हे दीन रात । पमु मरीखी ओपमासरे । दीनी ग्रीभुवन
नाथजी । तुम समझो प्राणी । बोहत बुरा छे तेरा काठीया । सुण
मतगुरु प्राणी । दर तजोनी तेरे काटीया । आंकणी । १ । काया
माया वैन भागज्या । मात पिता मतभिगता । म्हो मायामें पस रया
मरे । नहीं निगणरी रात । ए मय हे मतलब का गरजी । एक न

बाले सापधी । तुम २ । अकड़ लकड़ सारखा सरे । अब क्या
 अवनीत । लोड बढाइनगीस सरे । नहीं गुरु प्रीत । लोक सठ
 फिट २ करे सरे । प्रमो होय कबितजी । तु ३ दसमो कलकर्म
 क्यो मरे । अपनित अहर समान । बचन बोले असुवावयसरे ।
 गरु नहीं दवे ग्यान । फूया कनरी कूकरी सरे । केय न देवे मान
 बी । तु ४ । मीनप तिरबंष ने देस्तासरे । अपनित दुस्तिया होय ।
 गल्यारगबानी ओपमा सरे दीनी सुत्र जोय । भूख श्रीपा गब्बी
 मोमब सर । मव २ दुस्तीया होय बी । तु ५ । बोले पात फेरे
 नहीं सरे बीगता बाइसी तोल । प्रमादी पापी चीयोमरे । गमेगखी
 रंग रोल । तप सधमरी खप नहीं सरे । हारो जन्म भमोल बी ।
 तु ६ । कोधी कुकरनी परे सर । भूस भूम सामा होय । आप
 बले परन संतावे । लोक हमबाइ होय । तप संजम मव कोच
 सु सरे । बल जल मसमी होयबी । तु ७ । रोग फर तन जोअरो
 सरे । कया होय निश्चम । तप सजम न कर सके सरे । रुचे
 नहीं अनपान । खाट पछमे टसक करे सरे । गरफने देवे
 कनबी । तु ८ । जम कीरत के करब सरे । खरचे घर का दाम
 । उल्टी अप कीरत हुवेसरे । लोक करे अपमान । साठमो अप-
 जम कर्म करीयो । मास्यो बिरबमान बी । तु ९ । म्हाज्यो मत
 जोडे नहीं सेर । लीनी टेक सममाय । सठन्या फठन्या ने हुवे
 सरे । इस्तने दग लगाय । पकज्यो पूछ गया तबो सरे । सुख
 हु साता खाय बी । तु १० । हरसी बल सुख ज्यो सिद्धम
 । मै लागे सिब बार । गुरु संगत न कर सके सरे । आबे संक

अपार । आख्यां सरखा नवी । ज्यारे काजलरो सिणधार जी ।
 तुं० ११ । सुत्र चारीत्र अंतरायसुं । धर्म न आवे दाय । संका-
 संकीसुं करे सरे । मौजी नही भेदाय । काली कामल रंग कसु-
 मल । नहीं वदे तिण मांयजी । तुं० १२ । मन चंचल थिर नै
 रहे सरे । व्यारुं दिस भोला खाय । सतगुरु वाणी वागरे सरे ।
 सुणे न चित लगाय । मन डीगे ज्युं काया डीगे तो । जडा मूल
 सु जायजी । तुं० १३ । भरी समा में बैठ अगाडी । भुक भूक
 भोला खाय । पूछयां साच न कहे । हमारी आख्या नहीं गुलाय
 । वाणी जेलु आपरी सरे । लटका करुं मुनिरायजी । तुं० १४ ।
 समदाणी कर्म काठीयो सरे । कयो तेरमो जाण । धर्म ध्यान नै
 कर सर सके । लग रड ताणो तांण । मोय तंतूस बांधीयं सरे ।
 छुटा पढ निरवाणजी । तुं० १५ । १६ सें समत भलो सरे ।
 वरस एकावन साल । चैत कृसन पक्ष अष्टमी सरे । करे काठीया
 नास । जेपुरमांए जडावजीम रे । करी लावणी तासजी । तुं० १६॥

देसी । आज हींदवाणी सुरज उगीयो । ए राग । सात बीमन
 मती सेवज्यो । बीसनारी नही प्रतीत । सुगण नर हो । विसन
 विगूथा मानवी । कडक हुवा फजीत । सुगण० । सात० १ ।
 आकडी । पडुरा यनापुत्र ते पडव पाच सुजाणो । सुजाणो स० ।
 जुवे हारी द्रोपदा । पडी गणी राजमें हाणो । सु० । सा० २ मांस
 रेवंती दुख मयो । म्हा मतकजीरी नार । सु० मंस अहारी पापीया
 खावे नरकमे मार । सु० सा० ३ । मद छकीया वकीया गण ।
 नादव कवर मुजाण । सु० तपसी दोपायण खीजव्यो । दुवारका

बाली आयये । सु० सा ४ । नरक गया पखा आवसी । बेस्यासु
करे प्रसीत । सु० परनारी प्रसगधी । राखस हुयो फजीत । सु०
सा ५ । हिंसा पधंद्री । जीवनी नरक ले आवे ताथ । सु० प्यार
बोल करे जीवने । हुव सुम गतरी इच्छ । सु० सा ६ । चोरी
पीरावे छाछने । मार मरावे सुख । सु० मसतक कद सुसी दीयो ।
चोरनो बेली कुख । सु । सा० ७ । एक एक दुखीया हुवा ।
साहु सेवे कोए । सु० । ज्यारा इवाछ होसी पुरा । प्रतक सीन्यो
बोए । सु० सा० ८ । बाबन साल बेसाखमें । बद बसमी सुकर
बार । सु० जेपुरमाए जडाबजी । कड़े छोडोनी बिसन बीकर ।
सु सा ६ ।

राग मोत्यारो गजरो

लखचोरासीमें ममीयो । बठ कल अनता छलीयो । नव पाप्नी
फिर आयो । पुन जोग नर मव पायो । सुख मव प्राप्ती । सम
बावे सुमत सयासी । भा १ । आनन बसमें नारी । सीयो उदम
हुन अस्तारी । दीध आयु देह नीरोगी । पूरी इ इं सतगुरुजीरो
जोगो । सु २ । सुख बोलइयो सुलम । पिख सरदा परम दुलम
विरत करयो नहीं आव । जीर नर मव अकल गमाव । सु ३ ।
ए इस बोलरो ताखो । प्राप्ती बार २ मती नाखो । इम आखी
कीजो भरमे । ज्यो राखी आवो सरमे । सु० ४ । कूमठ कूपात्र
नारी । घान लाग प्राख सं प्यारी । तिखसु कीयो पर बासो ।
बाप्ता मव मव दुख पामो । सु ५ । या छे नार पतारी । कद
जगीया पुरुष इजारी । इलको संग निबारो । बाप्ता सफल करो

अवतारो । सु. ६ । १६ सें ४२ ली सहर आ जीयापुर रसाली ।
दीयो जडाव लवलेसो । निज आत्मने उपदेसो । सु. ७ ।

राग : भांगरा गीतनी

दीनकोर धंधो कर पर नींधा । सुतो रैण जगावे । मोरा लाल
नींदडली खारी लागे ए भजनमे नींदडली । परी जाए वेरण यासुं
नींदडली । आकडी । १ । नींद लेवान प्राणी कुमत बूलावे । थाने
भर भर प्याला पावे । मो. नी. २ । करम कथा के डींग नहीं जावे
। माने भणता गुणता सतावे । मो. नी. ३ । राग रंग में दूरी दूरी
जावे । मारा भजनामे भग पडावे । मो. नी. ४ । ग्यान ध्यानमें
आलस आवे । जठ झुक झुक भोला खावे । मो. ५ । चोर चुगल
भोगी नें रोगी । जठ जाइ २ वीगर बुलाइ । मो. नी. ६ । द्रव
निद्रामु द्रव गमावे । वे तोडण भव में पिमतावे । मो. नी. ७ ।
भाव निद्रामे जे नर सुता । थे तो खराये बिगूता । मो. ८ । कहत
जडाव यातो वोत टगारी । थे तो राखीज्यो हुसीयारी । मो. नी.
९ । अम थासु निद्रा कोल करुं । थू तो मारे नेडी २ मती आजे
। मो १० । समत १६ मे बरस एकावन । जयपुर सेखे वालो ।
मो. नी. ११ । नींद निवार सुणो भव प्राणी । भांगरी राग
रमलो । मो नी. १२ ।

ढाल

चेतन चेतोरे चे । दम बोल जगतमे मुसकल मीलीयारे
काया न्यारीरे । का. किम चेतन काया कीनी प्यारीरे । का.

आंकड़ी । १ निम दिन तु इसके संग मीनो । पूखी खोए सारीरे
। गढ़ गढ़ अब राख रह । सुख सीउ हमारीर । क्य २ । सुमत
सखी कर बोड़ क्यत है । कर्मामु एक तारीर । सुगत म्दसरी
खल बगठ छ सुख भारीर । क्य ३ । रात दिवस कुमती घर
बेठो । खेले पासा सारीरे । मरा बजरा भाडो पाइयो । कुमत
छाहीरे । क्य ४ । इस क्यपामु ममता करने । दुग्या बहु नर
नारीरे । अहाव कहे तप अप करो । सिन रमखी त्यारीरे । क्य ५

ढाल

राम । मोन्यारो गझरो भूली । कर मोड़ी सीस नमाठ ।
नीत गोत मझीरा गुण गाउ । अगनभूतो जिन दूता । नील उठ
करो न्या पूजा । सुख भव प्राणी । गसपर बंद गुलबारी ।
आंकड़ी । १ । पाप मुनी सगदछ । ए तीनुइ सगा माइ । बीगठ
मुनीसरबंदो । मर मबना पाप निकड़ो । सु २ । सभमा घर्मना
दत्ता । मंडी मोरी अगमिराता । अक पीठात्री मारा मबसागर
तरसहारा । स ३ । अकल २ सुख पाया । मेतारज सुगत
सीपाया । प्रमाव प्रमबन डरीया । न्यारा आत्म करअ सरीया
। सु ४ । सगस्तइ सुगत सीपाया । नित प्रशसु
न्यारा पाया । एकअन सुख नामो । जेपुरमें होली खोमासो ।
सु ५ । बारस सुख पलमायो । अहावत्री सीम नमायो । मैं
छ दास तुमारी । सुख लीन्यो अरम हमारी सु ६ ।

लावणी लीखंते

चाल गोपीचंद्रा ख्यालरी । पखवाडो ली, एकम जीव तुं
 एकलो सरे । बांधे कर्म कठोर । परभो चिंता बावरोस । थाने
 माणस कहू कठोर । अशुभ उदे जव आवसी । तुं कांड करेला
 जोर । जीव थारो अफल जनमारो जावसो पाळो नहीं आवसी ।
 कुछ सुक्रत कर ले सफल दीयाडो लेखे लागसी । आं० २ ।
 बीज कहे सुण बापडासरे । वेठो किम नीरधार । अवसर वीत्यो
 जात हे सरे । चेते क्यु नी गीधार । बंधी भूठी आवीयो सरे ।
 जासी हाथ पसार । जी० ३ । तीज कहे तू त्रिजा प्राणी । वेठ
 धर्म की जाज । ग्यान दरसण चारीत्र पाठीया खेवे गुरु माराज ।
 भवजल पार उतार सीस । बाने मीले मुगतको राज । जी० ४ ।
 चौथ कहे चारुं गत मांण । रूख्यो अनंती वार । पुन सजोगे
 पामीयो सरे । मानवरो अवतार । दान सील तप भावनास ।
 कोइ लावो लीज्यो लार । जी० ५ । पांचम कहे सुण प्राणीयासरे
 । पंच म्हाव्रत धार । पंच इंद्रिने बस करोसरे । पच प्रमाद
 निवार । पच प्रमेस्टी देवनोसरे । ध्यान धरो सुखकार । जी०
 ६ । छट कहे छक्रायने मरे । राखो प्राण समान । पुत्र सरीखी
 ओपमासरे दीनी श्री वृद्धमान । छ परबी पाप्म करोस । केड देवो
 सुपात्र दान । जी० ७ । सातम कहे सत राखज्यो सरे । सत
 छोडे पत जाय । मतसु रीजे देवता सरे मतसु रीजे राय । सतसुं
 गुरुजी गजी हुवे मरे । मत मुगत ले जाए । जी० ८ । आठम
 आतम बमकरेसरे । धोवो मिथ्या मेल । आठ मद अलगा करो

सरे । ग्वान गरीबी केत । आठ कर्म खपावने सरे । करो सुगतस्त्री
सहस्र । बी० ६ । नम कह नव बोलनो सरे । निपुन करो
निरधार । बाखपणे समगत सहसरे । बाय अज्ञान भ भार । तप
संजम सफला दुबसरे । समगती बलीभार । बी० १० । दसम
कहे दुसमरा ठजोमरे मजो प्रमेस्त्री पंच । या समरा पातक जरे
सरे । रहन कुमया रंज । ध्यान धरो एक धीतसु फइ तजो सरब
प्रपंच । बी० ११ । इमारस रस पी वीएसरे । जीनबाबी अवधार
। अ ग इमारस मलासरे । मारे ठपंग बीभार । मूल छेवमाण
कीयो सरे । बायोरो रिस्वार । बी० १२ । बारस कहे तु बाबलो
सरे । जूतो परके भार । कम करे तु एकजो सरे । खानखमै
सब स्यार । सहे नरक में एकजोमरे । समदूतप्री मार । बी०
१३ । तेरस कहे तु तत्पर होजा । आगे नहीं अवसाथ । कल
सीराख आबीयोसरे । लेंचे तीर कबाख । ठक ठक मारे बीवनेसरे
। पलक पलक में बाख । बी० १४ । अपदम कहे चेते नहीं सरे
मूज्यो फिरे गीवार । प्यार दीनाफी खानसीसरे । सेकट घोर
अधार । म्यान दोषक पट्टे नहीं सर । दुबो कसलीवार । बी०
१५ । पुनम पल पुरो दुबो सरे । करता छुटी जोड । गइ गइ सो
आखसो सरे । अइही दोडो दोड । पुनम प्रमाथ सीखा बज्योसरे
। पावो आछी डोर । बी० १६ । पाप धर्म दिन सारखसरे ।
बीज्यो आबे कल । योग मीज्यो दस बोलनोसरे । बीज्यो धम
बीभार । पायी पब पपने मुपासरे । धमी दुवा निहास । बी० १७
। १८ सें बरस बावनसरे । जेफूर सेखे कल । जोड कर जइख

जीसरे । पख्वाडारी ढाल । बडमास मढनो किमन पख्खे सातम
मंगलवार । जी० १८ ।

राग पणियारिकी

श्री मंधीर जिन सायना । जिनवरजि हो । अरज करुं कर
जोड । जिनवरजि । आरुडी । १ । सेवक जाणी आपरो । जि०
पूरो हमारी कोड । २ । खेव पिडेह गिगजिया । जि० आडा ममद
अथाग । जि० ३ । निखमी मारग छे गणो । जि० नहीं आवणरो
थाग । जि० ४ । निध्याधर मित्री नही । जिन ल्यावे आप हजूर
। जि० ५ । मानीज्यो मारी वनणा । जि० पोह उगंते सुर । जि०
६ । दुखमी आरो पचवो । जि० लीयो भरतमे वाम । जि० ७ ।
ओर कछु मागू नहीं । जि० राखो तुमारी दास । जि० ८ ।
आपो आपरा दामरी । जि० मय कोड पूरे आस । जि० ९ ।
हु मरणो लीयो आपरो । जि० करस्यो केम नीराम । जि० १०
ओगणीमे एकावने । जि० जेपुर होली चोमास । ११ । वे कर
जोड जडावजि । जि० एम करे अगदाम जि० १२ ।

चोइसी पद ली०

राग रामे पधारीवाजी वामणः । रिखव अजित सभव नमू ।
अभिनण जिनदेव । मुमत पढम सुवासजि । चंदतणी करुं सेव ।
भवक जिन भावसु ाढो जिन चोत्रीम । १ । आकणी । सुवध
सीतल श्री हमजि । वाम पुज भगवत । वीमल अणत धर्म सतजि
। जग वरतायो मत । म० २ । कु थ अरी मल्ली नाथजि । मुनीसो
वगत जिनराय । नमी नेम श्री पाम वीरने । बद् सीस तमाय

। मव० ३ । बिहरमान गवधर सनी । कपली प्रशक कोड ।
 जेपुर मांए जडावजि । बंदे ब कर जोड । म० ४ ।
 रत्न । करहा चास्ते उठावलो । पगळे भाइ गवध गोर । रिखव अजित
 समव भलाजि । सुख अमीननख भरदास । सुमठ पदमसुपासजि ।
 कांइ चंद कीयो प्रकासजि । मार दील वसीया चौबीसजी । न्यांरे
 परब नमास सीस । कांइडी । १ । सुवध संतिल भी हंसजी ।
 कांइ वासपुत्र भिनराय । बीमल अथाठ परम संतजि । कांइ सत
 करी अगमांए । जि २ । कुष अरी मन्लीनाबजि । कांइ
 दुनीसोअत सुखकार । नेमीसर रीठनेमजि । न्यांने ठारी राखल
 नार । जि० ३ । पास २ सारखाजि । सोइ फरया कंपन होए ।
 ए अचिकछ आप्तीजि बीन फम्पां ठारो माण । जि० ४ । बिरधमान
 चौबीसबाजि कांइ सोमहरा सीरदार । सरख आया न्यांने ठारी-
 याजी । माने मूल गया अितार । जि ५ । अब जाएया प्रम
 आपनेजि । में जोडया आस अवाल । सरखो छीनो आपरोजी ।
 माने ठारो बीन दयास । जि ६ । पउदस बाबन हुवाजि० कांइ
 गवधर भिन चौबीस । बद् बे कर जोडने । बी कांइ बिहरमान
 भिन बीस । जी ७ । १६ से एकरवने बी कांइ । सेपुर सेखे
 बल । बेत महीनो बूधसुजी कांइ । जोडी जडावजी डाल । जी०
 ८ । इति संपूर्ण ।

देसी मन मोये डा अनेमर । बे छो मारा नाय । में डा
 बारा दाम । ए देसी । रिखवइत देवानदा । वीरबीनेसर बंदवा
 । मवक बीन । बेठारे एक रव मजार । चाम्पार एम बजार । श्री

जीनजीसुं मारो मन मोयोरे । १ । अतसें देखी उतरधां । सचीत
द्रव अलगा करधां । भव० चाल्यारे बेहु पाय वीहार । नरखेरे
श्री जिन दीदार । श्री० २ । समो सरणमें आयने । नीचो सीस
नमायने । भव० । बंधारे जिन मान ज मोड । उभा रे तिहा बे
कर जोड । श्री० ३ । मणी पीठका सुरे करे । फिटकसीधासण
तीणपरे । भ० । वेठारे श्री वीर जीणंद । मुखडोरे जाणे पूनमचद
। श्री० ४ । घाज अवाज सुणी मोरज्युं । हरक्यां चंद चकोर
ज्युं । भव० नीरखेरेये । भर २ नेण । मीलीयारे थे साचा सेण ।
श्री० ५ । फल फूलत थइ देयमें । पानो आयो सथानमें । भ०
भरवारे वली लाग्यो दूध । भूली रेया सगली सूध । श्री० ६ ।
गोतम इचरज पायने । नीचो सीस नवायने । भ० बाइ रेया हम
कीम थाय । सासोजी मारो देवो मीटाय । श्री० ७ । अंगजात हूं
एहनो । काम बूरो सनेयनो । भ० जनम्योरे हु परघर जाय । पूरव-
रेहण बाधी अतराय । श्री० ८ । वीर बचन श्रवणे सुणी । मनमें
अकुलाणी गणी । भ० रोवेरेया भर २ नेण । मीलीयारे मन
माचासेण । श्री० ९ । अब सरणो भगवंतरो । कदय न आवे
अतरो । भ० करस्युरे हिव श्री जीन साथ । सुणसीरे सुख दुख
धात । श्री० १० । पीता परम सुख पायने । उवासी सन मायने ।
भ० लीनोरे बेहु संजम भार । तप कररे गया मुगतमेंकार । श्री०
११ । जननी बछल वीरजी । पु छायी भव तीरजी । भ. पालीरे ज्यां
पूरण प्रीत । आछेरे उत्तमनी रीत । श्री० १२ । १६ सें पचालमे
पालीपीठ रमालमे । भ. धन २ रे आ वीरनी मात । जोड़ेरे
जडावजी हाथ । श्री. १३ ।

सजाय लीख्यते

झोडो झोडोरे कपटकी कपटणी । बोली २ रे समन सत बाणी ।
 गल्लो बुजी अगवासीरे । आंकडी । १ । समझितकी सापी
 सेनासी । सुगत पुरीकी नीसासीरे । बो २ । बेद पूराय कूराय
 बलासी । अतसु खारी खासीरे । बो ३ । पंचामे प्रतीत बभावे
 । होय कर्म पुल पासीरे । बो० ४ । बोपारी धन बपतोभावे ।
 कय न भावे हासीरे । बो ५ । नीसपाइ सुखदेव मीनखरा ।
 पावे पद नीरवासीरे । बो ६ । कयत अडाव बैपुर के मद्र ।
 मूठ तजो मव प्रासीरे ७ ।

चाल तेहीज

राखो २ रे सरम गुरु केरी । बीससु टले मव फेरीरे । रा०
 १ । आंकडी । गुरु सम अगमे नही उपगारी । ग्यान देवे हेरी २
 रे । रा० २ । कंकरसु संकर देवे । पूजा होए गयेरीरे । रा० ३ ।
 नरक दुखासु कर द न्यारो । खोले गुरगतनी सेरीरे । रा० ४ ।
 गुरुकी आख धरो सिर उपर । फले होएगी तेरीरे । ० ५ । रा०
 जेपुरमाण अडाव जुगससु । सीख देवे पेरी फेरीरे । रा० ६ ।

चाल तेहीज

ठाको ठाकोरे धर्मकी सरी । मत ठाको नर अनेरीरे । ठाकोरे
 । १ आंकडी । धममु बीब परम पद पावे । बाजे उसकी मेरीरे
 । ता २ । मव सबमाय होय संगी । टले धार गत फेरीरे ।
 ता० ३ । कयत अडाव जेपुरके मद्र । मान कमा गुरु करारे । ता ४ ।

चाल तेहीज

मत करोरे मर्मकी जारी । लागे पातक भारीरे । म० आंकड़ी
। १ । मर्मसु सरम जाए परकेरी । प्रीत घटे होए बेरीरे । म. २ ।
छे प्राणी मरीया कुबचना हूड भसमकी ठेरीरे । म० ३ । कहत
जडाव जेपुरके मांड । मीष्ट वचन सुखकारीरे म० ४ ।

लावणी लीख्यते

चाल जवृजीरी लावणी । स्वारथकी सवइ है दुनीयां । विन
स्वारथ नही ढीग जावे । सुतलवकी सब प्रीत सगाइ । विन सुतलव
नहीं बतलावे । स्वा० । आंकड़ी १ । बाप वेटाकी इथर सगाइ
कनकरथ राजा जाणी । जनम जातने खोड लगाइ । राज रिध
ममता आणी । स्वा० २ । पुत्र पिताकी इथर सगाइ । कूणकने
कुमती आइ । सेणक राजाने दीया पीजरो । कोस लीव्री सब
ठकुराइ । स्वा० ३ । चूलणी राणी ब्रह्म दत्त वेटाने । बालगरी अग्या
दीनी । प्रमराम मातासु विरच्यो । लाज सरम सब खोदीनी
। स्वा० ४ । बधव बधव भरत बाउबल । बारे वरस जगडो कीनो
सुरीकथा निज प्रीतमने । भोजनमाए बिस दीनो । स्वा० ५ ।
सीसेण सामासु गिरच्यो । एक घाट पाचमें नारी । लाख मेहेलमें
बाली एकठी । बीसबासघात कगन मारी । स्वा० ६ । बहु सासुरी
इथर सगाइ सुत्र वीपाकमाए देखो । सासु बहु अजनासु
बढली । आल देड काडी एको । स्वा० ७ । सुसरो बहु सती
सुभद्रा । आलदीयो आणी धेको । बहु सुसरो सागर समुद्रमें ।
पटको नहीं आणी सको । स्वा० ८ । देवर भोजाइ बलैकवरने

। पदमाक्षी कीयो खुबारी । येडो कूबकनानो दोपतो । मिनख
मार कीयो संगारो । स्वा० ६ । मामो भायजो राय उदछ । केसी
बल करने मारयो । कको मठीमो भीपालने । राज भीसट कर
नीकाण्यो । स्वा० १० । इत्यादिक में कहु कछ लग । बिन स्वारथ
सगपथ छोडे । ठ व नीच केइ सुतलब करय बीन सगपथ ममठ
बोडे । स्वा ११ । संतानीक राजा सांइसु बगडो । करदीवाब
राधा हारयो । ठाकुर थाकुरसुग्रीवादिक । फूट करी रावण मारयो
। स्वा १२ । सोकरेन्ती छस कर मारी । बारै पछय सायो ।
रुपदेव मीथीसर छसकर । बामदबनी करी पासो । स्वा १३ ।
१६ से पचावन बरसे । जेपुर में सेले कसो । केइ गरमकी साख
बदने । ब्रह्म एह बोडी हासो । स्वा १४ ।

अवनीतकी लावणी लीखते

बाल गोपीचंदक स्यासुरी । कल हुकसे आनीयासरे । पेट
मरत कज । मेख पहर मारी पड्यासरे । बाब पायो राज । म्यान
ध्यान री लप नहीं मर बस बेठ महराज । अवनीत गरुना
केशा कांडे मूर्ख बीरग । आंकाणी । १ सीखदीपा सामा हुबेसरे
। सुसावे भीम सांड । गुरुदेवस सुरे । बक उगाडा मांड
। बीसे कीडानीबकसर । १० कसे चामे लांडरे । अर २ । सोह
बडा कय कयदो । राखे नहीं अयाव । बतलायो बाक बदेसरे
। वे क्यु मूडया बाव । पइलांतो समझा नहीं । अब क्यु करो
खेपा ठाण्डी । अर ३ । गुरु बोले बड् बानो गोचरी । ब्यावो
मात ने पाव । मूडा बडाने रोगी गिलानी । तपसी छोड नाबने ।

ओखद वेखद सुजतो सरे । वेगी देवो आणजी । अव० ४ ।
 थे तो वेठा हुकम चलावो । माने राख्यां दाम । इण भनमें दुख
 दीसतारे । कसी मुगतरी आम । खासी सोड न्यावसी सरे । मेतो
 करस्यां वासजी अव० ५ । हीमडा तालो जडीयो होसी । वगत
 अदूरी थाय । दिन आयो नही पेरसी सरे । काले सुता खाय ।
 बीना वगतरी गोचरी । समेल्यावा कठासुजाएजी । अव ६ ।
 आवक थारा सुमडा सरे । वाता में विलमाय । वायां तो बोले
 नही सरे । जीमे आडो जुडाय । मूंडा देखी तीलक करे सरे । छती
 वस्त नट जायजी । अ० ७ । आग भगता आपरा सरे । जोवे
 थारी वाट । थे तो वैठा वात वणावो । मे गोफां सुत्र पाठ । थे
 कड वेठा वद जास्योस । भार्यां मारो पाटजि । अव० ८ । दोरो
 सोरो जावे गोचरी । भन भावे ज्युं लाय । सरस दावनीचै धरे
 सरेम निरस उघाडे आय । कपटी कपट गुरासुं करने मन गमती
 मील खायजी । अव ९ । अणगमतो आगे धरे सरे । गमतो देवे
 छिपाय । जाणे देसी ओग्ने सरे । अथवा आपलीराय । बीनेवंत
 वाजे लोक में सरे मरने दुरगत जाएजी । अव १० । अच्छो
 भावे आपने सरे । मारो ल्यायो न आवे दाय । मीलसी जैस्यो
 ल्यावस्यांस । काड धरण वेठा जाय । ज्यो भावतो खाय ल्यो
 सरे । नहीतर ल्यावो जायजि । अव० ११ । गुरु जाणीने करा
 वदगी । थे नहीं देवो जस । ग्यान ध्यान आगो रयोस । बल
 नहीं जीभमें रस । नाम कठी जावा अगाडी । पढीया थारे वसजी ।
 अ० १२ । जावां तो जाण नही देवो । थे कइ खल्यां दाम ।
 वेठा वेठा वात बणावो । मासु करावो काम । भायांन मेला

करस्यात्सू । बिगड बाणसी मांमजी । अब १३ । असवीसु प्रप्यो
 गयो सरे । बूक दीबी मरबाद । रोस मसकरी । बला बिगता ।
 करे म्यान दुख याद । मारी कर्मा मेला डुरने । उपशावे असमान
 जी । १४ । रागीओगुयने गबसरे । सीख न देवे ताम्ब । पल
 करे अबनीतनो सरे । होरया आख अजाख । डर नहीं गुरुदेव
 नीसरे । किबरी राखे कसबाजी । १५ । कुतिल पाचसे परक
 आचारब । छोड दुबा एकत । सगलाद दुबा सारखा सरे । नहीं
 एकमें तंत । बस राखे निब आत्मा सरे । सोइ साब मईतजी ।
 अब० १६ । झट फट्टिने करी लागे । फट गयो असमान ।
 एक छे तो संक आखे । बिगडयो सपसोइ पाख । किख २ ने
 ओलंता देवे । कूबे पड गइ मांगजी । अबजंदारी नहीं आबरु ।
 दोन्यू मव दुखदाय । ठस ठम सुत्रमें बाण्यो । बांचो चित
 सगाय । आंक फरक बलां बिगतासु । मोलाने मरमायजी । अ०
 १७ । आप अकेला कर कर लेस्यो । मारे गबारी पूठ । सारे
 नहींछा बाप रेस । मै कसले आस्यां ठठ । आखे रामदेवछ कषा
 । माडी चांय चु टजी । अब १८ । सगला मारी करे कंगी ।
 पाने सागा महर । प्याओ बोली पात्रासरे । मारा पाना देदो
 हेर । न्यारी करस्यां गाबरीम । छोड नहीं छे पारो सूरजी ।
 अब २० । सीखत्यइ हबमें हीतघरी । बांचो आख त्रिकेक ।
 त्रिनेबंत हीरवामें भरम्यो । सुत्र मांए देख । अबनीताने नहीं सुबावे
 । सुख सुख करसी पेसुबि । अ २१ । अबजंदारां सु बीतसके नहीं ।
 मूनकरी मगरंत । बमासी पोसासो देखो । मत बलायो पंथ ।
 पलीया बेठ पाहो पाइयो । कससी कसु अनंतजी । २२ ।

१६ सैं साठो सुखदाड । जेपुरमांए जडाव । वीती जेसी जोड
सुणाइ । नहीं धेपरा भाव । आयो वेतो मिछामी दुकड । ग्यानी
आगै न्यांवजी । अव० २३ ।

श्री मंधिरजीरो स्तवन

देसी मोए अपनी कर राखो । मोए चरणामें राखो । मैं
सरण लीयो छे थाकोजी । मो० आंकडी । १ । पुदगलको रस
पाको । मैं जनम मरण कर थाकोजी । मो. २ । प्रभू श्रीमंधीर
श्रीस्वामी । मोए तारो अ तर जामीजी । मो. ३ । लख चोरासी
फिर आयो । जठे जैन धर्म नहीं पायोजी । मो. ४ दुलभ नरभव
पायो । मैं तप कर तन नही तायोजी । मो० ५ । पुन खजानो
न्यायो । मय एले साथ गमायोजी । मो. ६ । कुमतीकी संगत फेली
। आलममें आतम गालीजी । मो० ७ । मायामें ममता फेली ।
चारुं गत चोपड खेलीजी । मो० ८ । प्रभू थे मुगत्यांरा गामी
। मैं निठ २ समगत पामीजी । मो० ९ । मारो कुमत न छोडे
केडो । थे अय तो न्याय निवेडोजी । मो. १० । प्रभू ज्यो मोए
राखो नेडो । भवदु खरो पाउं छेडोजी । मो. ११ । प्रभू आप बडा
उपगारी । कर्णीमे क्रमर हमारीजी । मा. १२ । प्रभू कर्मनकी
गत न्यारी । कोड लख न मके नर नारीजी । मो. १३ । प्रभू
अब के ओमर आयो । मैं धर्म तुमारो पायोजी । मो. १४ । प्रभू
ममता में मुगजायो । मैं फिर २ ने पिमतायोजी । मो. १५ ।
प्रभूरीजमउभरपाड । कर्मनकी कथा सुणाइजी । मो. १६ । प्रभू

१६ सैं बरसैं सठे । हुया बर्म ध्यानरा छठसी । मो १७ ।
 आसोत्र मास बढ आठे । र्म बरस सरसाठजी मो १८ । जडाव
 जेपुरके मांइ । करमनकी कया सुहादजी । मो १९ ।

कका यतीसी लीख्यत

बडावजी महाराज कृत । दोहा । अरिइंत सिध समरु सदा ।
 सरसती लागू पाय । बरख बतीसी में करू । स्थानिध कीन्यो
 मांय । १ । कका करखी कीजीए । का वरमाओ दान । समत
 राखीने रहे । होजा करख समान । २ । खुखा खिजमत कीजीए ।
 गरुदेवनकी खूब । अइतिरखो होयगो । नहींकर आसी दुब । ३ ।
 गंगा गरब न कीजीए । सुत सम्पतहु ठख । ओगो कीसन मुरारजी
 । रया एकका एक । ४ । बचा बेरो कर्मको । लागो तेरी लार
 छल चारासो खुशमें धूमठ कीरे गिरार । ५ । बचा बचा कीजीए
 । ग्यानी गुरक पास । पटमें कर द आनखो । होय मरमरो नास
 । ६ । कका छेप न कीजीए । होजा आख अआख । करखी आमी
 आपरी । मत कर खेचताख । ७ । अजा जीवन आत ह । जेम
 महीको दूर । पोए बरी सिर पापरी । भू मारी घर दूर । ८ । भ्रम
 मूटपट चेत या । मो निद्रा मत छेए । खोड होड चोरटा ।
 चोखी सतगुरु वेंए । ९ । आमा नरमब पायन । मन्यो नहीं
 किरतार । प्यार बीनाकी चानखी । सेकट पाए अ धार । १० ।
 टा टाटी बर्मकी देखे अपखी पूठ । करम किरासो बेचने ।
 साओ सेतो लूट । ११ । छटा ठासी होयन । आमी प्रमद मांए
 । काइ खासी बापडा । करखी सीनी नांय । १२ । बडा

डरजा पापसु । सुखीयो होसी सेण । हंस्यारा फल पाडवा ।
 रोसी भर भर नेण । १३ । ढढा ढील करो मती । दान दयाकं
 माए । काल अचाणक आवसी । पछे गणो पिसताए । १४ ।
 गणा नीरणो कीजीए । देव गुरुने धर्म । सरदा राखो नरमली ।
 छोडो मिथ्या भरम । १५ । तता तिरणो दोयलो । विन सतगुरुकी
 संग । तिरसी सोइ तोरसी । देदे अपणो रंग । १६ । थथा थिर
 कर आतमा । ग्यान गरीबी जेल । थोडा दीनकी जाजली । पछे
 मुगतकी रहल । १७ । ददा देणो दोयलो । साध सुपात्र दान ।
 लाखा खरचे लाजमें । राखे आपणो मान । १८ । धधा धनसुं
 भरी । तरसे निरधन लोए । पावे सो खावे नहीं । एह अछवा
 मोए । १९ । नना नाकारो कीयां । कीरत फेले नांय । भूजी
 बाजे लोकमें । पूंजी प्रले जाए । २० । पपा पांचू बस करो ।
 चुगल चोरटा नाण । ठग ठग खावे ठीक विन । चतुर करो
 पिछाण । २१ फफा फिर २ आवीयो । लख चोरासीमांए । फिर
 नहीं फीरणा लालजी । नैसो करो उपाव । २२ । ववा वणजा
 वावलो । होजा जाण अजाण । आरंभ कारज पूछतां । मत वण
 आगीगाण । २३ । मभा भारी होत हे । आतम आलसमांए ।
 किण बिधा तिरसी जीवडा । भव दधी भरयो अथाय । २४ ।
 ममा मान बडाइ छोडने । सगहीसुं हित राख । दुसमन अपनी
 आतमा । ममता रसने चाख । २५ । या लायो या न्यावस्युं ।
 या मारी घरनार । याया करतो मर गयो । खडो रयो परवार
 । २६ । ररा राजी होयने । आरभ कीया अनेक । बदले
 देता दोयलो । म्यादपू गा फल देख । २७ । लला लाज न

राखीए । दान दयाक मांए । नफो लेवा अस पखो । दोन्यू मव
 सुखदाय । २८ । वग्ग विनङ्ग काशीए । राखे सबकी साप्र
 परका प्राण उबारके । आपणा सारे काज । २९ । ससा समपत
 पाएने । छाद खरची नांय । सारे पिब नै ले पन्थो । घर गये
 भरती मांय । ३० । पपा खायो खरचीयो । दीयो नहीं दो हाथ
 दीयो धरमें पानखा । दीयो पाले साथ । ३१ । छा सफेद
 कर्मकी । करठा और न कोय । दोस न दीधे रामकु । बांक आ-
 पखो सोए । ३२ । हाहा इस संसारमें । बनम मरख की जोड ।
 जाउ पिब आउ नहीं । एमी पाठ टोड । ३३ । १६ से
 अठावने । कन्नामांए पढाव । कन्नावतीसी करी । केपुरमांए
 अढाव । ३४ ।

पुजजी म्हाराजरा गुण लिख्यते

देसी पंथीहारी छे । भूत हो मोवन गारी पूजनीरे । बाखे
 पुनमर्चंदर । मवि जीन हो मविक वकोर निहारनेरे । पामे परम
 आखदरे । मूर्त । १ । आंकसी । बंधूरे जंपू दीपरा मर्समरे । मठ
 भर देस मन्धारे । सोयन हो सोयन बली सु बावलीरे । उ हा नीर
 अपात र । मू २ । खर करे खर फलोदी दीफो र । हिंदबाखी
 तप ठजरे । भावक हो २ लोक बसे विहार । बेब गुरांसु हेअरे ।
 मू ३ । ओमजर ओस बममें सोम्यार । पु गहीर्या बड जातरे ।
 रंमार २ बी उर उपन्यार । प्रतापचद्री तातरे । मू ४ । तख
 कुल हो २ मांय अनमीपार । सुम पला सुम बाररे । उधव हो २
 बहु विद साबन्थो रे । हरख्यो सो परवातर । मू ५ । बंधव

हो २ च्यारसे हो धरुंरे । येन एक माल रे जनम्यां हो जनम्यां
 पांचू अनुकरमेरे । मात तात कीयो कालरे । मू० ६ । आया हो २
 पाली स्हरमेरे । बहन पटंगो जाणरे । करवा हो २ पेट अजीवकारे
 । च्यारुं चक्रसुं जाणरे । मू. ७ । मीलीया हो पूज कजोडी-
 मलजीरे । पूरब पुन पसायरे । बंधवहो दोन्युं ए ममतो करीरे ।
 दीनो जग छिटकायरे । मू. ८ । गरु मुखरे गरुवीने अराधेनेरे ।
 भणीया ग्यान रसालरे । पछेरे विरोह पडयो लगु भिरातनोरे ।
 बडो कसार कालरे । मू. ९ । थाणे हो २ पूज वीराजीयारे । अजिया
 पुर सुम ठामरे । तप जप हो २ करी सलेखणारे । पुज पधारतां
 धामरे । मू. १० । पाटज हो पाट विराज्या पूजनेरे । बड बंधव
 विनेचदरे । लायकरे नायक चारुं सिंघ नारे तोडे कर्मना फंदरे
 । मू० ११ । समतरे १६ से पचावनेरे । जेपुर सेखे कालरे ।
 दीज्यो हो दीज्यो द्रस जडावनेर । कर किरपा किरपालरे । मू०
 । १२ ।

ढाल

गजरारा गीतरी छे । जी घणा कालसुं बीचारतां । मला
 पदारथा आप । मनवल्लीत पासा ढल्या । पूज तणे प्रताप । म्हाराजा
 थारी वाणी प्यारीजी । समज पडे सब न्यारी न्यारी न्यारी । माने
 लागे प्यारीजी । आंकडी । १ । जी सग सरव सेवा करे । धर्म
 ध्यानग ठाठ । च्यारु जोडे दीपता । पूज वीराजे पाट । म्हा०
 । २ । जी स्रमत पग्मत धारणा । भिन २ करो वखाण । रागद्वेष
 नही उपजे । छो अवमरका जाण । म्हाराजा थारी । ३ । जी
 हीए वीराजे सरसती । सुमर कठ सुपियार । सुण फुले पुरखदा

बरसे इमरत धार । ४ । बी इतनी मानो बीनती । कनीरामभीरा
सिस । होली चोमासो कीभीए । जेपुर बिसबा बीस । मा० ५ ।
बी बसा परीसा देखने । दरसख दीया दीयास । मारबाडमें मन
बस्यो । परातम्भरो, स्याल । महा ६ । बी तपस्यां करबा
आपरे । बाया यह उधमास । अर्ज करे बडाबडी । मानो दीन
दयाल । म्हा० ७ ।

चवदा नेमरी ढाल लीस्यते

चवदा नेमें बीतारो । आंकडी । प्रथम सचीत तथी मरबादा ।
मिन २ बीन्यो बीप्यारो । इषादिक विथमाण । अनंता । खावस
पीब्यारो परीहारोरे । प्राणी । चवदा० । १ । पांच बीगे रोजाना
नैसीजे । कोइ एक टासो बीजे । पनी पावडी मोजा बगेरे । गिब
तिष्ठु चारीजरे प्राणी । च २ । मुख्य बात तम्बोल पांचवे
। विशरी करो मरजादे । छप्ते कुमम सुर्गपरी गीबती । बीजे मठी
प्रमादरे । प्राणी । च । ३ । बहस गाडी नाब असपारी ।
विन प्रते गिब लीजे । महब सेजा मुडां कुरसी । रोजीना सस्या
बीजरे । प्राणी । चवदा । ४ । बस्त्र बेममे पांचूइ कपडा ।
कीमत बरब बीचरो । गिबती कर मरजादा बाढो । बे गतिरो
संसारोरे । प्राणी । ५ । बन्धेपशमें काजल केसर । टीक्री
आरिसे निहालो । मरदन पीडी चन्बमाडी । आग्रह फुलारी
मासोरे । प्राणी० । च ६ । बम इम्यारमें सीस पासीजे । बिस
मरबादा बीजे । चवदइ राजरी इबरत रोको । नरमब सकल
करीबेरे प्राणी । च ७ । नाबय चोवय बेस सरबबी । त्यागो

गिणती आणी । ते श्रावण भर मागर तिरमी प्राण ज्यूं जाणे
पाणीरे । प्राणीरे । प्राणी. । च० ८ । भात पाणी मरजादा तो
लीने । समवेइ पेट प्रमाणे । उतम करसी नेम चीतारी । ते धर्मरो
मर्म पीछाणारे । प्राणी. । च. ६ । १६ सें जडाव जेपुरमें सावण
वद वावने । दिन दस मीने जोड सुणाइ । नेम चितारे सोधने रे
। प्राणी. च. १० ।

श्री म्हावीरस्वामी को सिली लीखंते

चाल शिलोकारी । अरिहंत सिद्धारे पाए नित लागु । गुरु
ग्यानी पासे वीद्याजी मागूं । महावीरस्वामीरो कहस्यूं शीलोको ।
एकण चित करने सुणज्यो मग लोको । २ । मरीछे भगमे
तपस्यां कर मारी । वावे आदेसर हुडी मीकारी । ३ । मा मिरखो
होमी छेलो अग्रतारी । इतनी सुण मनमे फूल्यो अपारी । ४ । मारो
कुल मोटे बोले अहकारी । फालेदे कूढयो उंचो कुलहारी । ५ ।
कर्म नीकाचित वांच्या तिणवारी । तेनो फल कहस्यूं सुणज्यो
अगाडी । ६ । कालग्र तिहा समकित पाइ । गिणती मेली ना
भवमताई । ७ । थानक वीमुंड पडले भवमाड । सेव्या तिर्थकर
गोते उपाड । ८ । दममा सुरगम उपना जाड । वीसे सागरनी पूरण
तिथपाइ । ९ । मुर मुख मिलमी चप्रिया जिनराय । मान प्रभावे
मागण कुल आया । १० । देवानदारी कूखे उपना । माताजी
देख्यां चवदे सुपना । ११ । वेठा मभामें मुरपत वीव्यारे । कठ
प्रभूजी लीनो अवतार १२ । अवदे प्रजू जी ड्याफोडीनो । नीसचे
करोने सासो मन कीनो । १३ । वीभूवन स्वामी तीरये नाथो ।

गामस कुल आया इपरस बालो । १४ । उपजे कदापी वनम न
 पावे । देव सखीसु सारन करावे । १५ । हीरसममेपी से कर
 आयो । बदलो काडीने सुखसता पायो १६ । सखीसु व सिवसप
 रसा । राखी विसचारे कृ स्तां पदार्था । १७ । हाव बोडीने सीस
 नमायो । सरो फेरो कर मुरग सिघायो । १८ । देवानंदा मन
 आस आवे । सुपना इमारा कृष से आवे । १९ । माता
 विसचारो माग सवायो । निन माम्पो पुत्र से आव आयो । २० ।
 म्हास बरोकामास्यांरी बाली । सटके लू माने सेजे सु बाली । २१ ।
 पोढयां विसचारे दे वसती सीरेखी । पोडीसी निद्रा जागे मिरम
 नीखी । २२ । वर देह सुपना ठसम देखे । बर कैतो आगी हरक
 विसेले । २३ । पाद करीने हीरदामे धारे । देव गुरुने परम
 बीतारे । २४ । ठठयां सेजावी भीमा पग ठाले । गज गती बाले
 बाले मराले । २५ । बखी ठमस पिब पास आव । पोढयां बालीने
 पगावे अव । २६ । त्रिवेसर प्रमाथी राग सुबावे । निद्रामे सुता
 कंस वगावे । २७ । हाव बोडीने ठ बी निद्र मित्र । पूढे महाराजा
 किम आव सुद्र । २८ । बेठो सिपासख बीसरामो बालो । लेव
 टालीने काज फुरमायो । २९ । आव पामी निव आसख बेठो ।
 बिनो करीने बोले सुख मीठी । ३० । इकरमकरी सुपना में दोठ
 । सुबता म्यामीजी लागे अव मीठ । ३१ । बोले म्हासराजा बिब
 सेती माखो । सरवे सुबायो संख मठ रालो । ३२ । मसकतो
 मंगल बाम्याडीमांते । इजो बिरखनेसिब माक्यां से । ३३ ।
 बोले सिद्धमीजी म्हाक ब माता । पाये बरबारी पुसपारी माता
 । ३४ । बटे रगतो ससि हर होवे । सैस किरखसु सुरब सोवे

। ३५ । आडमें घजा आकासां लेखे । नवे संपूगण कलसे निसेखे
 । ३६ । पदम सीरोपर कपला कर छायो । खीरे समुद्र हीलो-
 ला खायो । ३७ । देव बीमाण देवा बीराजे । रतनारी रास तेरमी
 छाजे । ३८ । निग्धु अगनी चन्द्रमें देखे । जल हरती
 जाला चिउदीस लेखे । ३९ । इणविद स्यामीजी सुपना में पाया
 । हरखीने गेल्या सिधारथ राया । ४० । तिग्थंकर के चकरीसर
 नाणी । कूखमें आयो उत्तम प्राणी । ४१ । तहत करीने सीम
 चढावे । सीख केडने निज मिद्र जावे । ४२ । उगते सुरज
 सिधारथ राया । मजण करीने सभामें आया । ४३ । इग्याकारीने
 हुकम दीरावे । आठे मद्रासण आगे रचावे । ४४ । पसवाड़े एक
 प्रेचे खंचावे । नमो राणीरो आमण बीछावे । ४५ । मरजादा
 सेती महाराणी आवे । श्रीफल सुपारी हाथामें लावे । ४६ । हल
 वेगा जावो पिंडत तेडावो । चवदे सुपनारो अर्थ करावो । ४७ ।
 हुकम पाडने नगरीमे जावे । सुपना पाट कर्ने ततखिण व्यावे
 । ४८ । नीरखी हरखीने राय वढावे । आद्र करीने आगे बेठावे
 । ४९ । अणु करमे सुपना मरवे सुणवे । सास्त्री देखीने अरथे
 करावे । ५० । त्रिलोकीनाथो तिलक सरीखो । आय उपन्यो
 म्हाराणी खूखो । ५१ । दोय कुल तारक सुरज सामानो । अन
 धन लीछमीमु भरसी खजानो । ५२ । भरत खेत्रमें उदयोते
 करसी मजम लेडने भिवरमणी वरसी । ५३ । सला करीने बोले छ
 भोसी । उत्तम सुपनारो चो फल होमी । ५४ । राजा राणी सुण
 भाणद पाया । दान देडने घरे पूछाया । ५५ । श्रीफल सुपारी
 शानाका बीडा । बाटे सभामे करता बहु कीडा । ५६ । जीमणकी

बन्पा मोहन कीना । लौंग मुपारी मूक्षस सीना । ५७ । निव
 नरस्ता पदरे बन्ध मूषण । गरम प्रतीपास्ते टाले सब रूपस । ५८ ।
 पुनय प्रमावे ठपमे सुम डोला । पूर म्दाराआ करती रंगरोला । ५९ ।
 म्याने प्रमावे गरम आलाव । धीनो करीने अ ग मंकोषे । ६० ।
 माता दुख पावे करती बीषारो । हाने न चाले गरम हमारो । ६१ ।
 राजा राणीजी झुंठा बह । जीवे जठालग संजम नहीं सेउ । ६२ ।
 विल २ करती आमुडा नाखे । पग फुरक्यो हरउ बिसेपे । ६३ ।
 बांटे मदाइ दुबो आखंडो । दिन २ बाघ सीम दूबनो चरो । ६४ ।
 चैत सुदीने आदीसी राखो । तगसन जनम्या भी जगनायो । ६५ ।
 छपन छ बारी मंगल गावे । चोमट इड मिला मेरु पर न्यावे । ६६ ।
 तीरथ मेलीने पाणी मगावे । मर मर कस्तमा ठपर पदरावे । ६७ ।
 इड सगलछ अणुअणु न्यावे । बालक बय प्रभूजी असला पावे । ६८ ।
 विथ बल ललखिथ परम्यो दीयाव । बटी चापीने मरु
 कपावे । ६९ । ग्यान प्रभूजी सरपत बीषारी । आखी प्रभूजी
 मफती तूमारी । ७० । अनंत बलीने सामथ पीरो । सक इड
 नाम दीया म्दालीरो । ७१ । उअव करीन निथ मित्र न्यावे ।
 १ मु पी मलाने मीस नमाय । ७२ । देवी दवा मिउ विथ लोह
 बाव । विचमें अठइ उअव करावे । ७३ । दिन ठगे दासी
 दाडीने आइ । पुत्र जनम्यारी दीनी बचाइ । ७४ । सोनारी
 म्दारीसु मायो मबावे । दासीपसाने हरे करावे । ७५ । झुकट
 बरबीने आखस सारा । बरस म्दाराआ कंचन चारा । ७६ । पुत्र
 जनमारे हरक करावे । चंद्रमा देखी आखस सुलावे । ७७ । छे
 दिन ठगा सुरख पूजाव । दसमे दिन सुवक हर करावे । ७८ ।

भाइ वेठा ने न्याती बूलावे । डसोटण करस्यां दुवो दरावे । ७६
 । वांमण वचकसण कंदोह ल्यावो । त्रिविध भांतीरा भोजन रंदावो
 । ८० । कुटुंब कवीलो स्हरका सारा । जीमण वैठा न्याराजी
 न्यारा । ८१ । आदर करीने चोकी वीछावे । सोनां रुपारा थाल
 दीरावे । ८२ । पहली मीठाइ पछे पकवानो । पुरसें सगलाने
 दे दे सनमानो । ८३ । लाडु पेंडा ने घेवर ताजा । भीणा फीणा
 ने खांडरा खाजा । ८४ । वरफी कलाकंद मीश्रीरो मावो । पछे
 दूजाने पहलीयो खावो । ८५ । तइथडा ने जलेवी फीणी । गहरी
 गलेफी खांडज चीणी । ८६ । पेठा डोठा ने नुंगतीरा दाणा ।
 पुरसें माडेणी भरीया छे भाणा । ८७ । गूंजाइमरती सकरपेरा ।
 कर कर मनवारा पुरसें छे गहरा । ८८ । चदकलाने चूरयो
 चकचकतो । सगला सरावे जीमण जुगतो । ८९ । मालपुवा ने
 खीर वणावे मीश्री ने मेवामांण रलावे । ९० । सीरो सावूनी
 भरभरती लपसी । दूध रावडीया पीवेल्ला तपसी । ९१ । लुची
 पूडीने सोटे सुंवाली । छावा ले उवी पुरसणे वाली । ९२ ।
 फीणा बटीया ने पतलीसी पोली । पूरण पोली घिरत जवोली
 । ९३ । दाल सालने केसरीया भातो । मिणज भडीयारो जीमें
 सब सातो । ९४ । सुतक तोलीमीजीम खाणा । लोइतिल्ली ने
 कसकसका दाणा । दाख बीजोरा खारक खीजुर । काची गीरीने
 केला अंजीर । ९५ । कीसमिस चारोली बीदाम पिसता । नुकले
 पचरंगी खावे मव हसता । ९६ । पूवा बडाने कचोरी ताजी ।
 पापड फलीयासे सब कोइ राजी । ९७ । दाल सेवाने मोगर

मगावे । मुज्या पकोडी सबनेइ भावे । ६६ । बीणा बबसा ने
 अ बोलमयी । और तरफार्या पुरसे छे बेत्री । १०० ।
 करेकबरिया खीज्या खरोडी । पापडकी गोम्याने तिलवारा
 बोडी । १ १ । पोल बडा ने राखता म्यावे । ज्यू २ मीठ्या
 दूखी बीमावे । १०२ । आवे अयाखो केरीजीपाको । मागे
 सगलाइ पुगखतो पाको । १०३ । खडी चाबसने फासी पैलेखो
 मीठ्य पर साट्य मय कोइ सेव । १०४ । ओला पतासा मीभीरा
 पाखी । म्हरा मरम्याए गिंदोदक दाखी । १०५ । बीम्या
 झटने चलुजी कीना । बिबद प्रफरना भूखस सीना । १०६ ।
 बन मुषामय मुषाजी आव । कुडवा टोपी ने सांतीया म्यावे ।
 १०७ । गावे मंगल बाज बाजा । नाम दीरावे सिभारथ राजा ।
 १ ८ । नालारी जागा प्रगट्यो निदानो । गुब निप्पन्न माम
 दियो भिदमानो । १०९ । बस्त्र सुपस ने रुपया रोको । वेइ
 बीदाय सरथ मंताको । ११० । पांचे पायां मिल पाले नानडीयो
 । पोड पासुर्याए गावे हालरीयो । १११ । छप्पे महीने खावो
 सीखाव । घोटी पटराकेम रखाव । ११२ । इस खेसने गुडोम्या
 खाते । घडी करावे आंगलीयां म्छले । ११३ । कडा मोली ने
 पांइसीयो छात्र । कंडी दसा ने हार बीराजे । ११४ । कडीयां
 कंदारो गुगरीयां घमक । पाण धाअरयां खाते छे ठमके । ११५ ।
 अगा टोपीने मुलथ सोने । बट्याडोले सगलाइ ओने । ११६ ।
 ताली जलेशी मीभीने मया । दर माखख सु मागेकलेवा । ११७ ।
 आडो माईनि रुखयो सवे । मला मनावे मागे ओ देवे । ११८

। चक्री भराने ख्याल तमासा । देखी माताजी पूरे मन आसा ।
 ११६ । लाडे लडावे वैनड भुवा । आटे वरसरा जामेरा हुवा ।
 १२० । वेला पुल देखी भण्णा नैठावे । हुसँ करीने जोमीजी आवे ।
 १२१ । चादीरो पाटो सोनारो वरतो । लिग्न लिख पाढाडा
 मुख आगे धरतो । १२२ । खोट जाणीने कोद चढावे । खोमी
 पाटो ने मामा डरावे । १२३ । ऊँउंकारनो अर्थ कगावे । सुणने
 जोसीडो इचगज पावे । १२४ । याकी बुधीरो पार नै
 पावे । ॥ ऐमी तो विद्या हमने नहीं आवे । १२५ ।
 थर थर धुजतो उठीने भाग्यो पोथी लेखने मार्ग लाग्यो । १२६ ।
 जोग जाणीने सीनी सगाड । पुत्र परणायो बहु घर आड । १२७ ।
 दाम दामीने डाडजो ल्याड । पचडंदिना मोग मिलसे सदाड ।
 १२८ । पीव द्रमण नामे वेटी एक जाड । परणी जमाली जोग
 जवाड । १२८ । मात पीताजी वारे व्रतधारी । लीनो अणसणने
 दोषण सत्र टाली । १३० । काले करीने उंची गत पाड । सुरगे
 वारमा उपन्या जाड । १३१ । उठासु चप्पी अनुकरमे दोड । खेत्र
 वीदेहमे मिव गत होड । १३२ । पछे प्रभुजी सजम लेवे । वडा
 भाइजी आग्यानै देवे । १३३ । मात पितारो पडीयो वीजोगो ।
 तू काड भाड लेवे छे जोगो । १३४ । धीरज राखीने ठहरोरे भया
 । ब्रमे ढोए लग निरलेप रैया । १३५ । लोकिंतक देवा तिण
 वेला आवे । हाथ जोडीने अरजे करावे । १३६ । ओसर आयां
 सजम लीजे । भग्नखेत्रमे उदयोत कीजे । १३७ । इंद्र इंद्रकारी
 बेसरमण आवे । भरीया भडारा दाने दीरावे । १३८ । सोला
 मासारो सोनैयो कीजे । एक कीरोड आठ लाख दान दिन प्रत

दीजे । १३६ । इसहीकोडारो छमछर दानव दीनो । एकएकी
 दिन संवम सीनो । १४ । दिख्या किण्याण उखव फरावे ।
 नरनारी पाछ नगरीमें जावे । १४१ । कुटम सडुने पृठव दीनी ।
 बेसे अनारव इजाजी कीनी । १४२ । गुस्त्र से मक इद्र उवा
 से जागे । कष्ट गखो छ नुरमें सागे । १४३ । हुइ न होवे
 मगईत माखे । कर्म इजासु टूटे नहीं छाखे । १४४ । लाइ देसमें
 पादरा आया । जीत्या परीसा कर्म सुपाया । १४५ । बारे छमछर
 ने साबा छन मामो । इद्रमस्त रया पर्स ३० घर बासो । १४६ ।
 उपस्या करीने केवल पायो । वीरव थापीने सांसण बरतायो
 । १४७ । गौतम आदीन वरदे इजारो । रहस छतीसे साववयां
 सारो । १४८ । एक साखने गुखसट इजारो भावक हुवा
 बार परत पारो । १४९ । तीन साखने सइम अठारो । भावक
 हुइ इतनो प्रवारो । १५० । म्हास कुइसपुर प्रसुजी आवे । देवा
 देवी मिल निगडो रवावे । १५१ । सोनारा कोट न रतनारा
 छाया । गावे अमर ने बाजे छे बाजा । १५२ । आकासे देव-
 दुदमी बाज । देखी पालांडी द्रासु छाजे । १५३ । फिक्क
 सिंघासख बीर बीराजे । खपर बीज न छत्र छाज । १५४ ।
 रिलखदत ने देवाजी नंदा । दरसख देखीन हुवा आखंदा । १५५
 । फुसी काया ने छुटी इचनो धारा । देखीने पाया इचरख सारा
 । १५६ । हाथ जोडीने गौतम पूछे । बाइ सु सगपख प्रसुजी सु
 छे । १५७ । मगईत माखे ७ मेरी माता । समये सु बीने पाव
 सुख साता । १५८ । ऐसा पुत्रनो पढीयो बीजेनो । अब तो

दोन्युं ह लेस्यां में जोगो । १५६ । सजम लेडने करम खपाया ।
 केवल पामीने मुगते सीधाया । १६० । अँसा तो घेडा जनम्या
 प्रमाणो । मात पीताने मेल्या निरवाणो । १६१ । गावां नगर ने
 अनारज देसो । पावापुरीमे चरमे चोमामो । १६२ । राजा
 पिरजाने देवीजी देवा । निमदिन मारे प्रभुजीरी सेरा । १६३ ।
 देस अठारांरा राजाजी आपे । चण्डस पत्नीरा पोमाजी ठावे ।
 १६४ । बैठ निमाण सक डंढ आपे । देड प्रदिएण सीम नमावे
 । १६५ । इतनी प्रभुजी किरपा क्रापो । थोडीसी उमर
 और बधावो । १६६ । ममम गिरहरो जोर हट जावे । दया
 धर्मरो उदयोत थावे । ६७ । हुड नै होवे ए बाता झुटी । टूटी
 उमर के नहीं लागे वूटी । १६८ । होण पडारथ निमचेड होड ।
 टाल सके नहीं सुरनर कोड । १६९ । कतीबुड अमावस आदीमी
 रातो । मुगत पदारथा श्री जगनाथो । १७० । मिघचारामे हुवो
 छे सोगो । मोटा पुरमारो पडियो बीजोगो । १७१ । पछे भूरंता
 गोतमजी आया । मोवणी जीत्या केवल पाया । १७२ । सुधर्मा
 स्वामी पाटे बीराजे । तीरथ चारांमे सिंध ज्यू गाजे । १७३ ।
 सातसें साधु एक हजारो । च्यारस उपर मझ सतीया लारो ।
 १७४ । करणी करीने कारज सारथा । केवल पामीने मुगते
 पधारथा । ७५ । बर्स चोसठ लगा केवली रक्षा । पाटोधर तीनू
 मुगत्यां मगया । ७६ । बरत्यो केड वस्ते बरतण हारो । सांमण
 चाल्यो बरस एकीस हजारो । ७७ । केड कथाने सुत्रमें धारी ।
 शिलोको कियो ओछी बुध मारी । ७८ । इधको ओछो ने

अकसर हीनो । लीन्यो सुधारी पंडित-प्रविशो । १७६ । म्यानी
माख्यो सो तहत करिजे । मूठरो मिछामी दुकडं दोअ । १८० ।
मयो गूखो ने सीखो सगसाइ । मूढे जैसा कर पापीजो माइ ।
१८१ । समत १६ स साठरी साखो । सावय बढ तेरस बैपु
बरसाखो । १८२ । रतन मुनीरी समदाए अजे । पूढ बिनेचंदखी
पाटे बीराजे । १८३ । बे करबोही अडावडी बदि । म्हर राखीजे
बीर बीबदि । १८४ ।

कलस लीख्यते

महाधीरसामी मुगत पामी । दीन बाखी दुख हरो । सिधारय
ननय । अगत बंदख सिधमें सानिध करो । प्रहृ सेवगने सत्ता
करो । १ । मन बचन कया । पइ पाया । सीसपे दो कर घरी ।
अरय एही करु केती । सेवा चात आपरी । प्र० । २ संसार
सगर । तिरख तारख । बिरय पेसो जाखने । अगु त्याग दीनो
सरय सीनो । तर करु खा जाखने । प्र० । ३ । कस्त आइ
अनाइ रुखीयो । चार गत ठजाइमें । नबपाट खोट खाय सोता ।
अब आयो बाजारमें । प्र० ४ । प्रपंच पसीयो । कर्म कसीयो ।
राग बेग बंधय करी । मोए बाध सेठो । बीवटेठो । इबखरी
करखी करी । प्र० ५ । बर माय मोरी बंध तोडी करम कलेसी
मारने । बट जीत ईक । होय निसंक । कदिय न बाठ हारने
। प्र० । ६ । से ग्यान प्यान । खजान साये । समझि आगे
। रखसु । धर्म आरु बेठी । धर सेठी । अमर अमर मुख चालसु
। प्र० ७ । दोहा । पइ मनोरथ मायरा । पूरो भी सगर्वत ।

बालक हट हाती चट्ट । नही जाणे घरचंत । १ हुं बालक तुम
 आगले । हट कर बेठो सु वाम । माएत विरद वीचारने । दीज्यो
 मुगत मुकाम । २ । गिन करणी तिरणो नही । ए भुठी अविलाप
 । खोटो हीरो वेचतां । कैसे पावे लास । ३ । सुख दुख करता
 आतमाने सचे पुनने पाप । नेमाड फल भोगवे । साखी धर छो
 आप । ४ । सिध साधिक मीलीया विना । विद्या सिध न कोय ।
 कांइयक प्राक्रम हुं करुं । सो पूठ तुं मागी होय । । मन घोडा
 तनताजणा । चुप करलीजे ताण । तीनूंड बस राखतां । पावे
 पद निरवाण । जनम जरा मरणो नहीं । अग्रिछल सुख अनत ।
 क्या जाणुं कड पामस्युं । अखे गुमतरो पंथ । ७ ।

चोइसी लीख्यते

देसी होली काफीरी छे । रिखव अजीत समभव अभिनंदन ।
 भव जीवनके मन भाया । बंदो नित नित चोइसड जीनराया ।
 वं० । आकणी । १ । सुमत पदमसुभासचद । प्रभु । हरक हरक
 परणमू पाया । बंदो० २ । सुवध सीतल श्रीहंस वास पुज । सीव
 रमणीसें चित ल्याया । बंदो ३ । वीमल अणत धर्म सत जीनेसर
 । संत करी सहु सुख पाया । वं० । कुथ अरि मल्ली मुनि सो-
 ब्रतजी । जनम मरणसुं कपाया । व० ५ । नमीए नेम पारस
 महावीरजी । सिवपुर मारग दीखलाया । वं० ६ । चोवीसें गुणधार
 नमूं नित । बहरमान निसदिन ध्याया । वं० ७ । १६ स
 एकावन जेपुर । फाग रागमें गुण गाया । व० ८ । बे कर जोड
 जहाव नमे नित । जिन चरण चीत लपटाया । वं० ९ ।

छंद अढीयल

रिखव अजीत संभव अमिर्नदन । सुमत्त पदम प्रहृ । पाप
निर्करन । । सुपत्तसचद । सुबष सीतलन मध । ईस वास पुत्रे
पद फंकज । २ । बीमल अर्धत धम मत्त सहायक । कुष अरि
जीन त्रिमुक्कन नायक । ३ । मलीनाथ मुनि सोज्जत सामी । नमी
नम पारस सिव गामी । ४ । चोइसमा श्री विरम्प्यात् ।
सांसख नायक सुगती दाता । ५ । गेत्तम आद नमु गुखधारी ।
बहरमान बीस उपगारी । मात्र सइत बंदो नरनामी । ६ । १६ सें
३६ सुख वासो । जपुरमाण पोस सुद मासो । ७ ।
सिय तेरस रवीबार सुबीजे । बकर ओड जडाव मसीजे । ८ ।
मखो गुखो सीखो सुखदण । ज्यां पर कूमी रह नहि कांइ । ९ ।
कलस । अरिहत्त सिव आचार उपाध्यां । साधु सकल गुख मातए
। मपू जाप मन बचन कथा । त्रिकरख सुख त्रिकरख प । ।
नक्कर सार संसारमांइ । ओर सरब जंजाल प । पस्यो जीव मुअ
भूल निअ गुख । जग छर बाजी प्यासए । २ ।

कजांढीमलजी माहाराजरा गुण लीख्यते

राग हरीजीरो राखो भरासो भारी । पंच परमेसटीरा पद
प्रखसु । गण गिरवा गुख धारी । पूज कजोडीरा गुखरी माता ।
गुते गल हारी । पूजगीरो ध्यान करो नरनारी । आकडी ।
पंच महाज्जत निरमल पाल । खट कथा सुखधारी । विधरत गांव
नगरपुर पाटख । मव बीचां दितधारी । पृ० २ । सत्रमेद संजम
पात्ते । तपस्या कठख करारी । दोष बयालीस टास मली परण्यो

निरदोसण अहारी । पू० ३ । सम्प्रदाय आठमें जुगत वीराजो ।
 गुण खटतीसैं वीचांरी । रतन हमीरेकी गाढी दीपावो । आचारज
 पद भारी । पू० ४ । स्वरमती कवीराजे अजे । भवियण त्रिदमें
 जारी । दिन किर्ण परदेह दीपे । देख देह जाउं वारी । पू० ५ ।
 वाणी सुधारस इमरत धारा । वरसे निरमल धारी । पीता तपत
 भीटे भव भवकी । सुण समजे नरनारी । पु० ६ । ससि जीम
 सीतल वदन तुमारो । भविक चकोर निहारी । सनमुख बोल सके
 नही कोह । अतसैं आपरी भारी । पू० ७ । मिख सरोवण सारा
 पूजरा । एक एक इदकारी । विनेचंद जिम सरद पुनमको । मूर्त
 मोवनगारी । पू० ८ । सिंध सहुनें सावाकारी । जोग मुद्रा ज्यारी
 भारी । पाटवी चेला पुजरा कहीए । बालपणे विरमचारी । पू० ९ ।
 जसराज जीरो जस अतिभारी । मरुधर देस मभारी । त्यागी
 वेरागी समतारा सागर । ममता कुमत विदारी । पू० १० ।
 सोभाचंदजीरी सोभा जगतमें । विने तणा भंडारी । अंगचेसटा
 यषपूजरी । अहोनिश अग्यांकारी । पु० ११ । इदकी म्हर रही सुख
 सागर । भर पाहरी जवारी । निज कर जाणो कुरणा आणो । मे
 छुंदास तुमारी । पु० १२ । एक जीम सुं कहुं कठालग । महमा
 इदक तिहारी । तुम गुण सिंधु मुज बुध विंदू । कहता न आवे पारी
 । पू० १३ । सेखे काल वीचरता आया । पीपाड सहर मजारी ।
 फागण सुद पख होली चोमासी । वारससि सुखकारी । पू० १४
 । समत १६ सैं वरसैं चोत्तीसैं । रंभाजी उपगारी । ज्यारे प्रसाद
 जडाव कहत है । चाउं नित किरपा तुमारी । पु० १५ ।

लावणी ली

दसी । करम रख नहीं टले करो कोइ साखा कतुराह । साह
 ६२ की अर आहरे सा । मत धवराधो धीरद राखो ।
 धर्म करो माह । धर्म भव मरमें सुखदायर । धर्म० थोरासीक
 फेरा टले । सुगती कीसाह । साह० आकडी । १ । साहक
 क्या डर है माहरे । मा० पुन पापका मोडा अगतमें । सुगते सम-
 साह । छुटके नहीं होबे कोहरे । भव भवमांए साधे चाले ।
 निश्च कत कमाह । सा० २ । नीत अझी राखो माहरे । नी०
 अनित अगतमें बोहत पूरी है । बखी विगड अह । नीत सु रिश्क
 बोहत धाहरे नी० पांशु पंडब रामा इरीचंद गह संपत पाह । सा०
 ३ । पापसे दूर रहो माहरे । पा० दान सीयल तप भाव । पुनकी
 खरपी सखदाह । साय करमती खोवो पाहीरे । सा० कत अडाव
 बेपुर क माह । कत डर है नाही । सा० ४ ।

पार्सनाथजी की लावणी

ठमी कलाली मर न्याये प्याला । कासी देम बढो नीको ।
 आम्नसिख मोमांको कीको । सोम रयो अबनी मिर टीको । प्यारो
 प्राण हमजीको । तु म माता तु मही पीता तू मित्री तू मिष्ट ।
 तु सरशागत सायबा अग तारख अगनाब । मरखमेंसरख आप केरी
 मर पाम जिन आमरो तगे । १ । अर को तीर सुम्पो तीखो ।
 मजन नहीं होय सक नीम्पो । बिपम रस पुद्गलको पाको । बीवको
 जोर कीयो भ्रंको । परो लागो कर्मको । प्रबल बाध कपाय ।
 प्यारु गलग आकमें । भूयो अतन राय । चिट्टे किम थोरासी
 केरो । मिट । पा० २ । राग मोय बाध सीयो सैंठो । होपको

बीच पड्यो आंठो । रोक रयो मुक्तीको घाटो । लुट लीयो निज
 गुणको लाटो । साय करो तुम मायवा । रहो हमारी पूंठ । सारे
 नहीं इण नीचके । मारु एरुण मूठ । कोम लेउं धरम धन डेरो ।
 को. । पा. ३ । कर्मकी चाल हे न्यारी । उदेको जोर अति
 भारी । निमल है आतमा मारी । सया दुख व्होत अब हारी ।
 गुनगार छुं आपरा । तुंम हो दीनदयाल । टालो मोए मिथ्यात
 सुं । मीटे सरन जजाल । एहड मल सालत है गहरो । एह. ।
 पा. ४ । नाथ अब असरणागत तेरी । राख मोए चरणाकी चेरी ।
 मीले एक समगतकी सेरी । आवता नही लागे देरी । मुगतीकी
 जुगती करो । सुण ए किरपा निधान । बगसो द्योय पग भुमका ।
 कर लेस्यु गुदरान । व्होत जस होय आपको रो वो० । पा० ५ ।
 साठकी माल गड सारी । आइ अब इगसटकी वारी । उमर सब
 आलसमे हारी । लगे नही दूसरी कारी । गड गड सो जाणदे ।
 अगही सुरत मभाल । अवसर बीन्यो जात है । ज्युं अरटतणी गट-
 माल । आउ जल छीजत है मेरो । आ. । पा. ६ । चेत सुध
 दूज मुखदाइ । अजेकी लावणी गाइ । मिले मोए मुक्ती कीसाइ ।
 ओर सबरीज भग्पाइ । १६ सें ममत भलो । जेपुर सेखे काल ।
 दीजे दर्शन जडावने । बरते मगल माल । कटे भरम जाल जीव
 केरो । कटे । पा. ७ ।

पूजजी महाराजरा गुण ली०

देमी । मोत्यारो घजरो भूली । पूजपरम उपगारी । ज्यारी सेवा
 करो नरनारी । आकणी । मे तो बीनती कर कर हारयां । तोइ

उपवाड़े पधारपा । बडलुने दीनी टासी । थारी बन्म मोम समाली
 । पू १ । मरा भाया कोसाखे आया । न्याने टावर ज्यु जो-
 लाया । मारे होली मोली आमा । मो आप फरी निरस्ता । पू
 २ । आप तो सहरां सु राजी । कृष राखे हमारी बाजी । मारी
 अर्ज बीनठी मेलो । धारा चेला चोमासे मलो । पू ३ । पूब
 पापब फीना । पुज दरसख मोडा दीना । माने बसे बसे बसत्या ।
 मैं तो निठ निठ दरसख पाया । पू ४ । सती रमाजी उपगारी ।
 न्यारी बग्तमें मैमा भारी । न्याने तो दरसख दीन्यो । मान फिर
 यावर मत कीन्यो । पूज ५ । सब सरीखा कर लेखो । माने
 एक निब कर देखो । मायव निरद बिचारी । मति देखो घूक
 हमारी । पू ६ । ओसबा सुख लीजो । तो केद सुछ्तमें कीजो ।
 रिन्या तो किरपा कीन्यो । माने बेगा दरसबा दीन्यो । पू० ७ ।
 १६ सें अडवाली । बिपरता सेसे काली । बडलुमें पग घरीया ।
 मारा बंझित कारब सरीया । पू० ८ । गखी बापां बहन लुडा* ।
 जडावजी डाल बयाद । सुबने कई बगसीज । कलप्ता
 मास रहीजे । पू ९ ।

देखी । आज शहरमें रहंआमारु सीपडे । सहर सुबटपुरमांए
 बीराजीया । समयठा शुग चोमास । सुगरुजी कम्योएकपुर हमारो
 नाबेजी । बसाबो नीबदास । स० । बग पधारो अपुर सहरमें ।
 आंकखी । १ । तुम बिन बसे सोय । स नब क्खत सीस सारे
 श्यावजो । सफस मनोरथ होए । सु । ब २ । माफी करने को
 मानो बीनठी । बाबी कंसखबास । स दीन्यो दरसख परसख

होएने । पूरो हमारी आस । सु. वे० ३ । आप निरागी हो समता
 रा मागेरु । मोय ममत दीयो छोड । सु० पिणमुज मनडो
 होए ग्यो लालची । तुम सेनारो कोड । सु. वे० ४ । कीनो
 चोमाणो हो चेलारी चायमुं । फिर नही कीनी संमाल । सु०
 हमतो गरजी हो अगजी कर होस्या । मानो दीन दयाल । सु.
 वे. ५ । होड न होवे हो जेपुर स्हग्नी । चेला हुया थारे पंचे ।
 सु. मनरी वंडी खोलो नाथजी । किम लीनो मन सचे । सु. वे.
 ६ । भूलचूरुने हो अग्रिनय अमातना । करीए रुगड कोय । सु.
 पखीये चमोसी होती जी छमछरी । खमीएमाएत होय । सु. वे.
 ७ । चंद चक्रोरां हो मोग मेहज्युं । बस रया मुज नेण । सु.
 वरसे नीर हो धीरे धरे नहीं । सत्रण सणणकु वेण । सु. वे. ८ ।
 मनरा मनोरथ पूरो नाथजी । दूरो गणो तुम वासे । सु. पग पिण
 वेरीवो आगा खिसे नहीं । लवठ नही मुज पास । सु. वे. ९ ।
 ममन १६ सें हो वरस पचावने । भाटग्वा वड बीज । सु. जेपुर-
 मांए हो द्रस जडावने । दीजे कीजे रीज । सु. वे १० ।

ढाल

रे पनजी मूडे वोल् । भांग तमांखुं अमलतिजारो । डणको
 संग निवारोरे खरच अणुंतो कांड फायदो । हीए वीच्यारोरे ।
 वीसन नीवारोरे । वीम, दुलभ मीनप जमारो यू मती हारोरे । वी.
 आकणी । १ । रंग रुप कह स्याद न दीसे । खाता मूडो खारोरे
 । नही मीले जब कइय न सुजे । करत पूकारोरे । वि. २ । माल
 मीले जब मोज करो । बहु मन भाव ज्यू खावरे । कसर पड़े जद

नींद न आवे । मन पिझावेरे । वि ३ । एक बबानी पैसो पसे ।
 तीजे संगत खोटीरे । अँस करंता बिसन सगापा । काँइ अकल
 फूटीरे । वि ४ । आळो मावे नहीं कमावे बेठो दम अगावेरे ।
 सब परकाने खारो लागे । प्राखी घुररावेरे । वि ५ । नसा
 बाहरो नहीं कयबो । मोलत २ चुकेरे । बाळ कुजस्तरो भिन
 नहीं । मरजादा मूकेरे । वि ६ । इश मयमयि इतना अकगुश ।
 परमब पाप उगाडेरे । बिसन बिगूठा होय फजीता इम नरनसोरे ।
 वि ७ । १६ सें एकसट मलबो । पाँचम पख ठबवास्तोरे । अपुर
 माँय बडाल जुगतसु । कइ दितकारोरे । वि ८ ।

देसी । फलफलीया तेरा कटी बी बालपबो इमखेस
 गमायो । मोचन प्रिया बसको, बूढापामें अरा सतावे । खार्ता पीठा
 टमकोरे । बूढापा बैरी किय बिद यासी भांसु फूटको । वृ १ ।
 आकडो । बी मोठ मइ नेखाळी मंदी । दांत पडया सब डीला ।
 नाक करे सुबबामे पाटो । केम मया सब पीतारे । वृ २ । जी
 पोडां हाथ देहने ठठे । कमर करडी खीनी । हांग पकडने डिगटो
 बासे । सुइ बुदने खो दीनीरे । वृ ३ । बी बहुबा जोडयो कांस
 कापदो । कळ मरसी तू बाकी । लाय सफा नहीं पहर सका नहीं
 । होडा का का बाकारे । वृ ४ । बी बोसातो बोसक नहीं देवे
 । छीछ न माने परका । साखी बुइ नाठी कइसरे पडयो
 रहनी मरखारे । वृ ५ । जी दोय पेटकी हांडी माँय । खीर
 राखडी होवे । बेटां सबडे खीर खाँडने । बाबो दुगसुग बोवेरे ।
 वृ ६ । जी बेठा खाबो डुकम अलायो । पर दम अगाबो । फुरसां

जेस्यो खायन्यो सरे । नहीत जाय कमायोरे वृ० ७ । जी पीसा-
 पोवा करां रमोइ । टावर टूट गेवे । जाय पुकारो वेठा आगे ।
 मासु काम न होवे । वृ. ८ । जी वेठा वात सुणे नहीं तिल भ
 वैरांरा भरमाया । वरमें वेठा माला फेरो । कांड कमाण आया
 वृ० ९ । जी अठी उठीग धका लाग्यां । पूगे हो गयो कायो ।
 कुण सुणे किणने कहसरे । जाणे काग उडायोरे । वृ. १० । जी
 एरुत खाट पिछोफडे पटकी । कोय न आवे नेडो । कुरा कुरा
 करमूड पचावे । डोमांने मत छेडोरे । वृ. ११ । जी घरसुं गेटी
 करडी आवे नरम खीचडी भावे । दातासुं चात्री नही जावे । मन
 दीलगीरी न्यावेरे । वृ. १२ । जी दोरो खरच चलावां
 घरको । टावरया प्रणाणा । थाने माल मसाला भावे । माने भाग
 नही खाणोरे । वृ. १३ । जी मीख्यो ग्यान गयो गेवाड । पडे
 ध्यान में घाटो । भग वजारा धाडो पाडयो । लूट लीयो सब
 लाटोरे वृ. १४ । जी पूरवपूजी खाय खुटाड उमर लंगी पावें ।
 जमदूत जग घाटी पकडे अंतममे पिस्तावेरे । वृ. १५ । जी पाप
 करीने माया जोडी । घरका फिर फिर जोवे । रोग असाता उडे
 होय जग आप अकेलो रवेरे । वृ. १६ । जी रोया गरज सरे
 नहीं भोला । हुंसीयारीका काम । भव भवमां ए साथे चाले ।
 प्रभूजीरो नामर । वृस १७ । जी ग्यानी होय सो गत सुघारे ।
 मूरख मरण विगाडे । बाल मरणने पंडीत मरणो । केड जीते केड
 हारेरे । वृ. १८ । जी आया जाया सगा सनेइ । चित नहीं देवे
 परणी । दोस नहीं देखो । किसीने । जोवो आपरी करणीरे । वृ.

१६ । जी जीवठहारी मार न पूछी । भिदभिद पाइयां बेला ।
 मोबा पाले जात कीमावे । रोब द दे हलारे । वृ० २० । जी
 शिप सबनीत सुबात्र घेटा । बिरला जुगमें पाव । जीतब मरख सुपारे
 दोन्यूँ ठठसराकब बाबेरे । वृ । १६ छ एकठठ माइबे । गो
 गानमी बलाख । जैपुरमांए बढाबनेसरे । घरा कीयो नुक्साबारे ।
 वृ० २२ ।

श्री मधीरजीरो स्तवन लीख्यते

इसी लंबा सीपाइफी । खेत्र विदेह बीराजीयाजी । श्रीमिद
 स्वामी । होजी मारा अत्र जामी । हु इय मरत मोम्हारे ।
 सीकलत गामी । आकडी । १ । बिन देख्यां मन हुससे बी ।
 श्री हो० बीम धात्रिक जलधार । मो २ खबद बिधा नहीं
 मा कनेशी श्री हो० पांख नहीं तन मांय । ३ । बिषापर मित्री
 नहीं बी । श्री हो० गिख बिद मेल्लो याव । सी ४ । वर
 दीमात्र आप्तोशी श्री हो० बिषमें बिखमी बाट । सी ५ ।
 आडा हु गर बने गशाजी । श्री हो० नदियांमो कपघाट । सी
 ६ । इय मय आप सह नहींजी । श्री हो० बनखा उगति घर
 सी ७ बिन रुत्रगारनी आकरीजा । श्री हो राखो कपूनी
 इजूर । सी० ८ । मबसागरमें मरमनाडी । श्री० हो फरी अनती
 बर । सी ९ । अब तो न्याव निबेडदोजी । श्री० हो बी ममत
 ममत गयो हार । सी० १० । मायत जावे बीमबाजी । श्री० हो०
 बालक किम रहलार । सी० ११ । आप तो मोव पदारस्योजी श्री
 हो मानेइ पार ठठार । सी १२ । मबि ए हु अमबी हु बी ।

श्री० हो० सो तुम देवो बताय । सी० १३ । धीरज घर करणी
करुंजी । श्री० हो० मनको भरम मीटाय । सी० १४ । पूरवघर
दृष्टि धराजी । श्री० हो० जवन साधुजी सो कोड । सी० १५ ।
चरण लागी सेवा करे जी । श्री. हो. हुं नहीं करुं जारी होड ।
सी. १६ । दूरे रह दर्शण करुंजी । श्री. हो. एसो कीजे उपाव
। सीव. १७ । बार_बार करे विनतीजी । श्री. हो जैपुरमाण जडाव
। सी. १८ ।

बीजे कवरजीरी लावणी लीख्यते

दे धन धन जंबू कवरजी जोवनमे समता लीनी । कछ देस
कसुंवी नगरी । देखतां सत्र मन भावे । सेठ धनावो धगकर दीपे
। बीजे कवरजी सुत थावे । बाल ख्याल कर जोवन वयमें । सत-
गरुकी संगत पाइ । सर्व व्रतामें सील बखाण्यो । विजेकवर सुण
हरखाइ । किसन पखरा त्यागज कीना । उत्तम काम कियो हदरी
। भर जोवनमे सील आदरघो । बीजे कवर विजया कवरी ।
आंकडी । १ धन सार बलि सेठ दूसरो । तिणहीज नगरीकमाइ
। सुंदर मंदीर रिध संपदा । पुनवंत पुत्री जाइ । चोसट कलावती
सुलक्षण । रुपवत बहु चतुराइ । पूरव पुन संजोग धर्मरो ।
सतियांरी संगत पाइ । सील प्रसंस्या सुणी निज सरवण । सुकल
पख सोगन सबरी । भर० २ । माहो माइ करी सगाड । मात
पिता सह सुख पाया । जान मान दे बहु आडवर । प्रण पात निज
घर आया । रुपा रेल केल कंवाज्यु । नमन करी सब पाए पढी ।
सज सोला सिणगार सुहागण । पीड मिंद्रमज आय खडी ।

लौकन खोर घटा चढ़ आइ । अमरमें अमक विझरी । म० ३ ।
 सीस राखडी काना कु डल । नक बंसर चूपा चलके । मुख तपोल
 मांग मर मोठा । कंधू हार हीये हलके । रतन जडव घूडा अक
 काँक्य । माजूबंद बरियां सब क । हुलडी ठीलडी चोसरमाछा
 बीच बीच हीरा दमक । करमें मुदडी । औडस जु दडी । लिप्तपट
 बिदली रहफररी । घन घन आवक पुन प्रमाप । बीजे क्वर ।
 बि० ४ । रिचक मिमक धुपर बमकली । ठमक ठमक पगछी
 मरती मय्यय मय्यय कैरु मफल । गज गति चाल जल्ली वाली ।
 बदन दीपाती मन ललचाती । मदन दीपली मदमाती । कबल
 रख रख नेत्रांमें । कामीकी छली घरराती । सांगोपांग सरग
 चोपानी । मुख आगे ठाडी अमरी घन० ५ । लटक लटक
 करतो बडु लटका । मुलक मुलक मुखडो मोडे । मधुर मधुर
 बोले मन गमती । प्रातमसपी नेह छोडे । खडी खडी कबली
 अगहरी । बोल कठख तुमरी छली । हुकम कने तो सेठ
 बिसरामो । नदीप्र पाडी घर आली । आँट न सोलो मुखे न
 बोली । करक्या कनकसयरी । घन ६ । हम कतछली ।
 कंध रीजाती । हे बर हीये हुलसाइ । बिजे क्वर कहे कम
 नही मज हे सु दर तु किम आइ । बात बात में किस्तन पछरा
 त्याग कीया मन डिडवाइ । तीन दिवस तो दूर रहो तुम । पीछेसे
 आखी आइ । टूटी आस मह निरासा । अब क्य सार करे हमरी ।
 घन ७ । बिलख बदन देखी करी को । कतछाये मीठी बाखी
 । दिसको दर्द कडो हम सेजी । हे सु दर किम कुमलाखी । आज
 बीर में मुफल पखरो सीलमय लीयो हित आखी । अकतो मारे हुवा

सर्वथा । तुम परणो बीजी साणी । सेठ कहे सांभल सुलक्षणी । तुम
 सरखी मिल गह नारी । तो कुंण आपद लेवे गलामें । समतामे
 सुख है भारी । भली बिचारी कर एक तारी । तरी जास्यां दोन्युं
 भवरी । धन. ८ । छानी बात कठालग रहसी । प्रगट हुवा होवे
 हांसी । साध सतीने देसी परीसो । मात पिता बहु दुख करसी ।
 कथ कहे तुं सुणए कामण । मन वच काया बस राखो । धर्म
 ध्यान कर काल गमास्या । अपण मुख सुं मत भाखो । एकण
 सेज्या सील पालस्या । तप जप कर देइ दमस्या । प्रगट हुवासुं
 संजम लेस्या । करणी कर भव जल तिरस्यां । सेठ सेठाणी
 एकमतो कर । ग्यान पढण लागी लिवरी । ध. ६ । जिनदास श्रावक
 सुपनामें । निर दोषण ले अन पाणी । सैंस चोरासी महाश्रमण
 मुनी । प्रतिलाभ्या उत्तम जाणी । जागे तो काइ एक न दीसे ।
 उत्तम फल बीसवा बीसे । बीमल केवली तुरत पधार्या । पुछे कर
 नीचो सीस । भाखो स्वामी अंतर जामी । बुधी निरमल है तुमरी
 ध० १० । नगर कसु बी सेठ घनावा । बीजे कवर विजीया कवरी
 । बाल त्रिमचारी । बेउ नरनारी तुम मीलीया होसी जारी । सुण
 सुख पायो । तुरत सीधायो । कोसभी नगरी आयो । सेठ बुलायो
 नैन जीमायो । तुम सुतको दर्शन पायो । विस्मय थायो । कवर
 बुलायो करणी है इनकी जवरी । ध. ११ । सुण हो पुत्र देवो
 उत्तर । हमने खर नहीं कांइ । दीजे सिख्यां लेख दिख्यां । ह
 बधव ने या बाई । घरमेइ पालो । दोषण टालो । संजम कठण
 व्होत भाइ । नहीं मानो तो जोर नहीं मुज । हे अग्यां जिम सुख

पाइ । परण्यां छां बीम उखर करने । पर छोड़यो बेटा कठरी ।
 प १२ । गुरु अराबे आत्म साबे । तप अप खप करखी कीनी ।
 । सेठ सेठखी बड़ मर प्राखी । बोडामें मुगली खीनी । १६ स
 बासट फगस बड़ । सनीवार तोमी आखी । जेपुर्माए जडाव
 साखी । गाए उगम गुब वाखी । बार बार जिनराज परगमें ।
 बंदखा हे मस्तक नमरी प १३ ।

श्री मधीरजीरो लीख्यत

आबे पर लटकतो । कनक भज महाराज । पडियां अटकतो
 । ए बेसी । म्हा विदेहमें बिराज । प्रभूजी हु इश मरत मोम्कारोरे
 । मर दुख बारो । मुज ततोत्री कृपानिषस्यामी । १ । आंकडी
 । सैधु माखस कोष न दीसे । आबे तुम समाचारोरे । म० २ ।
 मन मारो वसन । बिबडो हुलस । देखत तुम बीदारोरे । म
 ३ । सेवक आखीने सनमुख राखो । सफस हुबे अपतारोरे । म
 ४ । कहा कळ में पर नहीं पाइ । पर पिन उडोय न आवेरे । म
 ५ । देव बिघ्याघर मित्री न दीस । सो तुम माग दीखावेरे । म
 ६ । म्हर करी मुज मरख मीटानो अनम करा नही आबे २ । म
 ७ । सेजेअसहबमुख सागर । दोन्यू दुख मिट आवेर । म
 ७ । अठमें नाखी ने केवल ग्यानी । नही इख दुखमी आरोरे ।
 म ६ । बीसुर बीसम रपाजी म्हा विदेहमें । एक दोय अठ
 पदारोरे । म १ । दूर रहु मारो दिस नहीं लागे । राखीजे
 निज सामेरे । म ११ । पाकर होय रहस्य करखा में न्यो मर
 मर दुख मागेरे । म १२ । किरपा कीसे ने दरसख दीजे ।

मन बंछत पूरीजेरे । भ. १३ । इतनी गरज अरज मैं कीनी ।
 मायत विरद धरीजेरे । भ. १४ । सेवा चाउं न किण विध आउं
 निस दिन तुम गुण गाउंरे । भ. १५ । प्हो उठीने वे कर जोडी
 । चरणा सीस नमाउंरे । भ. १६ । कर्म कलेसी करत वखेरा । सो
 तुंम दूर हटागोरे । भ. १७ । समरथ सायब साय करीने । पुदगल
 फंद मीटावोरे । भ. १८ । समत १६ स ने म्हा महीने । दूजन
 पख उजगालोरे । भ. १९ । जेपूरमांय जडाव कहत हे । बीनतडी
 अवधारोरे । भ. २० ।

आलूणकी ढाल लीख्यते

देसी जवुजीरा तावनरी छे । हो नाथजी पाप आलेउं आपरा
 । केइ भातरा । दिन रातरा । उंलालो । किया पच इंदी वीणास ।
 मारचा गल देइ पास । घणा खाया मदमास । दीनानाथनी ।
 सुणो वातजी । जोड हाथजी । आकडी । १ । हो नाथजी । लुट्यां
 छ कायरा प्राणने । केइ जाणने । केइ अजाणने । उ० नहीं जाणी
 परपीडा । चाप्यां कंथवा ने कीडा । चाब्यां पाना हदा बीडा ।
 दी० २ । हो बनामपती तीन जातेरी । केइ भांतरी । छमकी हाथेरी
 । उ० छेद्यां पत्र फल फूले । सेक्यां गाजर कद मूले । खाया भरी
 भरी लूणे । दी० ३ । हो० आचार कीना हाथसुं । चीरचां दातसुं
 । गणी खातसुं । उ० माय गाल्या है मुसाला । खाया भरी भरी
 प्याला । आया उलणयाका जाला । दी० ४ । हो० पाणी अलु-
 च्या तलावरा । कूवा वावरा । नदी नावरा । उ० फोडी सरव-
 रीयारी पाल । तोडी तरवरीयारी ढाल । वरफ घडा दीयागाल ।

दी ५ । हो० अर आर्जसारा जेहीया । मर मर मेहीया ।
 उना ठंडा मेहीया । उ० अर अर अर दीया होल । कीनी
 अर अर अर गोस । मांए मांही मैसरोल । दी० ६ । हो०
 मावसु पुत्र बीझोइया । बबा रोइया । इया इया । उ० कोस्यां
 नानहीया सा बास । प्रपेट पाही माल । तोड्यां पंखीदारा माल ।
 दी० ७ । हो० जू माझने माहीया । रोही राहीयां रस्ते
 नाहीया । उ० तडके माचा दीया मेल । मांए उना पाखी ठेल ।
 आगे होसी पखी हेल । दी० ८ । हो० सीयाल करी खीरा
 मरी । बोडे मरी । उ० मांए पढपढ मरीया बीस । पाप कीया
 मस दीस । कीनी नरकारी नीस । दी० ९ । हो० उनाले बाव
 बीझोहीया । फुल बीछारीया । बल मिचारीया । उ० कीनी
 बागामांए चोट । लाया चूरमा ने रोए । बांही पास तखी पोए ।
 दी० १० । हो० चोमासे हल हाकीया । बेस मूला राखीया ।
 मार्यां आपस्यां । उ० फोड्यां समी कथा पे । मार्यां सांप
 सप छेते । इया नहीं आखी छेटी । दी० ११ । हो० जुना नवा
 कर बेधीया । सुलीया सखीया । नही सोपीया । उ० अर अर
 सीया पीसे । इयां मरी दसपीसे । आगे रोसी देइ पीसे । दी
 १२ । हो० इय दर प्याज्वालेना । सरबत दसकेना । केरी
 पाकना । उ० बलि गीरस न ठेले । दीया उगाडा मेल । कीड्यां
 आइ रेला पेले । दी० १३ । हो० कुड कपट छलता किया । जाने
 राखीया । नही माखीया । नही माखीया । उ० सुए पोले गखी
 मुठ । बाबा पाडे हीया लुट । अंत्र मंत्र मरी मूठ । दी० १४ ।
 हो० परनारी घन थोरीया । खेती होरीया । गाइ होरीया । उ०

देख्यां तमासा नेती जे ताल्यां पीटी होइ हीजे । बाल्यां गाइ घणी
रीजे । दी० १५ । हो० अगण वाढ गुरां तणा । बोल्यां गणा
। असुखा वेणा । उ० दुख दीया मे अग्यानी । निंदा कीनी छानी
छानी । नही धाम्यो अन पाणी । दी० १७ । हो. भोजन भली
भली भांतरा । आदी रातरा । खावा सातरा । उ० पीया अण छाण्यां
पाणी । मन कुरणा नहीं आणी । पर पीडा न पीछाणी । दी०
१७ । हो. सासु सोऊ सुवासणी । पाडोसण भणी । संताइ घणी ।
उ० मुख बोली माठी घाल । केड दिया कूडा आल । तपसी रोगी
घुडा बाल । ज्यारी नैररी संभाल । दी० १८ । हो. शंशय कीया
में मोटका । कोइ छोटका । हुना खोटका । उ० रुगी छाने राख्यां
पाप । सो तो देख रया आप । मारे थैड माय बाप । दी० १९ ।
हो. स्त्रीसुं मांता पडावीया । गरव गलावीया । जीव जलावीया ।
उ० मारी जूने फोडी लीख । देठो बापीरे नजीक । नहीं मानी
गरु सीख । दी० २० । हो. थापण राखी पारकी । केड हजारेकी
। साउकारेकी । उ० देता कीया सीट पिट । माग्यां तुरत गया
नट । लीया सामूलाइ गिट । दी. २१ । हो. तप जप सजम
सीलगी । देता ढानरी । भणता ग्यानरी । उ०. दीनी मोटी
अंतराय । तेतो भुगती नहीं जाय । पडियो करसी हाय हाय ।
दी. २२ । हो. मात पिता गुरु देवा तयो । अग्नीनेपणो । कीयो
घणो । उ०. बसीयो चोरासीरेमांण । ज्यांसु कीयो वेर भाव । खमो
खमो चित चाव । दी. २३ । हो. सार करीने संमालज्यो । मती
विसारज्यो । पार उतारज्यो । उ० समव ओगणीसैं वासठ । भांको

मती फरो हट । इसण दीन्यो अवे मट । दी २४ । हो आले-
क्या हम कीजीए । मिछपां डुफडं दीजीए । करम छीजीए । उं
अपुरमांय अहाव । आशी उअल भाव । दास कीनी घर थाव ।
दी २४ ।

घन्नाजिरी लावणी लीख्यते

राग । गोरी ठो बाली सासरे । तुम कभीओ फिर आना ।
कभी तो कि आता । देसी इसमें मीसली छे । बाद भी अरिइत
सिब सरब साधु । सिब मैं नमन करु निज सीस मानसैं बाहू ।
इस अंबू दीपमें । नगरी क्य कैदी सोचे हो । नगरी सिहां म्हा
नामे । सुधारय भाइ होये । एक घन्नानामे । पुत्र रतन अिथ आयो
रतन । प्रसूता है पूरी बतीस । कोड परमायो । दिसकर दीपे
ससि अिम सुरत सोमागी हो । सु । घन घन्नाजी महाराज बडा
बैरागी । १ । आंकली । न्यारे म्हास बयालीस मोम । श्रीगमिग
ओली । श्री पखा साली बरोख । भोप लटकता मोली । सुख
लैखी सुदबतीसैं परबद्ध । नारी परयाइ बहु दत डायजो । अन
घन लीकमी न्यप । न्यारे सेज सकोमल । बंदरे प्तुराई । पखी
सुख बिलसे घन्ना । दोगेब कसुर नार । कहु भोगठयो विसतार
। दसा अब आगी । दसा पत २ । लीयो ओवन बयमें भोग ।
भोग तब दीनो । मो महावीर समीपे । पंच म्हा बरत लीनो ।
मुनी आव बीब छप भगत । अकिगरो लीनो । अवि निठ पाखीमें
अन्न पाल । पारखो कीनो । न्यां कंकर करदी बह । नेप तब
दीनो । मेह कर तप अप काडयो सार । मरखसे बीनी । एक मन

वच काया । सुरत मुगतसे लागी । मुग. धन. ३ । मुनी भएयां
 इग्यारे अंग सग थेवरने । संग थेवरने । संग, ए सह परीसासुर
 । मार निज मनने । सय कितोय नान मद लोभ । कपट डिढ
 समगत समजमे सील । सुधारस पीनो । श्री वीर संघाये । उगार
 वीहार करंता । वीहार घणा घणा गिराम नगरपुर । पाटणमें
 चिचरंता । रया गजगरीने वाग । अनुग्या मार्गी । अनुग्या । धन.
 ४ । जन गड पधाड । सेणक मन आणंदा । मन. बहु हरक धरीने
 । भेटयां गीर जिणरा । राय सुणी देमना पूछे । सीस नमाइ ।
 सीस नगला नतनमें । कुंड इधक मुनी थाइ । जीन भाखे सेणक
 साध सिरामण सारा । सिरा. पिण रजमांएतज । धन धन्नो
 अणगारा । ऊठो कारण सामी । सुण वानी रुच जागी । इच्छा. धन.
 ५ । नाखे अन हाणी । एवो जाणी काग कुता नही वंछे । लेवे
 हित आणी । जीत्या इद्री पचे । सुण समरण राजा । मुनी गुण-
 ताजा । धना मुनापे जावे । मुनी. देइ प्रदिखणा । लुल सीस
 नमावे । तुम धन हो स्वामी । अंतर जामी । गुणरो पार न पावे
 हो । पाग प्रणाम कराने । आया जिण दीस जावे । द्रसण अवि-
 लाखे । फिर फिर जाके । जैन धर्मरा रागी । धर्मनो. । धन. ६ ।
 नय मडना मारे । मास सथारे । स्वाग्थ सिध अवतारो हो । लीयो.
 चय जामी मुगते । खेव विदेहमे जारो । १६ सें ६२ तिथ तेरने ।
 म्हा महीना माही । महीना । आ करी लावणी । जेपुर शहर
 सवाड । जडाव कहे जिनराज लाज हे तुमने । लाज. अब वेगी
 कीज्यो । मार तागज्यो हमने । अछती वंछे छती रिध तुम त्यागी
 हो । रिध. ध. । ७ ।

जबूजीको सत ढाल्यो लीख्यते

नमस्कार नव पद मणी । होत्रो उगति माख । कमा पटना
साखसु । करस्य सील बलाख । १ । पाप्मन भीरीना ।
भी सुपरम गखवार । तेहना सिप्य दुषा दीप्ता । भी बंधु बख-
गार । २ । वरम केवली मर्तमें । इख बोझमी अ स । इशमें संकर
छे नहीं । माख गया भगवत । ३ । दाख बिरमचारी परबने ।
त्याग दीवी प्रमात । कुटम सहु प्रतबोधने । सीयो आपनी साय
। ४ । सांमलज्यो सहु को समा । बिक्रपा आसत छोड । बिरला
होसी अगतमें । बंधुरी बोड । ५ ।

ढाल पहेली

देसी सीलबंतीराखे । अंडुदीपरा मरतमें । देस मगब सुखकर
। मनीषख राजगारह अति दीप्तो । देवलाठ अनुहार । म्नी
सुखन्योजी भीरतमुषावेखा । आकशी । १ । भाग बगीचा
बाबडी । गडमिंद्र बाजार । म सेठ बमें सन्यापती । सीखमीरो
अवतार । म सु. । २ रीखसुव एक सठ छे । सोनैया क्लिनमें
कोड । म मयनादिक रिच सोमती । और नहीं ठख बोड ।
म. सु. ३ । सेठाखी छ धारखी । सुगी सेब मोकार । म सुपनो
पूछे मरतारने । होसी पुत्र उदार । फल मडख कुत बीबडो ।
सुखने हरक अपार । सुद्र । सु. ४ । दापख टासे गरमना ।
दोही दान रिचार । म पूर माखे अन्मीयो । अखे देव कुबार ।
म सु. ५ । बम म्दोकर मांडीयो । खरप्यो बन अपार । म
कुटम सहुनी साखसु । म्बु नाम कुबार । म स. ७ । बाल

ख्याल पुनवतना । कहेता न आवे पार । भ. कला च्होत्र पुत्पनी
। सीख थयो हु सीयार । भ. मु. ८ । आठ सगायां सांवठी । देसी
सरीखी जोड । भ. कीनी म्होरत जोयने । पूरे मनरा कोड । भ.
मुण. ६ ।

ढाल दूजी

देसी पनजी भूडे वोल् । घरम भाभ चढ मुधर्म स्वामी । राज-
गिरीने फरसेरे । घर घर मांए रंग वदाड । हिवडो हरसरे ।
आज रंग वरसेरे । आ मारा सतगुरुजीरा दरसण करसारे
। आंरुणी । १ । बहु नरनारी । सज सिणावारी । होडां होडी
जावेरे । मुण जवुजी आणंद पायो । मन उमावेरे । आ. २ ।
मात पिताने पूछ करजी दरसन करवा आवेरे । हाथ जोड गुण-
गिराम करी । निज मीस नमांवेरे । आ. ३ । वनणा करने
सनमुख बैठा । जुडी प्रखदा भारीरे । साध साधगी श्रावक श्रावकां
खुली केसर प्यागीरे । आ ४ । पाट वीराजे घन जीम वाजे ।
वाणी इमरत परनरे । स्वात वृद जीम सारी पुरखदा । श्रवणे
फरसेरे । आ ५ । भिन भिन दे उपदेस मुनीसर । दुर्लभ नर
भय पायोरे । तप जप परची लागो ले ल्यो । अवसर आयोरे ।
आ. ६ । दन गोलरो जोग मील्यो है करणी हो सो कर जारे ।
दान शील तप भाय भगत कर पार उतर भरे । आ. ७ । तन
धन जोयन आउख छीजे । मूरखने नहीं सुजेरे । पुदगल ढंग
पतग रग ज्यू । को गीरला वूजे रे । आ. ८ । माता पिता सुत
वेन भारज्या । सुवारथसु भय प्यागीरे । भिन मतलब कोड वात

करे सो । सागे खारी । आ ६ । पत्त पसकरी खर नहीं ।
 हु सीपार हुबे सो आगो । मोह निद्रामें गाफल मत रहो आय
 सतगुरु सतगोरे । आ १० आधी रातरा पुत्र आयो । हरक
 बधावा गावेरे । फत्रर मई जव गुजर गया । क्यो सुपना आयारे
 । आ० ११ । इत्यादिक उपदेश सुखीने । पर हर मन कंसावेरे ।
 क बनया जिह्वा दीसयी आया । उख दिस आवेरे । आ १२ ।
 परतां दरवाजो पड़ियो । मित्री हव गयो डेटर । अइषिय सु
 पाछा फिर आया । बाय सत गुरु मेटेरे । आ० किरपा कीजे
 खरबी दीसे । बरत करानो चौबोरे । मित्री मरख अजाखक पाम्यो
 । हे अग घोघोर । आ १४ । बन हो स्पामी । अवरजामी ।
 कष्टी अमरी फांसी रे । नमस्कृत कर परहु आया । बदन
 उडासी रे आ १५ ।

दोहा । मरख सप्यो मित्री तयो । कह माताजी एम ।
 पुन्याइ बहक्यतपी । हू आयो कुसल चम । १ । पाधे हरल
 बधावखा । बांटी गुल मर बास । मन्म मोदव कीजीए । बरस्यां
 मंगल बार । २ । मोदव कसो किय करखे । खिय खिय कीजे
 आव । समे समे मरखो कयो । ग्यामी मीया माव । ३ । तप
 अप संजम मीलनी । खिय एक सफली बाप । काल अनंतो बह
 गयो । आरंभ प्रगरा माए । ४ । बन साधु बन साधवी । बन
 अरु सैन धर्म । और सहु अंजलने । छोडी मिथ्या मर्म । ५ ।

ढाल त्रीजी

देसी बेरागी धयो मारो आमख अस्यो पीरोरे । हे मात्र
 सरम सत छे रे । पीर बचन प्रमाद्य । पिय आपखबी किम

निमेरे लग रह घर ले तांणोरे । बेरागी थयो मारो जायो जंवू
 कवारोरे । ते किम राखीए । प्यारो प्राण आधारोरे । वे. १ ।
 आंकणी । कुण घरको कुण पारकोरे । सुतलवकी मनवार । पुत्र
 मिल्लण मिनी मग्ण । थारएकण सातोरे । वे. २ । इम सुणता
 सका पडीरे । डव डव भर गया नेण । हे जाया किम बोलतोरे ।
 आज ओपरा वेणरे । वे. ३ । भवसागर में भटकतारे । मिल गया
 सुद्रमसेण । वचन अपूरन साभल्या रे । खुल गया अंतर नेणोरे ।
 वे. ४ । सुणवो ते तो मत छे रे । करवो अवसर देख । सुंजाणे
 तूं नानड्यारे । गेलो आण विवेकोरे । वे. ५ । जाणु छुं सही
 मातजीरे । मरणो पग पग लार । नहीं जाणु किण थानकेरे । किण
 बेला किण नारोरे । वे. ६ । सगपण सहु रांसारनारे । मीन्या
 अनती जीनार । धर्म मामग्री दोयलीरे । दुलव ए आचारोरे । वे.
 ७ । हित बछो ज्यो पुत्रनोरे । द्यो सजमरोजी साज । काल तके
 सिर उपरेरे । ज्यु ज्यु तीतर उपर नाजोरे । वे. ८ । चित
 चमय्यो ठमव्यो हीयोरे । आजनिहेजोरपूत । जाणुं किण भरमा-
 वीयोरे । किम रहसी घर सुतोरे । वे. ९ । खयर नही छे आज-
 रीरे । कुण करे कालगी वात । करणी जासी आपरीरे । कुण
 वेटो कुण मातरे । वे. १० । इम सुणतां धसको पडयोरे । घरणी
 ठली ततकाल । जागीज्यो जाणसीरे । दोरी पेटनी भालोरे । वे.
 ११ । बल्यो मीतल वायरोरे । चेतनता थइ माए । कां सिरजी
 नही दाभटीरे । बिलख वदन बिल लायोरे । वे. १२ । धीरज
 राखो मातजीरे ग्यानी वचन वीचार । मरता जाता नै रहेरे ।

हुन्ना होय हजारेरे । ब १३ । बोली टाकी सायनेर । अमरख
आखीरे रीस । हिरगत्र आवा दु नहीरे परयो बीसवा बीसोर । ब
१४ । पुत्र एक अन्मा पछेरे । करबो थारी बीदाय । पोतो गो
खीसायनेरे । बहुए लगाबो पायोरे । ब १५ ।

दोहा । हे माता प्रसायने कमी पुरस्यो दु स । थोयो मत म
आइरो । आब बीव करसु स । १ । तो पिण मनरी कडवा । सबने
दीयो जताय । ध्याय रचाठ पुत्रनो । ज्यो आबे थारी दाय । २ ।
निब २ सा मशी कडे । पुरा वत्रसु आब । अंबूजी पिन ओर
। प्रसवारा पछखाय । ३ । मात पीता बहु हरखसु । ध्याय
कीयो तिल बार । कोइ नन्याष्टु बायजो । मरीया ब्रब मंडार ।
४ । प्रस पदारयां पदमण्यां । माता करती कोड । अखीग्रज्यो
सासुजी । अन्न गोप्यांरी खोड । ५ । पीसंग पवरया सांबटू ।
वउदिम सटके लुम । वट्र ध्यान लगायने । बीगी बीम पर मून
। ७ ।

ढाल चौथी

हेमी मोप्यारी गजगे मूली । मिछकर आटू नारी । ७ तो
मज सोले सिखगारी । गिकम म्हीमछी आइ । अरुजी नही बक-
साइ । सुखा रडीयाप्ता । मह बोसोनी बचन रसासा । जाइखी
। १ । मामोइ नही म्हाले । सब ठपी नीसासा नाके । आइ बैसी
नहीं आइ । इम ठमी मनने निमगाइ । सु० । २ । कोइ गीत मात
नही राखी । आइ प्रथम कउछमे माखी । तो भोजनरीझइ आस ।
सबकीनी आप तिरास । सु० ३ । इस पखी छे हममे । सो रै

गइ मनकी मनमें । चुक नही पिया थारी । करणीमें कसर हमारी
सुं ४ । कोइ सार न पूझी जाती । पिया कठण बोहोत तुम छाती
। चुक होवे तो बतायो । विन कारण किम कलपावो । सुं० ५ ।
गांठ हीयारी खोलो । म्हा सुं हमकर मुखडे बोलो । मैउवी आप
हजुरो । अब आस हीयारी पूरो । सं० ६ । बोल्या विन नहीं
सरशे । बतलाया जीवडो त्रसे । हुकम करो तो वेठां । अब कांइ
मरजी थारी सेठां । सुं ७ । आद्र नही सतकारो । उतमरो नहीं
आचारो । में जरसीसु नहीं आया । थे पकड हाथने लाया । सुं.
८ । त्यागे सो किम परणे । मैतो वेठस्यां थारे घरणे । में लागी
थारी लारे । परणोमो पार उतारे । सु० ९ । म्हाने आडाने किम
प्रणी । वारे हिवडे कपट कतरणी जोमीडे दियो वीसवामो । घर
हाण लोकमे हामो । सु० १० । मत कगे खाचा ताणी । पतली
छाछ खमे नहीं पाणी । दातास सुम भलेरो । वेतो उत्तर देवे
सवेरो । सु० ११ ।

दोहा । उत्तर पेलो जाणज्यो । मुखड न बोले वेण । मामोड
जाके नही । दूजो उत्तर पीछाण । १ । इम सुणता सासे पढो ।
धारी न रही वीर । गोप २ अंग सालीवो । वचन रुबीयो तीर ।
२ । हे सुख लेणी मुदरी । भोग रोग मम जान । ग्यानी देवा
माखीयो । विष मीलीयो पकवान । ३ । देवतणा सुख भोगव्या
जीव अनती पार । जिणमु दुलब जाणीए । मानवरो अवतार । ४ ।
त्याग्या विन तिरपन नही । निसचे ग्यानी वचन । त्रिणोवेतो
त्वामदो । डिढ राखो निज मन । ५ ।

ढाल पाचमी

दसी घन घन साधुजी सहे परीसा । मीलफर सारी न्यारी
न्यारी । अदसुत कअ पञ्चायमी । पितमन निलमावा क्ये ।
कहेतु जुगत सुगायत्री । १ । घन घन अणू फर बेरागी । घन
ग्यारी अस्ततमी । कनकचल सम मन पञ्चायमी । कोइ बाये
बाप हजारजी । घन आ० २ । के चाकी कोइ नही रह बाकी ।
कहा जोगी हामजी । क्यर वे सो तुरत डिग जाव । पिब सुरा
खंजु स्यामजी । ३ । कइसी दे जो आर कहीज । बोलो सुत्रन्यायजी
। ह हतु कोइ कइ तो । मारी न आवे दायमी । प० ४ ।
मैपिब कहु कोइ कया अनरी । न्यो सुयो कित सुगायत्री
। सगली सनमुख होय फर जोडी । कइतइत बपन फुर
मायमी । प ५ । हेत दिसट्य कइ जुगत करीने
करय न्याय मीलपायमी । रमक कया ललीतंग इयरनी सुष
मन कपायमी । सु । ६ । कइतां कइसी गर बहु रेखी
कर विधानो म्हेरजी । सुष्ट पांचसे सारे स्यायो । आयो प्रमो
पोरजी । प ७ । घनरी पेनी बांकी सेत्री । मेली मावा मासुजी ।
बंजु देखी गर सब सेली । पग चिपीया कठफरजी । प० ८ ।
पठदिस पेख आर बं देखे । नटा वज संजजी । न्यो सुन पग उठे
घरतीसु । बाप पुष्टु निरखतमी । प ९ । हम कइतां कइके
पग सुट्य । बडियो मल मंकरजी । आठुनार अर नित्रा बस ।
बागे बंजु इवारजी । प १० ।

दोहा । दाय मोड प्रमो कहे । सर्मल किरपानाय । पिपा
बन्दी आपसी । मै देखी साबाल । १ । निन इषी पाला सुने

। भगत निद्रा थाय । दौय लेह एक थोभणी । दीजे करी पसाय
 । २ । रे भोला समजे नही । विद्या चलावे कूण । ज्यारे धनरी
 चायना । ते करसी टामण दुंण । ३ । विद्या सब संसारनी । भावे
 जाणम जाण । साचा विद्या धरमरी । पावे पढ निरवाण । ४ ।
 नारी नागर सारखी । प्रगरो धनरथ मूल । दिन उगे गृह त्यागसुं
 । देदो त्यां परधुल । ५ । हे सामी किम छोडस्यो । इचरज वाली
 वात । ए घर कंचन कामणी । देव भवन साक्षात । ६ । मात
 पिता प्रवारनी । कुण करसी संमाल । भुर भुरने मरजावसी । दोरी
 मोहनी भाल । ७ ।

ढाल छठी

देसी डफकी छे । मातपीता सुन वेन भारज्यां । मुतलव सब
 लागे पृठ रे । जग भूटो हारे जग० । जाय जनम खूटो । ज० ।
 आकणी । १ । दिन मुतलव कोइ ढीग नहीं वेठे । दिसोदीस जावे
 उठोरे । ज० २ । छिन २ उमर जावेरे छीजती । भजन करी
 भरलो उंठोरे । ज० ३ । नारी सारी जव लग प्यारी धन कमाय
 भरे मूठोरे । ज० ४ । सुखमें सीर पडरे सजनको । दुखमे दूर
 रहे रुठोरे । ज० ५ । भरघारे चरसने हरक करजेले । रीतो
 कर पटके पूंठोरे । ज० ६ । तन धन जोवन पलकमें पलटे । तप
 जप कर लावो लुंठोरे । ज० ७ । जमका दूत पकड ले जासी ।
 किणरे मरोसे गाफल वेठोरे । ज० ८ । धन धन करतो फिरे रे
 भटकतो । घाड धरे धरतीमे सेठो रे । ज० ९ । सुख चावो तो
 सजम लेलो । चोरासीरो तातो टूटोरे । ज० १० । इत्यादिक

उपदेस सुधीने । प्रमो सुप्रट सहत ठठोर । अ० ११ । आप गठ
इम सब तुम कला । राखो चरख सरख पूठोरे । अ १२ ।

दोहा । इम कहवां आहु मखी । बोली टटकी छाप । परघन
हुटे पापीया । बोसवां न लुआय । १ । चोर अन्यास्यारे सिरे ।
न्याय मरे नहीं भीख । आव न जाये सासरे । दे ओरोको सीख
। २ । सात पांच बिसबासन । मूसा मार मम्मार । मच्छाबरीरो
नाम ले । म्याठ २ पूकार । ३ । बापजी साची कही । मैं पापी
निरवार । दखा किश रिश राखस्यो । मन मोषन मरठार । ४ ।
प्रतपोषी पासा सरी । और पांचसे चोर । सांसु सुसरा आइ दे ।
मल पिठाभी और । ५ ।

ढाल सातमी

देसी मुर २ फायर को दिवडो धरे हरेजी । आंझी । मोरी
बखाइ एक सिबिझी । बछ छे बंधू क्यारजी । बछ बिसेखे
ज्यांरी कमण्यांजी । मल पिठा परबतजी । कु. १ । बाबा तो
बाज सरइ मुराबबाजी । फायर हीयाग वे दिल्गीरजी । कट्य
परीसा खस होयसाजी । फेज्जु कोमल सरीरजी । कु. २ ।
जावे अमस्ता बीम नीसरयांजी । आया छे मज बहारजी । बाबक
देवे बिरदावप्याजी । चरंजीबो बंधू क्यारजी । कु. ३ । बड बड
पोलां बोवे कमण्यांजी । मर्के आल्यामें मूडा गासजी । फासे
परखीने सार नीसरयांजी । आहु सु दर सुखमानजी । कु. ४ ।
कोइ एक एक नरनारी मुखसु क्येजी । घन २ बंधूक्यारजी । बास
बिरमचारी नारी परिहरजी । सफस करे बा अक्यारजी । कु. ५ ।

कोइ एक मूरस माधो धुणनेजी । इणपर मोले अयाणजी । अन्न
 धन लीछमी वरमे छे घणीजी । नही दे प्रमेसर याने साणजी
 । जु. ६ । मोटे मंडाणे आया वागमेंजी । भेटा श्री गणधरजीरा
 पायजी । दिख्यां दीरागो डील करो मतीजी । सिण एक लासीणी
 सी जायजी जु. ७ । धन धन जंबु कुवारनेजी । चारीत्र लीयो घणी
 चुपसुंजी । पांचसें सताइस जणा लाग्नी धन धन कहे सत्र
 चोरनेजी । तार दीयो प्रवारजी । ध० ८ । नुमती अरावे गुपती
 घोपवेजी । संजम सतरे प्रकारजी । सुत्र सीख्यां पिने अरादनेजी ।
 पूछीने कीया निरधारजी । ध० ९ । वांचणी जवूस्यामनीजी ।
 आजे ताइ चली जायजी । उपगार कीयो भव जीपनेजी । हलुकर-
 मीरी आवे दायजी । ध० १० । सोला वरमारा संजम आदरयोजी
 । करणी करीने काडयो सारजी चरम सरीरी । चरम केवलीजी ।
 पुथ्या छे मुगत मजारजी । जु. ११ । पाट दीपायो श्री वीग्नोजी
 । तारयां घणा नरनारजी । चोथा आरामाए जनमीयाजी । पाचमे
 कीयो खेवो पारजी । भु. १२ । ढाल कथा ने चोपइ देखनेजी ।
 अल्प कियो छे विमतारजी । संखा हुवे तो देखीएजी । जंबू पइने
 इदकारजी । १३ । जु. । न्यून अधिक जे मे कयोजी । हस्त्र दीर्घ
 अयाणजी । मिछामी दुकड तेहनोजी । ग्यानी वचन प्रमाणजी ।
 ध० १४ । समत १६ सें रस वासठेजी । होली चोमासी प्रभातजी
 । जेपुरमाए जडावजीरे । नित नित जोडे दोन्यू हाथजी
 । ध० १५ ।

कलस । जवु सामी । मुगत पामी । बंदु नामी । सीस ए ।
 इदक ओछो । कवि सोचो । गुनो करो वगसीस ए । गु० १ ।

आपकरस सिध कीनो । लीनो नहीं मुझ सारण । सेवक बिन कुछ
सेव करसी । खोलो मगत द्वार ७ । खो । २ । मेहु अपम
अनाथ प्रसूजी । जनम जनमको चोर ६ । मम्यो बान् मर चक्रमाए
। अब आपो तुम ओर ६ । अ० । ३ । पाप पुरो आस पुरो । सेवक
सरखे लीजीए । बार बार मेरी अरज ६ । असे अमर पद दीजीए
अ ४ । आवस आवस फेर अगमें । कइय न पाठ दुखए । परस
हाग तुम सेव करसु । आपो अविचल मुखए । प्र ५ ।

दीवालीकी ढाल लीख्यते

देसी पीचकरीनी । बीस दीन मुगत गया प्रिनबरबी । सो
दिन प्रक बेमासीरे । ऐसी दयारी शीवासी । हे प्रिन कीमये
बासीरे । ए । आकसी । १ । दान दीपक समगठरी बाटी ।
ग्यान बोध उप्रबासीरे । एसी । २ । सत सिनान सिखगार
सीछरो । दीप रुपे रसासीरे । ३ । तप फलान मरमछ मेवा ।
बीमो मर मर बासीरे । ए ४ । किम्पाकी छीबकी । बसक
भरोछ । बैशारी राखो बासीरे । ए ५ । समरस अहे अकर
पोहो । समता करो पर नारीरे । ए ६ । संजम मल्ल मीचपुरकी ।
अष्ट करमने टासीरे । ए ७ । नीद निवार मार निअ मनने ।
फेरम्यो नबकरबासीरे । ए ८ । कइत अबाव बेपुरके माइ ।
बरने मंगल मासीरे । ए ९ ।

पारसनाथजी की लावणी ली०

दमी । छोटख करबारी छे । कइत अनंत दुख सया मागअ
। सुखो प्रसूजी हो । सुखो मरा अ हरजामी । अनासु सयाए

न जाय । केतो सरणे राखल्यो । म्हाराज सुं. म्हा. के मारा
मरण मीटाय । जी. । माग पारस प्रभु कर्म भमावे मोय तार ।
आंकणी । १ । नामी चाकर आपरो मा. । सु. मा. । छोडो
किम अ के लगाय । खाना जात गुलाम म्हाराज । सु. मारा.
मेढो मारी भय दुखदाय । जी. २ । चाकर चके चाकरी माराज
। सुं मा. ठाकर करे निरभाय । अगुण गुण कर लेखवो
। म्हा. सु. माग आप छो सरल मभाव । जी. ३ । कुण
सुणे किणने कहू माराज । सुं. मारा. कुण आगे करूं ए पुकार
। और नही तुम मारखो माराज । सुं. मा. दूढ लीयोरे संसार ।
जी. ४ । आम करी लीयो आमरो माराज । सु. मा. सरणे
आयागी राखो लाज । चर्ण ममीपे राख ल्यो माराज । सु. मा.
मीजे माग वलित काज । जी. ५ । मैं अपराधी अनादको माराज
। सु. मारा. देख ग्याछो जगदीश । तारक विरद वीचारने
माराज । सु. मारा अ तरजामी गुनो हे करो जगसीस । जी. ६ ।
१६ सें बरस बासुढे माराज । सु. मारा. म्हा वद नोमी गुरु वार
। जेपुरमाए जडावनी माराज । सु. मा. वीनतडी अवधार । जी.
मुक्त्यारा मैवामी ।

देमी । मतकर मान गुमान ए दिन सदा न रहेगे तियार म.
प्रभुजीवो पास । जीनेमर तुम गुण यनन अपार । उल लालो ।
मुर गुरु निज मुख स्मरनी गावे । तोइय न आवत पार । प्रभु.
। आंकणी । १ । कमट विडारण नागउवारण । समलायो नवकार
। धरण इ द्र पदमावनी दोन्यू । मानत तुम उपगार । प्र. २ । मैं

मठहीन दीन दुख पाउ । ममठ २ गयो इतर । दीन दयाल
दया कर मोये । पापी पार उगार । प्र ३ । पासे पापाखनाम तुम
प्रगट्यो मोरी मुखइलार । प्रवरु तु रमेपस्कर पारस । मथो-
टपी गार उगार । म ४ । और न चाउ दरसण पाउ । घाठ तुम
वरवार । डुक मर म्हर कती अलुबेसर । दीन्यो निप्र दीद्वार ।
प्र ५ । मन मंगल पित्त चंचल घोडा । दोढत छित्त उग्राड ।
घेर पर न्याठ निप्र गुहमें । ठहर नही हे सीगार । प्र० ६ ।
१६ में तेसठ तरसने । जेपुरमें बरसाल । तुम गुह माल बडाव
जप्त है । बढ पल दीपक माल । प्र ७ ।

पार्सनाथजी

देसी । देखो बहजी इश मोरियारो रुपजी । मामानदख
पास बिसइजी । मां कोइ म्हर कोरीने सामो बांऊन्यो । को
हु हु प्रभुजी अबन अनाखजी । हु कोइ सरखे आयांरी छुन्या
राखन्यो । १ । कोइ एक ध्यात्रे विरमा बीसन महेसजी । को
काइ मैतो बीकण्याठ प्रभु पासने । कां कोइ एक मागे अन फन
सीदमी पीरजी । कोइ कांइ अविचसरेक पदवी दीन्यो दासने
। २ । कोइ एक नाथ गंगा जमना तीरजी । को मैतो बीकनाठ
निबजुख नीरमें । कोइ मारा मभ २ संकित पापजी । को कोइ
खातोजी सुसास्यां प्रभुजीरा सीरमें । ३ । कोइ एकदेरे प्रवत फरबवी
। को कोइ प्रभु विरान्या मसतकलोकरे । पारे मारे आगम
पिबसजी । बा कांइ मोल्लारे मरमाखा पोये मोखरे । ४ । कोइ
एक चापे पाल पापाखवी । को कांइ दोत अरुपी आप विराजता

॥ थेछो प्रभुजी निरंजन निराकारजी । थे. कांड अखेनी अचल
सुख सासता । ५ । कोइ एक पूजे दीपक चमर दुलायजी । को०
मेतो जीक पूजू तीकरण जोगसु । कोड भावे जीक पूजू तीकरण ।
कोइ एक चोटे पान सुपारी फुलजी । कोड, कांड प्रभुजी निरागी
विपे भोगसु । ६ । कोड एक नाचे घुघरीया गमकायजी । को०
काइ प्रभुजील लीन रहे निज ध्यानमें । कोड एक गावे ताल मजीरा
तानजी । को. कांड प्रभुजी प्रवीण पदारथ ग्यान मे । ७ । दृढत
२ मीलीयो साचो देवजी । दृं. भव २ जीक सेवा होज्यो आपरी
कांड भ. थेछो प्रभुजी जीवन प्राण आधारजी । थे. कांड लपटीजी
चरणामें करस्थुं चाकरी । ८ । १६ स वरस ६३ साल रसालजी
। काड जेपुरमे कर जोड कहे जडावजी । थे छो प्रभुजी दीन
दयालजी । थे. काइ भव जलरेक ह्वत तारो नावजी । ९ ।

गोतमजीरो स्तवन ली०

चाल । नित नाम जपो श्रीनो केडो । वसुभुत पिता पृथ्वी
माता । ए तीनुंड सगा भिराता । पो उंठी नित पाए पडो । श्री
गोतमजीरो ध्यान धरो । १ । धर्मध्यान सुकल ध्यावो बली
समरणको लीजे लावो । आरत रुद्र दूर करो । श्री. २ चिंतामण
चींता चरे । अरु कलप त्रिज बंछीत पूरे । कामधेन पय पान करो
। श्री. ३ । मोन पोरसो घर आवे । विन मीखी विद्यां सिद्ध
थावे । देम विदेमा काड फीरो । श्री. ४ । सींघ सर्प सब भे जावे
। अरु चोर धाड अंधा थावे । चीन्ता आरत विघन हरो । श्री.
५ । दान मान राजा देवे । अरु न्यात जातमें जस लेवे । वैरी

हुसमन पाए पड़ो । श्री ६ । बिस प्यासा इमरत पावे । बस रिंग
सोग पर नहीं आवे । सुत पिमाष नहीं सागे चेडो । श्री ७ ।
गुस इतना इश मव पावे । पछ सुखे सुखे सुगती आवे । ससार
समुद्र बगतिरो । श्री ८ । १६ से तेसु परसे । सर केपुरमाण
बडाव कड़े । भजन करी मंडार मरो । ६ ।

सोला सतीयारो स्तवन लीख्यते

राम गोवम नाम अपोजी प्रमाते । सोला सती समरो सुख
दाए । ज्यां घर आसांद रंग बभाए । नांन सीयां नब रीद
सीध आव । मव मव संचीठ पाप पुतावे । सो ।
आफणी । १ । प्राणी सुद्र दोन्यू पाए । बालपणे सुध समकित
पाए । सीपी अठरा रीखबजी सीखार् । पवीतशीरी पदवी पाए ।
सो० २ । सीता हृया राजकुल नारी । प्रतनोप्या रह नेम कुनारी ।
सातसें सखीयां संग छेद सती । संभ्रम छे पद गद गीरनारी ।
पीब प्लाह सीबगत संमारी । सो० ३ । बनबवासा चेत्तया
राखी । छत्रमें बिनरात्र बलांशी । बीर बिबंदनी आद सिपशी ।
सुगत गद कर ठत्तम करशी । सो ४ । कोसल्या सेवा प्रमावती ।
पदमावती ओलादबईती । बीर फाड बनमें तज पती । सील
प्रमावे सिब गद मतवंती । सो० ५ । सुत्तसां सुमत्रा सती बाखी ।
छावे सुव दुवापी ताखी । बंपा पोत्त उपाड मली परे । सील
प्रमावे पद सुर बाखी । सो ६ । मरगावती सती सोलमी बाखी ।
माव सहत बंदो मव प्राखी । ओगखीसें तसठ म्हा महीने । केपुरे
माण बडाव बलाखी । सो० ७ । पोह उठीने कोह सीध नमावे ।

मन वञ्छीत सुख संपत पावे । जन्म जरा ने मरण मीटावे । पांचवी
गत तणा सुख पावे । सो० ८ । हुड होवे नै बल होसी । ज्यारा
नाव सूत्रमे जोसी । ग्यानी वदे सो मुनीए बखाणे । छदमस्त तो
विवहारथी जाणे । सो० ९ ।

देसी । जीला मारी भोटरो उदीयापुर मालेरे । नव घाटी
उलंगनरे । प्राणी । पायो नर भव सार । जोग लयो दस बोल-
नोरे । प्रा० सो एलो मत हार । चतुर नर चेत जा आछो अवसर
जावेरे । लाखां कोडां खरचतां । फिर पाछो न आवेरे । आंरणी
। १ । घर धंधारे कारणेरे । उठे आदी रात । सोच करे ससारनो
। कोइ नही है तीरणरी वात । च० २ । तन धन जोगन जाएछेरे
प्रा० जेम नदीरो पूर । पोट सीर पापनीरे । भूँ मारी घर दूर ।
च० ३ । काचो कुंभ सीसी काचनीरे । प्राणी तिणरो कीम्यो
बीसवास । जतन करंतां जावसीरे । जंगल होसी त्रास । च० ४ ।
तेल जल्यो वाती बूजीरे । प्रा० काया में घोर अंधार । एरण
ठवको मीट गयो रे । प्रा० कहां गया बोलण हार । च० ५ ।
कुटम कवीलो पावणो रे । प्रा० मेलो मढीयो सराय । थित पाका
सब बीखरे । प्रा० जिम आयो जिम जाय । च० ६ । बूढा बडेरा
सब गयारे । प्रा० केइ गया छोटा बाल । देखताड ले चल्यां रे वेरी
। ऐसो कमाइ काल । च० ७ । धन माल धरीया रहारे । प्रा० रह
गया लेण न देण । इम जाणी धर्म कीजीए । आगे कोड नही
थारो सेण । च० ८ । ओगणीसैं वरस तेसठरे । प्रा० जेपुर स्हर
मभार । सीख दीनी जडावजी । वसत पंचमी सुकरवार । च० ९ ।

देसी बीजारी । समद्र वे तो बांछन्पू । बीजाजी । हारे बीवा
मव मल बाक्यो न जाय । कर्म गत बांछडी । बीजाजी । क० ।
आंछणी । १ । मासक वे तो राखसू खी हा बीवा मन बस
राख्यो न जाय । २ । सांछल व तोड स्पू । बी० हा० बीवा
त्रिसना मोडी न जाय । क. ३ । घोडो वे तो मोडसु । बी हा
बीवा । ममठा मोडी न जाय । क० ४ । होरी वे तो खेंच स्पू
। बीवा हा बीवा० बीवा मबठिय खेंची न जाय । क० ५ ।
अन घन सीझमी बैछ ६ । खी हा बीवा आपदा बेछी न जाय
। क० ६ । सोटो वे तो टालदयू । बी० हा बीवा होत कट्यन्प्यो
न जाय । क० ७ । पालु वे तो गालु । बी हा बीवा गरब
न गान्यो जाय । क० ८ । बांदयो व तो खोलदयू । बी हा०
बीवा नह दूठा खोन्यो न जाय । क ९ । सोनो वे तो तोल
स्पू । बी हा बीवा न्हे लागो तोन्यो न जाय । क १० ।
हीरो वे तो प्रखस्पू । बी हा बीवा न्हे लागो तोन्यो न जाय
क० १० । हीरो वे तो प्रखस्पू । बी ११ । बीवा भम न प्रखो
जाय क० ११ । पाखी वे तो पाग स्पू । बी हा बीवा म्यान्नरो
वाग न पाय । क १२ । कस्यो केतो मनाय स्पू । बीवा०
हा बीवा मरठा राम्या न जाय । क० १३ । सडीयो केतो
खमाय स्पू । बी हा. बीवा हंम ठठो नरहाय । क. १४ । पाव
सगे तो भूसीय । बी० हा० बीवा कू बचन सुण्या न जाय ।
क. १५ । पकळयो केतो खोडडू । बी० हा० बी हा बीवा
छलक्य खोडयो न जाय । क० १५ बैरी केतो बीतस्पू । बी

हा. जीवा म्हो क्रम जीत्यो न जाए । १७ । सींघ सपने वसे करुं । जी. हा. जीवा आत्मा वस नही थाए । क. १८ । कागद वेतो वाचलुं । जी० हा० जीवा कर्म न वाच्या जाए । क० १९ । मुगत मीले तो जांचतु । जी. हा. जीवां और न आवे मारी दाए के. २० । पोस मशेतो तेवढे । जी. हारे जडाव कहे जेपुरमांए । क. २१ । पदमप्रभुजीसुं वीनती । जी. हारे तुं तो वेगी कीजे साय । क. २२ ।

मुनीराजना गुण

दोहा । आद नमूं अरिहंतने । म्हा वीर जिनचंद । गुण करवा मुनीराजना । म्हो मन इदक आणंद । १ ।

देसी । हरीजीरो राख भरोसो भारी । व्होत दीनाकी थी अवीलाखा । बाट जोता नरनारी । म्हर करी करुणानिध सागर । पूरी आस हमारी श्री जीरी सुरत लागे प्यारी । मुंद्रा मोवनगारी । म्हाराजारा द्रसणरी बलीयारी । में वारे व्हार जाउं वारी । श्री जी. आंकणी । १ । बीचरत गिराम नगरपुर पाटण । व्होत करो उपगारी । मालव देमपे कीम्पा विसेसन । जेपुर केम विसारी । श्री. २ । पाटे वीराजे छाजे घाजे । सींघ ज्यूं शब्द उचारी । चरचा चिमकीत बीजरी चीउदीस । ग्यान घटा चढी भारी । म्हा. ३ । बाणी सुधारस इमरत धारा वरसे निरमल वारी । मीथ्या खार पुपे आत्मको । समअंकुर उगारी । ४ । ससि जीम सीतल वदन तिहारो । भविक चकोर निहारी । भरत अमीरस हीवढो मीचत । फूली पुरखदा सारी । श्री० ५ । सीतल न्हर चली

समताक्षी । त्रिसना तिरछा बुझरी । दिछ दादुरने प्रेम पपझ्यो ।
 पिठ पिठ करते पुकरी । श्री० ६ । महिमा मोरनि होर फगत हे
 । निरत रच्यो है भारी । म्हे भावो २ भावक सनमुख । सुख रद
 केसर क्यारी । श्री० ७ । भिन रितु बाइछ बीअ भमके । गात्रे
 पट्टा बढीकरी । अतसे भारी । दुष तुम भारी । कहाँ लग करु
 बीसवारी । श्री ८ । पोसठ साछ बडाव जेपुर में । चेत एकम
 उझीयारी । मुख बाखी हरकाखी हीयामें । बडाव दख छबी भारी
 । म्हा ६ ।

साध बनणा लीख्यते

दोहा । सासब नायक समरीए । प्रियमान वीनचद । धर्म
 आचारब आद दे । बद् सरब मुखद । १ ।

देसी रासकी

आद नहु अरिइतने । सिच सकल गुण हुवा प्रसीच तो ।
 गुण छी सखी राखता । आचारजनमठा नवे निषतो । १ । न्यां
 पुरसाने मारी बनखा । दोबो २ दीनमाँए ३र हजार तो । मभ २
 सरखोजी आपरो । और नही मुखे फोहर आपरतो । धन २
 मोट्टा मुनीसरु । २ । बोख हो पद उदम्मायजी । मस धरी निख
 नमु बी सीसतो । अ गदम्यारा आद करी । मस ए मशाबे ।
 गुण सोमे पचबीसतो । न्यां० ३ । साध सकल पद पंचमें ।
 दीप अहदने पनरेजी खेजतो । गुण सवदस बीचरता । ब्रसख
 देखी ठरे मुख नेत्र तो । न्यां ४ । फेर नहु सरबे सोएने । ग्यान

दसण गुण साधे अपार तो । धर्म आचारज मांएरा । गुरणीजी
 संजम ग्यान दातार तो । ज्या. ५ । श्री श्रीमिंद्र आढ दे । चव-
 दसे वावन नमुं गुणवार तो । अनंत चोडसी आगे थइ । जेहना
 केवली सरत्र अणगारतो । ज्यां० ६ । सासण श्री त्रिधमानरो ।
 नरत्यो छे वरते न वरतण हारतो । केइए मुनी मुगते गया । कं
 एक भव कर जावण हारतो । ज्या० ७ । चवदे पूरव धर कंउली
 । अवद नाणी मन प्रजव धारतो । थेवर थिर करी आत्मा । तप
 करी तिर गया भव दधी पारतो । ज्या० ८ । आद जिण्ड आदे
 करी एकसो पुत्र न पूत्रीजी दोयतो आट पाट श्री भरतना हस्तीरे
 होदे माताजी सीध होय तो । ज्या. ९ । कपील मुनी हुवा मोटका ।
 पांचसे भीलाने दीयो प्रमोदतो । नमीए नमाड निज आत्मा ।
 एक समे हुवा च्यारु प्रति बोधता । ज्यां० १० । गोतम तिर
 गया तीरपे सोलइ ओपमा सोभे मीरीकारतो । वउ सुरती च्यारु
 सीधमें । सारण वारण धारण हारतो । ज्या० ११ । पेसमे प्रणाम
 कीजीए । हरक धरी हरकेमीन पाए तो । चीत मुनीसर चीत
 धरुं । एकुं करे आद छउं मुनीराय तो । ज्या० १२ । आहेढे
 पर चढ आवीयो । संजेतीराय भेटया गुरु पाए तो । संजम लेड
 सुत्र भएया । एकले ब्यार कीयो मुनी राय तो । ज्या० १३ ।
 खत्री हो राय चरचा करी । डिड करे समक्रीत देड दिस्टंततो
 । जीन मारगमांए दीपता । कुण २ सत हुं वा महंत तो । ज्या.
 १४ । दसाणभदर वीर बंदता । मान गाव्यो सक इंद्र देवतो ।
 सजम लेइ सामा मडया । हाथ जोडी करे चरणारी सेवतो । ज्यां.

१५ । राय करकंडूजी आद द । करख देखी मने घरघोरे बेरागतो । चल्ली से दम मुगत गया । मरीयां मंडार रमख रीज त्यागतो ।
 न्यां १६ । आदुइ करम खपाएने । आदुइ राम लीयो सुख मोखतो । सोलह देसारे सायबो । राय उदर मन घरघो संतोष-
 तो । न्यां १७ । सुगरीब नगर सुबाबखो । राज करे बसमद रायतो । मिरगावती फटराखी । पुत्र बायो बहु आखद बायतो ।
 न्यां १८ । खोबननी मय बाबने । व्यावस्त्रीयो देखी घरखीबी जोहतो । महिलामें सुख भोगबे । दास दासी राख्यां पूरे मन कोह तो ।
 न्यां १९ । एक दिन मख छे बालीयां । व्यावता दीठ क-
 क्यारा नाव तो । रुप देखी बिसम थया । माटी बो समरख जाखी पाइली बाततो । न्यां २० । बिह पढोरे ससारने । राग छोडी मने घरघोरे बेराग तो । मात पीताभीसु बीनवे । अनुभव दीनीण । मज बडा भाग तो ।
 घ २१ । बत जमाखी बीम नीसरण । मनम मरख दुख कटवा पाम तो । संभ्रम छे सुत्र मय्यां । तप कर पानीयो सीतपुर बस तो । न्यां २२ । सुनीए अनाबीखी मैटीया । सेखकराय विहा समझित पार तो । बबुखी हुवा करम कदली । पाछे सु जड गया मोख दबारतो । न्यां २३ । और मनेक केइ हुवा । तेरइ इच्छामें मखो बीसतारतो । मात पीता भिनरावरा । मुगत गया केइ समझित पारतो । न्यां २४ । मूल इदक बे मै क्यो अलप बुद्धि नहीं अकसर म्यान तो । माफी करी गुनो बगसीए । म्यानीरा बचन कळ प्रमास तो । न्यां २५ । तेसरा सात सुहाबखी । गूपी छे मुनीपतखी गुब मात तो ।

जेपुरभांए जडावने । चरणारो सरण होवो त्रिकाल तो । ज्यां०

दसाणभद्र राजानी ढाल लीख्यंते

दोहा । निमसकार नव पद भणी । होज्यो वारंवार ।
उतराधेन अठारमें । दसाण भद्र इदकार । १ । कैसु ढाल बणा-
यने । सुणजो चित लगाय । हारयां नही सुरपत थकी । टीनो
जग छीटकाय । २ ।

ढाल । कर असवारी राय संचरयारे । आयो बन मभार हो ।
सुंजाण नर । विरामण इत उत डोलतोरें । भरमायो निज नार
हो । सु० कोइ चतुर वीच्यारी ने चेतजोरें । १ । नरप पूछे तू
किम भमेरे । कहनी थारो भेद हो । सु. हाथ जोडी कहे रायनेरे ।
रुसगया हम देव हो । सु. को. २ । भेद सुणी नृप चितवेरे ।
देखो इणरो राग हो । सु. तिरण तारण बीतरागनेरे । हुं भुल
गयो निरभाग हो । सु. ३ । देव रागी गुरु लालचीरे । खरचे
लाखां कोड ह । सु. गाढी इणरे आसतारे वनमें भटके घर छोड
हो । सु। ४ । नीरागी निर लालचीरे । मारा श्री गुरु देव हो ।
सु. तो हीव ढील करुं नहीरे । जाय करुं ज्यांरी सेव हो । सु. ५
। चतुरंगणी संन्या सजीरे । अंतेवर लेइ लार हो । सु० आडवर
कर आवीयोरे । करवा जीन दीदार हो । सु. को. ६ । हक्क
हीणमावे नही रे । धरतो धरमनो राग हो सु. चरण मेटयां जिनरा-

बना हो । मारा मोट्या माग हो । सुजात नर । को ७ । सन
 मुख बेछा बीरनेरे । बोले ब कर ओढ हो । सु. माजी में किशोरन
 बंदीयारे । इन्स २ करे मुख होढ हो । सु को ८ । सक इद्र
 मन धितबेरे । फोगट पर अभीमान हो । सु गरब गस्तु हिब
 एहनोरे । किश्व बीच रहसी गुमान हो । सु को ९ । बेबे सीन्या
 बीसतारनेरे । आप जाल्या सुर राय हो । सु आपा मानब सोकरेरे
 । दत्त बादल सीयो छप हो । सु को १० । इद्रतबी
 रीच देखनेरे । तुरत पाम्यो भीमतछर हो । सु मान रहे किम
 मापरेरे । लेश्यु संजम मार हो । ११ । आपो देवा सेवा करोरे
 । लागो हमारी बोढ हो । सु हु रीच त्यागू आपबीरे । पाबी
 करो मुख होढ हो । सु को १२ । या तो सगत न मापरीरे । बे
 मानी मछरात हो । सु० छरपयो संजम सीयोरे । गरब हमरो बीयो
 गात हो । सु को १३ । और करो तिमही करेरे । ये सुव
 मस्तक मोढ हो । सु. में हारयो तुम बीसयोरे । पाए पढयो कर
 खोढ हो । सु० को २४ । बन भी गुठ म्हाबीरबीरे । बन २
 घारी माय हो । सु निज अपराध सुमापनेरे । आया किश्व बीस
 जाल्य हो । सु को १५ । तसट सल्ल बडाबजीरे । जेपुर सेले
 कल हो । सु प्रथम चेत हुदी सप्तमी करी संपपूज बास हो ।
 सु को २६ । ओछो इफको जे कयोरे । सुत्र सेठी विरुप हो ।
 सु मीछामी दुकड तेहनोरे । कबीजन कीन्यो सुष हो । सत्रास
 को १७ ।

मेगरथराजाकी लावणी लीखंते

देसी गोपीचंद्रा ख्यालरी छे । मंतनाथ भव पाछले सरे ।
 मेगरथ नाम भूपाल । समगत धारीपर उपगारी प्रजानो प्रतीपाल
 । सरणे आयो न मूकीए सरे । लीमी प्रग्या भाल हो । मेगरथ
 माराजा । पर उपगारी तारी आत्मा । धन धन म्हााराजा । जिनपद
 पायो प्रमातमा । आंकणी । १ । सक डंड मोना करीसरे । धन
 मेगरथ राजान । जीव दया ज्यारे दिल बमीसरे देवे सुधात्र दान ।
 दोय देव नहीं सरधीया सरे । आया धर अभिमान हो । मे २ ।
 एक बणयो पारेवडो सरे । कुजो हंमकथाए । लारे लागो आनीयो
 सरे । आगे पखी जाय । मै भिरात मरणा थकी सरे । धसीयो
 खोला माय हो । मे. ३ । धुंजतो ढक राखीयो सरे । देखिर मारी
 थोट । ततखिण आयो पाग्धीसरे । करमा लागो चोट । हलकारा
 सामा हुवे सरे । ले हातामें सोट हो । मे० ४ । धीर पसु
 समजाय धो सरे । नहीं जवरीरो काम । ज्यो चावेमो मागल
 सरे । मत लइणाको नाम । कोल देस्यामू मागीयो सरे । लेले
 हमपे ढाम हो । मे० ५ । भख माहरो पंखीयो सरे । छोडो चक्र
 सुजाण । गणा कसटसु लावीयो । मारे नहीं ढाम सु काम ।
 भूखा मरता वापजीस । मारी नीकल जायली जानजी । मे० ६
 लावो मेवा सुकडी सरे । ओर घणा पकवान । तिरपत होयनेजीम-
 ले सरे । हम बोले म्हीराण । सरणागत किम दीजीए सरे । ए
 मुज जीवन प्राण हो । मे० ७ । नहीं न्यू मेवा सुखडी सरे । नहीं
 भावे पकवान । मंस आहारी कुल आचारी । किम छोह म्हीराण ।

ज्यो नही जोडो एहने सरे । तब डेम्पु मुज प्राणजी । मे० ८ ।
 फांसमंस मगाय दांसरे । छोड हमारी केड । करमा पष पूषापरे
 सरे । मठ कर इहारी छेड । म्हा बीरता नही मीनस । ज्यू प्रवत
 अड तेड हो । मे० ९ । दयावंत तू नाम घराय । करमैय्या
 प्रयव । मंस परायो धामता सर । खरख न लागे अस । कठखा
 कर साचो तुज भाणु । दनी धारो मंसजी । मे० १० । मसी
 बीचारी मोलीयोसरे । मुज इतिधारी बोल । न्यानो कट्टरी पाछ्यो
 सरे देठ मंस मुज जोल । इस कर हंसक बोलीयो सरे । सेठ
 बराबर तोलजी । मे० ११ । न्यानो आजूतकजी सरे । पंखीघर
 हो मांय । कट २ ने मांस आपरो तकइयो दीयो मराय । नमी
 न डांडी दोस्तता सरे । पछी नीचो जण्डी । मे० १२ । देय हमारी
 घर दूसारी और नही मुज बोर । खर लोक सब मेला डुने ।
 करवा ज्ञान्या सोर । देष कान कड पा सरे । प ठग बाजी चोर हो
 । मे० १३ । अतिवर बिल बिल करे सरे । राख दासी दास ।
 आयो कट्टासु पापीयोसरे । कर हमारे नास । सदा लोक सासे
 पड्याम । अब छिमी जीवसरो आपजी । मे० १४ । बिष
 बिष कीनी पारखा सरे । पछीया नही लीगार । देष रुप प्रगट
 वया सरे । सुरजनो मलमर । हाय मोड पार पड्या सरे । धन
 तुम छो अन्तारजी । मे० १५ । सुरपज प्रसमा करीस । मे मानी
 नही लीगार । प्रकस्या करवा आपरीस । मैं दीनो दुख अगाड ।
 सुखीया जैसा देखीयासरे । खमो खमो मुज अपराधजी । मे० १६
 । दब गया दिबलोके सरे । करवा बै बै कर । संगतपी सुधया

गणासरे । हुवा ज्यो समगतधार । सक इंद्र आगे कह सरे । तुम
साचा मीरदार हो । मे० १७ । काल करीने उपना सरे । सुवारथ
मीध मभार । तेती सागर पूर्ण सुख पाया । तिरथंकर पद सार ।
हथ्यापुरमें संजम लेने । पूंथा मोक्ष मोजारजी । श्रीसंत प्रमूजी
संत करी जे सरवे देसमें । मे० १८ । १९ स तेसठ भलो सरे ।
जेपुरमाए जडाव । फागण सुद पुनम प्रभाथे । सिध जोग गुरुवार ।
वे कर मुगत पद मागे दीजे तुम दीदार हो । मे० १९ ।

उपदेसी लीख्यते

देसी चेतन चेतोरे । चे० दसवेल जगतमें मुसकल मीलीयारे ।
दिल दीली सु चले सोदागर तन मंडलमें आयारे । मोल अमोल
तोल नही । एसी चीजा न्यायारे करो दलालीरे धर्म दलाली
सुत्रमें चाली । जीनमत वालीरे । करो० आंकणी । १ । हितका
हीरा प्रेमका पना । नेमनगीना भालीरे । मन निरमल । चित
माणक मोती समग प्रवालीरे । क. २ । दान सील तप भाव
खजाने । धर रोकडरी थेलीरे । मन मंजूसमें माल भरो । द्यो
मूनकी तालीरे । क. ३ । ग्यान दुकान सडक पर कर जतनारी
जालीरे । गुणकी गादी ततखका तकिया । सत सरापहवालीरे । क.
४ । मूनी महाराजा तपे तकनपर दीपे रुप रसालीरे । ग्यान ध्यान-
रुजगार चन्या । श्रावक लेवालीरे । क. ५ । जसकी जाजम । ग्यान
गलीचो । प्रेमका पडदा रालीरे । साच सीपाइ । प्रमू नामकी
हुंडया चाली रे । ६ । क. । चले दुकान जैनकी जगमें । गयो
अनतो कालीरे । तीन लोककी आरत आवे । दुकान भरी नहीं

वासीरे । क. ७ । सोसठ साल अढाव जेपुरमें । द्वा बेत
मम्भरीरे । बिना दाम कोइ मास से जावो । सवगुरु बोपारीरे ।
करो दसासीरे । क. ८ ।

धरजीकी ढाल लीख्यते

राम मेदारी छे । बी और सोखावे बोस पोछडा । महाराजा
सुत्रकी बासी । सामीजी सुत्र बांचोजी । सुशत्रानबद्धरी
आंछबी । १ । बी और बतावे अलीयां गलीयां । महाराजा
हुगतकी सेरी । गुणवंता । २ । बीआं पण्पाट विपम पंच फण्के
। निजपर आत्म बेरी । बुधवंता सु० ३ । बी और बतावे बाग
बगीचा । महाराजा सु० असवंता ४ । बी और बतावे स्तल
सपाट । महाराजा हुगतकी सेरी । तपसी १० । और बतावे तीज
वमाथा । महाराजा सु सामी० ६ । बी और बतावे मोग मबानी ।
महाराजा सु अस ७ । बी और बतावे स्तल म्भसकी महाराजा
सु । बुध० ८ । बी पूरव सकत पुन्य करिने सेव मीसी गुरु केरी ।
गुण ९ । बी जगामारि सांछबी बापांरो ससकर मारी । म्हा०
१० । बी सोसठ साल बेद जेपुरमें पढ़इ अरख हे मेरी । सामीजी
साम्भाम्भोबी बापांमें तपस्यां गहरी । गुण ११ । बी ब
कर बोड अढाव करत हे । ग्यान देबो हेरी हेरी । तपसीजी हाथ
प्रसोबी । बापांमें तपस्यां गहरी । बुध० १२ ।

देवीलालजीरा गुण लीख्यते

देसी । गहरो फून्गो हो हजारो गैरो बागमें हो । बलीपारी
हो हुनीवरजी बारा ग्यानकीजी मनडो मोपो मारो देख ब्य

वखाणकीजी । वाणी डमरत रम परमावे । मुखमुकरमें जीम
 दमावे । सुण २ रम २ हुलसावे । व. । आंकणी । १ । संप्र-
 दाय श्री दुरुमवरीजी । श्री श्रीलाल पूज प्रतापी । आत्म मंजममें
 थिर थापी । कुमन कलेवनणी जड कापी । व. २ । देवी लालजी
 दीवाकर लोकरेजी । ज्यारी मुरत सदासिध मोहमेंजी माणक ।
 माणक ग्यान नगीना । बंधव दोनू मात मगीना । चुनीलाल
 जडया जिम मीना । व. ३ । मामी सुमती अराधे । गुपती गोपवेजी
 । निगमल पच महावन पाले । दोषण अहार तणा मन टाले ।
 जिन मागने जोग उजाले । व. ४ । कोई स्वमत परमत धारणाजी
 । महुनिध आगम अरथ पिछाण । निधसे भिन २ करे वखाण ।
 गाले पाखड्यारा मान । व. ५ । ज्यारी जोग मुद्रा हृद सोवणीजी
 थारी सावली परत मनमोवणीजी । देख भवकजिन आणंद
 पावे । निरस्त नैण तिगपत नही थावे । सुरगुरु आप
 हरक गुण गावे । व. ६ । दीपे सवि जिम सीतल
 आत्माजी । नित ध्यान धरे प्रमातमाजी । गुण गभीर दया निध
 धीरा । निज कुल माय अमोलक हीरा । संत सरन प्यारा प्रभूजीरा
 । व. ७ । देखो उडीए पुन्याइ जेपुर स्हर कीजी । मीलीया मुनी-
 वरजीग विंद । दमण मीठा मीश्री रुद । दिन २ भरते डंदक
 आणंद । व. ८ । ममन १६ में चोमठ भलोजी । लाग्या
 धर्मध्यानरा ठाठ । तपर्या पायामे मेघाट जडाव जनम मरण दो
 काट । व. ९ ।

मुनीवरजीरा गुण लीख्यते

देवी । प्यारा लागो सुद्रमा स्वामी । मुनी गुण सतावीस
 धारी । नित ले नीरदोषण अहारी । छती रिध सपदा त्यागी ।

११ । प्यारा लागे संत सोमागी । भांकडी । सतरा मेदी सज्जम
पाळे । नीचो देख देखपग डाले । परमास , बचावस रागी ।
प्या० २ । तप तेज करीने दीपे । सामा आपा प्रीसा बीपे । सुरवीर
बडा बेरागी । प्या० ३ । ज्यामें ग्रानादिक गुण मारी । तीरथ
सारथ पर उपगारी । सुम ध्यान घरे म्हामागी । प्या० ४ ।
बडाब जेपुरमें गावे । सुथ मक्किभीवारे मन मावे । मै तो मुगल
रीजमें मागी । बाला० ५ ।

देवीलालजीरा गुण ली०

देसी । पनम्ही मूढे बोल । बडी पुन्याष्ट सिंघ सरपनी ।
बंझि करज सरसेरे । म्हर करी मुनीकरवी पधारणा दीली सद्र
सेरे । आज रंग सरसेरे आज रंग । म्हातो बायी सुथ २ हीबडो
हुलसेरे । आ० भांकसी । १ । पाट बीराज घन सीम गाज ।
बायी इमरत बरसेर । स्वाग बुद जिम सारी पुरखदा । अवथ
फरसेरे । आ० २ । बाबो प्यारो न्यारी २ जिम दरपथमें दरसेरे
। सुथ २ भावक प्ररन पूछे । बडी कदरसेरे । आ० ३ । तपस्या
मारी । बहु नर नारी । कर कर कया करसेरे । मव मव संचित
करम खपावे । सिब रमयी बरसेरे । आ ४ । जिन बायी सुथ
सर सख पाव । मव कल पार उठरसेरे । जेपुरमांण बडाब कडे ।
जो मन बस करसेरे । आ ५ ।

कका वतीमी ली०

दूहा । सोरठो । बे कर बोड बडाब से सरखो बगनायरो ।
कर वतीसी फेर । बिगम व्याच दूरा हरो । १ । कझ कझ कर

चल्यो । लेसी कांड लार । धधामे धायो फीरे । जामी नरभव
हार । १ । खखा खाली जात हे । विगतामें दिन रात । निन
मुतलव बोलो मती । याद करो जगनाथ । २ । गगा चुप रहीजी
ए । दोष पराया देख । जोबो अपणी आत्मा । ओगण भरथा
अनेक । ३ । घघा घर तेरो नही । तूं घरको नहीं होय । घर
घर करता चल गया । राजा राणा जोए । ४ । डडा रडके कांक्रो
। आंख डाढके बीच । कूचन रडके कालजे । कूकर्म रडके नीच
। ५ । चचा चतुराइ करे । सायत निभन कोय । छेडो लेता
सीदडी । मूह कुत्ती जोय । ६ । छट्टा आने राखसी । कितव
अपणा कोए । माडे उगड नावसी । तसकर तुंवा जोए । ७ ।
जजा जुलम करो मती । दुरयल दुखीया देख । थिर नहीं समपत
सायवी । बैरी होए अनेक । ८ । भक्ता भक्त मारो मती । गली
गलीकमांए । लंपट बाजे लोकमे । इजत रहवे नांय । ९ । नना
निजपर आत्मा । एक सरीकी जाण दुख किणने देखो नही । दया
भाव दिल आण । १० । टटा टालो किजीए । नीच कुपात्र देख ।
मत छेडो पत जावसी । ओगण होय अनेक । ११ । ठठा ठग
ठग खात हे । माल पराया आण । मारी पडसी आतमा । जम लेसी
बिच ताण । १२ । डडा डायो होएने । कीनी काय सयाण । पूंजी
खोइ पाछली । नवी न करी अयाण । १३ । ढढा ढिग वैठा नहीं
। सत संगतमें जाय । धुकतो तोले बाणीयो । ए ओखाणो थाय
। १४ । गणा नेण भुलायने । सब जग लीनो मोए । समपत
बेस्यां सारखी । सुध बुध देवे खोय । १५ । तता तिरणो अपणे
हाथ है । ज्यो सब राखे मन । सतगुरु साखीदार हे पावे सिव

सुख बन । १६ । बधा पावो उठावलो । खिच २ आठ आय ।
 करखो वे सो अबही करले । पाखी अदबीच माय । १७ । ददा
 दोरीनाकरे । दह तप बप मांय । लासे पीसे पहरबे । सारा पइसी
 बाय । १८ । बधा बनके करसे । मठके बेर ह्वेर । मारे ठा न
 चोरट्य । पटक ठ डी मर २० । नना नोपत मरखी पय र
 प्पाठ सुट । पेरो साम्यो कमको । किच बिपि आसी छुट । २१
 । पपा पीडा पारखी । सुखी न जाणे कोय । बीते सोष्ट बेदहे ।
 अकुरु प्यो कोय । २२ । फफ फट्य फुट्या । बादल बीणी
 अनार । तीनू फट्य अस्तबुरा । नेत्र कटक कुनार । २३ । बधा
 बबजा बावरो । न्याइ बबे कसेस । सैंखो बोले समब बने । देबे
 हित उपदेस । २४ । ममा मारी होत है । निस दिन आठु कर्म ।
 हस्तकी करले आत्मा । न्यो गल्ली चावे सर्म । २५ । ममा गुरसी
 राखीण । मस्तपिता बड मिराड । तीन बिसेपे बाबीच । दङ्गुरु
 अपखो नाय । २६ । याया अगमें देखलो । अपखो सगो न कोय
 । सुखमें सब कोमी रहे । दुखमें दुरा होय । २७ । ररा रेखा
 कर्मकी । ठवे हुवा दुखदाय । राजा रंक फकीर औसीया ।
 । सगहुदे सुवाय । २८ । सडा सेखो मागयो । कर्म
 कतेपी बाण । रोपत नही छुटसी । सेसी पन्नां ताव । २९ ।
 बग बडा न बाबीण । खरगी पकर पाट । कससी अदबिच सेलमें
 । फेर आडसी छोट । ३० । समा संक राखने । बीबे काम विचार
 । दिन संक बिगडयां गद्या । कुसिप कुनार नार । ३१ । बग्ग
 इस इस बापीया । कर्म निच फिख खू । दिन दुगत्यां किम

छुटसी । जासी प्रभव हूव । ३२ । १६ सें अठावने । जेपुर कटले
वास । कका वतिसी करी । दुतिय सावण मास । ३३ ।

देवी लालजीका गुण लीख्यते

देसी । मानव भव लादो राज लादो । भूल मत जाज्योजी
गुरु माने । विसर म० मैं अरज कराछा थाने । भू. । आंकडी ।
१ । जी आठ पहर हिरदामें राखु । चित वसीयो चरणामें । जी०
म्हर करी मुनीवरजी वेगा । दरसण दीज्यो माने । भु० २ । जी
जिनमारगने जोर दीपायो । संपरयो संता में धर्म ध्यानका ठाठ
कराया रंग रंग छे थाने । भु० ३ । जी हरक हीयामें जवइ
होसी । आयां सुणस्या थाने । तेड सरज भलो उगमी । वाणी
सुणस्यां काने । भु० ४ । जी दील दरीयो भरीयो तुम त्रिहे ।
खारो लागे माने । अंतराइ पूरवली आइ । दोस नहीं कोइ थाने
। भु० ५ । जी संत सोभागी मैं निरभागी । याद करे कुण माने ।
जैपुरमांए जडाव अछता । दीया ओलंवा थाने । भु. ६ । जी
खमो २ अपराध हमारा । माफी दीजे माने । खिम्या धमं तुमारो
स्वामी । धन धन सब संताने । भु. ७ ।

समाइकका वतीस दोषरी ढाल लीख्यते

राग । सुण चंदाजी श्री मंधीर परमात्म पासै जावजो । ए
देसी । सुणो श्रावकजी दोष वतीसुं ढाल समाइक कीजीए । चित
लायकजी समता रसरा प्याला रुच रुच पीजीए । आंकणी । १ ।
बिना फैम घरसुं चाले । जीवादिकने नही नाले । ओ इरज्या में

टोटो घालेही । १ । मु विन पूज्यां आसण्य धटे । जीव वंग
 दब बाए हटे । ए राजतखी कड धटे । सु २ । मोडा आवे
 साज सुमे । इत्यावइ नही पडिकमसे । यो पडिकमसो प्रमाद गम
 । सु ३ । नाम समाएक पद्यफल । फण्य ओगरी खबर नहीं ।
 या सामायक किश रीत मइ । सु ४ विन फरण इठ उठ बोले
 । विन मावन मंछ खोले । ० विन पुत्री भरती बोले । सु ५ ।
 आरत छ प्यान भरे । धम सकल कुस याद करे । संसार समुद्र
 केम तिरे । सु ६ । मसबो मुखरो नही सुभावे । बाता रिगता
 सग बावे । याने सीखता शिछ आव । सु ७ । विन समज
 भाषा बोले । सावज निरवध नही ठोले । ए अत्रमें कीचड बोले ।
 ए केसरमें गोबर गोले । सु ८ । द्रव समाएक सुब नही । माव
 समाएक मान लइ । या विन माता बेटी जइ । या पिता बिना पुत्री
 बइ । स ९ । एक मोरब नित सब कीजे नरमसरो सावो
 सीजे । मत्ता मुगदीरी सइ सीजे । मत्ता दुर्गवरा तात्ता दीजे ।
 सु० १० । बडावजी जेपुरमाइ । हित सिम्प्यारी डाढ फडी । ये
 समज सीज्यो बाइ माइ । कोइ राम बेगरो कय नहीं । सु ११

पालाणो लीखते

बसी । मारी रंगरही । नेणारी नीद किसनकी हरी । जनक
 विधारव । विसछात्री मांए पालखो पंभान गयो हरल ठछान ।
 हीरासास बड्यांजी । जुनीलास बड्यो । प्रसुजीरो पालखो ।
 अमर बड्यो । आंकडी । १ । रतनारो पालखो न रेसम बाख ।

मांए पोढावे प्रभु जीन आण । हरा. २ । सोनारा संवटा ने
मोत्यारी लूम । किलक २ जाणे तोड लेउ भुम । ही० ३ । पन्नारी
पनडी न पाटूरी डोर । रीमजिम २ नाच ग्या मोर । ही. ४ । देदे
हीडोल्या भुलावळलाल । गाव हालरीयान होय रया ख्याल ।
ही० ५ । घन २ तुं तिसलादेजी मात । गोढ खीलाया व्रीभूवन
नाथ । ही० ६ । जेपुरमांए जडाव कहे । दिन उगे प्रभुजीरा
चर्य ग्रिह । ही ० ७ ।

मुनीराजना गुण लीखंते

दोहा । पच पद प्रणमी करी । गोतमजी गुणवंत । गुण करावा
मुनीराजना । मो मन इढकी खंत । १ । देमी । हारे मारी धर्म
जीणद संलागी पूरण प्रीत जोए । जाउ रे हुं जेने घर आसा
करीरे लोए । हारे इण म' मडलमें पूज श्री रतनेसज । हुवारे प्रतापी
। मुत्र केवलीरेलो । हान' ज्यारो नान सण्यो नहीं देख्यां नेण ।
निहालजो म्हमारे मण । हरके रुआवलरेलो । १ । हारे ज्यारे
पाट वीराजे पूज श्र 'नेवळजो । सातल माभाग चण्ण वनारे
लो । हाजो ज्यारी म्हर नीजरसुं मालोय मुन त्रिंदनो । दासे
रे यो स्हर मदा रलीयावणोरे लो । २ । हारे काड घन दीहाडो ।
वडा हमारा भागजो । तीनूडरे सप्रदा समागम एखटोरेलो । हारे
एकलेण वीराजे पाट । पुरखदा ठाठजो । स्मतरे सुव वेला लाग्यो
चोमटोरे लो । ३ । हारे काड सास्त्रधारा वरसे इमरत नीरजो ।
पीतारे त्रिपत नहीं होवे आत्मारो लो । हारे निज श्रवण सुणता
प्रगटे प्रेम त्रैरागजो । समकितरे नीरमल । प्रखे प्रमातमा रे लो ।

४ । हारे कइ दीपइ जीम कसी गोतम जोइजो । ५ । हरि ससिरे
 मानु एकख मंडलरेसो । हारे कइ प्यारु तीरथ बैठ सनमुख
 आएओ । इलीरे पालंडी दूरापी टलेरे सो । ५ । हरि सुखी
 समोप्रबद्धी बरषा बोल बयानजो । तोपिखर हीसे थोडीसी
 बानगी रे सो । हारे कइ तन मन हुससे । देख मुनी दीदारबो ।
 बीगसरे अ ग कषा सुखी गरु ग्यानसो रेसो । ६ । हारे कइ बीमी
 पुरखुदा । उठ सके नहीं कोएजो । आसारे लगइ जिम
 बात्रीक म्दनी रे सो । हरि कइ नंदी सूत्रमें सुरता चरदा मेइजो ।
 बु गा जीम बूये रम बासो अइनीर ल । ७ । हारे कइ सरल
 समथा । हीसे बोल मुलामजो । गत्र गतिरे बाधामें बाए । फल
 कीयोरे सो । हारे मुनी ग्यान गुफामें करता बोलत उचावजो ।
 माखेरे सादूसो सिंध पइकीयोरे सो । ८ । हारे ज्यारी कंठकलसु
 पीयार ग्यान मंडारबो । बाबीरे मुहाली कीरज्यु रे सो । हारे
 कइ परमधीर रंभीर गुखरी खानभा । निरमल नीरागी गंगा
 नीरज्यु रे सो । हाजी बांतो तप अप संजम अख रहो आचार ओ
 । दीपावो जिन धर्म कर्मसु बीठनेरे सो । हार मं तो अमिमानी
 अम्यानी निज हृपात्र ओ । जिम विम बी तारीजे मो अवनिलने
 र सो । १० । हाजी मैतो कब सय गाठ । गुख अनंत अपारजो
 । मुगल्ले पोते ओ पार न पामीए रेसो । हाजी मैतो अक्षय पुषी ।
 अयाख मान मद जोइजो । सूत २ रे कइ जोइ चरय फिर
 नामीए रे सो । ११ । हारे कइ बिन धर्मरी सदा अखंडत बोल ओ
 । रहबोरे मुख सत्ता प्यारु सीधमें सो । हांजी कइ बैपुरमाण

जडाव गुंथी गुण मालजो । पहरोजी बुधवंता सोभ अंगमैरलो ।
। १२ । कलसः प्रमाध श्री गुरुदेवजीको । गुणवतारी दासए ।
म्हर कर मुज मुख उपर । दीजै मुगत निवासए । १ ।

मुनीराजना गुण लीख्यते

राग पीचकारीनी छे । सुमत सीख हिरदामैं मेली । कुमत
कुपात्र दुरी ठेली हो । माराजा थारी कीरतडी गरणाइहो देसा छाइ
वो० आकडीः । १ । कीरतडी थारी च्यांरु दीस फैली । कोड
जुगां जुग रहलीहो । मा. २ । ज्ञान गुप्त थारो ग्यान अपुरव ।
मीप सुडारुनीमेलीहो । मा. ३ । आतम साधै । प्रवचन अराधः
छोड दीयो प्रमादै हो । मा. ४ । संजम पालो सब दोषण टारो ।
जिन मारग उजगारो हो । मा. ५ । ६४ सालनै भरथोरै भाद्रवो ।
हरक २ गुल गावै होः । मा. ६ । वे कर जोड जडाव जेपुरमें ।
चरणा सीस नमावै हो । मा. ७ ।

सभाय लीख्यते

देसी । जीन रे तुं सील तणो कर सगः जीव रे तुं मत कर
आरत ध्यान । पिन भुगत्यां नहीं छूट सीरे ए निश्चे कर जाण ।
आ. जी. १ । बाधै सोइ भोगवैरे । कर्म सुमासुभ दोए । सुख
दुख रेखा आपणीरे । टाली टल्ह न कोए । जी. २ । हस २ कर्मज
मचियारे । पर भव जाए बलाए । अब तुं आयो सांकडैरे । नास
कठी न जाएजी । ३ । पोपी अपणी आतमारे । प्राण पराया लूट
पडलो लेमी चोगणोरे । किण बिद जासी छूट ।-४ । कर्म करै तु

एकलोरे । सबही नर सुवाए । सुखमें सबको सीरछरै । दुखमें दुरा
बाय । बी ५ । निम्न वास निम्नरथरै । छूट्या छ फायसा प्राय
। सब सपसे सतावसीरे । फरसी छायाताय । बी ६ । रोयाए
छोठ नहीरे । कर्म कलेसी आय । काय न राख केहनीरे । छेसी
पल्ला ठाय । बी ७ । परफदे आओ नहीरे । उदह हुवा दुख-
दाय । फरक वासे केवसीरे । कोए न आओ थाए । बी ८ ।
येपुरमांए बडावसीरे । छसठ बड बैसाख । इम समजाव बीवनेरे ।
निज आत्ममरी साख । बीव० ६ ।

वीनती लीख्यते

देमी । बग पचातो म्हासयी । बेग पचातो हो म्हा सुनी ।
दीस ब्रम दयाल । तारक विरद बीन्धारने । बेगी फरजो संमाल
। ब आकशी । १ । गात्र अवाज हुवा यक्ष । हरक दादर मोर ।
इद्रके माव नहीं । युइ मचायो सोर । ब० २ । कीनो अमीनय
असातना । हे छ कायारा नाव । पछीण सोमासी ने अमछरी ।
खमाठ ओडी हाव । ब ३ । सुख माय माफी करो । अवस
पचातो आप । बालक दुखदाइ हुबे । फरक नहीं मा बाप । बे १ ।
बडा बीचत बडो करे । देखे नहीं पगदोष । अवगुण सब अलगा
करे । उपजावे संतोष । ब० ४ । आवसरी आसा पसी । फेर
करे । उपजावे संतोष । ब० ४ । आत्मसरी आसा पसी । फेर
पसे नहीं छेर । पर उपगारी आप छो । फरसो जेपुर छर । बे०
५ । बोडा में गसी बीनती । मानो धनु सुमाय । जेपुरमांए
बडावन दीओ दरसण आय । बे ७ ।

चनणमलजी म्हाराजाना गुण लीख्यते

देसी प्यारा लागो सुद्रमा सामी । मुनी वीचरत जेपुर
 आया । सारा सतनकुं संग लाया । कर जोडी पड नित पाया ।
 अब आणदरग वरसाया । आंरत । भव जीपारे मन भाया ।
 आं० १ । म्हाने वस २ वसाया । इतना मोडा दस दीराया ।
 देखी रोम रोम हरखाया । आ० २ सेवग न कइए विमारो ।
 ऐसो निरध नही छे तुमारो । प्रतिपालक नाम धराया । आ० ३ ।
 कीरपा कर नाणी मुणावो भव २ की तपत मीटावो । नरनारी
 व्होत उमाया । आ० ४ । जडाव जेपुरके माड । दरसणकी दोलत
 पाइ । छामठ साल हरख गुण गाया । आ० ५ ।

पार्मनाथजको स्तवन ली०

देमी पनजी मुडे वोले । भामा सुत पत राख हमारी । हुं छुं
 सेनक थारोरे । भव दुख भंजन । नाथ निगजन । व्रीद वीचारोरे
 । १ । पार्म प्यारोरे पा० एक पलक न विसरु नाम तिहारोरे
 । पा० । आरुणी । तु मुज मान तात बड भिराना तुं तायव
 सिरदारोरे । तूं प्रमेम सुण अलवेसर । द्रड हमारोरे । पा. २ ।
 काटो कर्म भर्मकी वेडी । जीम हुवे छुटकवारोरे । लीनो मरणा
 चरणको प्रभुजी पार उतारोरे । पा० ३ । आठ पहर हिरडामे
 राखुं ध्यान एक प्रभु तोरोरे । तोड न रीजे भीजे प्रभु । तु निपट
 कठोरोरे पा ४ कामण गारो । जगतसुं न्यारो । मनहर लीनो
 मारोरे । न्हो चमक जिम प्रीत लगावे । कपटि ठगारोरे । पा. ५ ।

पतली छात्र समे नही पाखी । रह न सके मन मारोरे ।
 बीसवीं उष नीच फेर सोलू । आ संगायत धारोरे । पा० ६ ।
 चाकर बिन कुब करे चाकरी । बिन चाकर पत केरोरे । हम बाखी
 मोए हात्र राखो । कर करम मल्लोरे । पा० ७ । गरु मुख नाम
 मूष्यो प्रमु तेरो । अब कीबे दीदारोरे । महर करी मूअ सामी
 सायब । निअर गुदारोरे । पा ८ । सुष पख साबख पहलो प्रमुजी
 । बेपुरसर मबारोरे । छासठ साल बडाव करे निठ । मजन
 तुमारोरे पा० ९ ।

जीवाजीरी ढाल ली०

देसी । मैं बखल रोपण लीयो । हारे बीबा दीन गमायो
 खायन । तु तो रात गमख सोएरे । जनम प्रमादे हारीओ । तु तो
 फटो फलंदर होएर । केत सके तो चत बा । धारो बीबीया पुगइ
 खत रे । केत तोन सतगुरु देसा देवरे । ये० । आकखी । धारो
 इम बण्यो सुष स्वारधी । धारो पुन खजानो खल्लरे । रीतो कर
 छिटकवसी । धारी कोए न पूछे बावरे । ये० २ । हारे याने
 जोग मीन्योरे दस बोत्तरो तु तो पुद्गल मर्म मीट्यारे । दुल्लम
 नर मव पामीयो । धारे पडीयो पासे ठाररे । ये ३ । आतो
 पाच पची दोह मीली । तीजा मीलीया छे पाप अछाररे । दगो
 करी धन छु टसी । धारी कूब चढसा बाहररे । ये ४ । तु तो बीस
 क्वाए करपावली । तु तो मावना मन सुष भाएरे । समगत सुष
 अराध से । धारो जनम मरख मीट बाएरे । ये० ५ हरि बीबा
 मोए निद्रामाण पडो । धारे सतगुरु चोखिदारे । देसा देए अगा-

वीयो । तूंतो अण्ड चेत गीणारे । चे. ६ । हारे तोने धर्म
चिंतामण पामीयो फलीयो कलप विरछ चिता वेलरे । ग्यान
दीयो घटमें कीयो । यातो तेल जीतैड खेलरे । चे. ७ । थारे
सरधा सुध परुपणा । यातो किरीयामांए कमुर । तीनूड सुध अराध
ले । थारे सिन सुख नही छे दुररे । चे० ८ । ओगणीस वरम
छासटे । वद पर साङ्गमाएरे । जेपुरमांए जडावजी । इस आत-
मने समजाएरे । चे० ९ ।

सुमति कुमतिको चोढाल्यो लीख्यते

ढोहा । देव नमु अरिहंतने । सिध संकल भगवंत । आचा-
रज उवभायने । प्रणमूं संत म्हत । १ । सुमत कुमत दो अस्त्री ।
प्रीतम चेतनराय । मांहो माड जगडती । समकित साख भगाय ।
२ । राग । कोयल वीलीजी हजारो ढोला वागमे । घर आवोजी
वाइजीरा म्हलमे । ए देसी । सुमती घटमें आवे । या भात २
प्रचाव । पिण मूलदाए नही आवे जीवन । समाजवोजी मारा चेत-
नराजा जीवने घर लावोजी मनमोवन स्वामी जी. । आकणी ।
१ । सुमत सीर नही लागे । यो उट २ ने भागो । या रुण्टी
प्यारी लागेजी । सम. २ । आठ पहर रग भीनो । ना जाणु काड
कीनो । या भव २ में दुख दीनोजी. । स. ३ । छाने २ आवे ।
या चेतनने भरमावे । आ नरगनीगोद रुलावेजी. । स. ४ ।
पुन खजानो खाती । या पुदगल कर सराती । आ उलटी चाल
चलाती जी० ॥ सम० ५ ॥ या ले कामणगारी ॥ केड ठगीया नर
संसारी ॥ सीखावण दे दे हारी जी० ॥ सम० ६ ॥ धोको दे बिल

मावे ॥ मो मदक प्याहा पावे ॥ आ बंदर जेम नचावेजी० ॥ स०
 ७ ॥ कुमठ सफटा छेती । सुगतीसु पासे छेती ॥ में वेठ सीखावण
 फटीजी० ॥ सम० ८ ॥ कुमठ कपटनी हु ही ॥ या पटके दुरगत
 उ ही ॥ आ अकल सीखाव भू हीजी० ॥ सस ६ ॥ अडाव जेपुरमें गाव
 ॥ निज जेतनन समझावे ॥ जीत अलमराम रमावे जी० ॥ स १० ॥

दोहा ॥ ठकड मडक कुमठी कहे ॥ करने आम्ह्यां सास ॥ या
 ह स अह पापसी ॥ तू बठो घर में घाल ॥ १ ॥ बाध मागती
 आयने ॥ बस बठी पटनारा ॥ नीकत मारा पर पकी ॥ नहीतर कठ
 सुबार ॥ २ ॥ परखी पिठडो म्याहीयो ॥ पांच पंचारी साख ॥
 मासु किरतवयाणरा ॥ किम बोखे ठपे नाक ॥ ३ ॥ सुख मीठी
 हिरद कडस ॥ नही घारी प्रतीत ॥ बाप माह छोड नहि ॥ किर २
 हु कजीत ॥ ४ ॥ जउन कह सुमती सुखो ॥ कर्द सीखाठ तोय ॥
 मव छडो पत जावडी ॥ खम सोमा होय ॥ ५ ॥

॥ ढाल वीजी ॥

पोही तो अह बाता ठममें म्हराजा ॥ ए देखी ॥ आहलु अरज
 कर्मा जग्यी ॥ जतनजी ॥ आप दो चतुर सुजाय हो ॥ सुखबंता ॥
 एसा काम न काजोर माराज ॥ सोक हांसी पर हान हो ॥ बुध०
 ॥ कुनव संग छोड दो जतननी ॥ आहसी ॥ १ ॥ परखी परखी
 काइन ॥ बे कुमठसु कर रया कलहो ॥ गु ॥ पित बोरी मन
 लेणीया ॥ म्हा हससु रया मन मछहो ॥ पु ॥ ६ ॥ २ ॥
 पा सु बी घुल पुरसीयो ॥ म्हा में सु पुरस्यो तल हो पु दोस न
 दीजे भोरने ॥ पीत परापल बडरो खेल हो ॥ मव० ॥ ३ ॥

कुमतीरा भरमावीया ॥ चे० क्यूं छिटकाड मोएहो ॥ चो० प्रिन
अवगण पीया परहरी ॥ चे० भज्जाहनकेसीलोए हो ॥ वु० ॥
कु० ४ ॥ जोड जनमी आपरे ॥ चे० तेतो व्हन कडाए हो ॥ गु०
परीए परणावो एहने ॥ चे० आगी सासरे जाए हो ॥ म० ॥
कुं० ५ । फिर पण्णाउ' दूसरी । म्हा० समकित छोटी बेन हो ।
गु० । हिलमील रहस्यां दोए जणी । चे० आप उडावो चेन हो ।
गु० । कु० । ६ । कुमतीरी संगत छोड घो । पी० आवो हमारे
म्हल हो । गु० सरगमें सका नही । चे० करो मुगतकी सहल ।

। गु० कु० ७ । ज्यो थारा घरमें पदमणी । पी० तो किम
परण्यां मोएहो । गु० बीना बीच्यारा जे करे । चे० लोग हमाइ
होएहो । वु० । कु० ८ । जडाव कहे जग जे वडा । पी० माने
सुगुरुनी सीख हो । गु० त्रीयामें तीरसी घणा । चे० करसी मुगत
नजीक हो । वु० । कु० ९ ।

दोहा । म्हो राजानी दीकरी । कुमती एनो नाम । आठ थफी
लारे पडी । छोडां होए कु नाम । १ । बाप भाइने भाणजा । काका
बाबा पूंठ । ज्योवा जाए पुकारसी । तो लेसी खजानो लूँठ । २ ।
मती मटावो नाथजी । तुम घर रहो निसक । धरमराएसो कोपमी
तो काडे इगरी बक । ३ ।

ढाल तीजी.

देसी । सीख सुध मानोरे सतगुरुकी । वीलख वदन कुमती
कहे हो । चेतनजी । मारा भव भवरा भरतार । सार अव कीजे
हो । पीतमजी । १ । पहली लाड लडावीया हो । पी० अबकुं तोडो

तार । समस्त सख दीज हो । प । २ । कये हमारे बालता हो ।
 । पे० । पे छ्दीय न सोपीकर । सार से बालो हो । पी० । ३ ।
 प्यारी लगती आपने हो । पे० । छ्प मुमतीरा काम । नाम
 नहीं सेवो हो । पी० । ४ । मीछी मोजन भीमता है ।
 प० । य करता सनग सांग । माग मत खातो हो । पी०
 । ५ । छुग सपारी पलकी हो । पे० । धारा दरपस रखती
 हाथ । साय नहीं छोड़ हो । पी० । ६ । रंग म्दलामें पोड़ता हो ।
 । पे । पे करता मनरी बोल । सोरु क्यु लाया हो पी० । ७ ।
 पोपड वासा खेतता हो । पे । में आती तुमसु भीत । प्रीत नहीं
 छोड़ हो । पा । ८ । बट बरोसे आसता है । पे । में रहती
 सदा हजर । दूर नहीं खाउ हो । पी० । ९ । गायक था सो उठ
 गया हो । कुमनीजी । खासी पड़ी दुखन । बिग्या मतहकोहो ।
 ह० । १० । इतना दीन बासी नहीं हो । ह० । पृथनड में पीर ।
 सीर धारी चूको हो । ह० । ११ । गुरु मुख आस्य बडानजी
 हो । प । आ करमी रंग पीरंग । संग मत सीजे हो । पे । १२ ।
 सुमत सुपात्र मन्यगी हो । पे । राखा जिखसु रंग । म्यान रस
 पीज ह । पा । १३ ।

॥ ढाल चौथी ॥

दमी । गोनीचंड लडख ल ल फहीरी तत्र द राजन । कर
 कुमीयारी चेतन मारी । कीयो मील सीखगारी । कर फैयरीया
 उरदोया जब । कुमठी बाप पुछरीजी । सुख बाप हमारा ।
 समती मरमापो प्रीतम माणरो । इर नहीं राख्या कोर पाएरो ।

सुण पीता हमारा सु० । आ० १ । मो मछराल दुष्ट इम बोले ।
 करने आख्या राती । देख हमाल करुं चेतनमें । धुजावे किम
 छातीजी । सुण सुता हमारी मान मोहू ए चेतन रायरो । सुण
 पुत्री हमारी गरब गालु ए चे० । २ । सात कर्मसु सला वीच्यारी ।
 राखीज्यो हुसीयारी । देखो अत्र तुम हाथ हमारा । कैसे करा
 खुबारीजी । सुण भिरात हमारा मान मो० ३ । क्रोध मानका दीया
 मोरचा । तिसना तो पधराड । पाप अठारा दारु गोला तोपा दीनी
 भराइजी । सुण० ४ । राग धेग सिन्यांका नायक । लोव मुमाय
 पलारी । कपट उकील तुरत भीजवायो । करो वात सत्र जारीजी
 । सुण० ५ । पुत्री हमारी केम वीसारी । दुजो परण्या नारी
 । सनमुख आवो । चूक बतावो । देवो सवृती सारजी । सुण
 चेतनराजा पुत्री प्यारीरे मारा जीमसे । ६ । कुमी हमारी परण्या
 नारी । करस्थुं मनको जाणयो । हुस हुवे तो चडका आवो ।
 चुकला नहीं टाणोजी । सुण दुत भुतडा जाजे सुदोरे कहीजे
 स्वामने । ७ । ज्ञानका घोडा घोडा चीतकी चावक । वीनय लगाम
 लगाड । तप तरवार भावका भाला । खिम्या ढाल बधाइजी ।
 मुण नाथ हमारा हुटरे चडाड चेतन रायरी । ८ । सत मजमका
 दीया मोरचा । कीरीया तोप चडाइ । मभाय पंचका दारु सीसा ।
 तोपा दी वीचलाइजी । सुण० ९ । राम नामका रथ सीणगारथा
 । दान दीयाकी फोजा । हरख भावसे हाथी होदे । बेठा पावो मोजाजी
 सुण० १० । साच सीपाइ पायक पाला । सवरकी रखवाला
 धर्मराय का हुकम हुवा जब । फोजा आगी चालीजी । सु० ना०

धर्मराय तो भाग पासी । पाछे चतन राजा । म्होराएकी फोज
 हटाय । बाजे बसक्य बाजाजी । मु० ना० १२ । कम्पर या सो
 कम्पय सागा । सेठ सुरा धीरा । हुमती हुमलाणी हम बोले ।
 मरपां बाप ने बीराजी । सुख नाथ हमारा । भास टूटी नीसासा
 नाकनी । १३ । तीरथ चारु धीर चलाया । सबबा २ सखयात्रा
 । मरपो मादलीयो । गोठ बीखरी बरतय सुखसाठाजी । सुख नाथ
 हमारा बीत हुडरे चतन रायनी । १४ । पहला हसीपो म्होम्हीपतने
 पछे सल्लु मध । बीरप बीनी चरमरायजी । फेरी सरब दुबधनजी ।
 सुखना । १५ । कर्म हसीने केवल पाया । मुगत गया तठकल
 । सडाव कडे ममती चेत नर । बरस्यां मंगल मासजी । ये सुयो
 मव बीबा । सुयती चरापो गुपती गोपनी । १६ ।

। कन्तस सुमत हुमत नही बाद कीनो । नही लीजाप्यो
 पीर । असत कलपना सबंध छोडी । समजायो नीज बीरप ।
 । स । १ । द्यासटसास । चोढण्ल मोडी । जपुर सर मजराप
 । दुतीए सावज सुध पखनी । तेरसने रवीनारप । ते २ ।
 अकसर पदकय डाख गाथा । बीना बीचारो कोरये । आपो
 बे तो तियरय कोगे । मीठ्यां हुकई मोरये । मी ३ ।

॥ राखीको स्तवन लीख्यते ॥

देसी । गोपीचद्रा क्यास्ती छे । समगत साची बेन मासजी
 । केवल सोम्पो बीर । तीज राखडी आबसी । मारे क्यासी
 सन्यां बीर । सतक्य सल्लु बाटसु । बीमाठ छाजा खीररे । मरा
 केवल बीरा इस २ बांदू मारे राखडी । खाकसी । १ । रक्यांकी

राखी करु सरे । तपस्यांका नारेल । समंताकी सुपारी मेळुं ।
 लूग एलची फेर । चुंप करीने चोपडो सधर ल्याउ न करुं देररे
 । मारा के० २ ।। एमी संजोउ आरतीसरे । करुं सील सिणंगार ।
 पहर ओडने पीयर जाउं । केवल वीरो लार नेम धरमकी नावतीराउं
 वेठ उतर जाउं पार रे । मारी समगत वाइ चाल मीलाउं मुत्ती
 माएसे । ३ । धीरजकी धरती करुसरे । चारीत चित्रभाल ।
 दया दलीचो गुणकी गादी जेणां जाजम ढाल । मंगल घाउं वीर
 वदाउं । भर २ मोत्यां थालरे । मारा के० नीत नीत आवो मारे
 वारणे । ४ । समज सार सेवा वट्टसरे । वीया वीवेक वीच्यार ।
 समरसीरो लापसी सरे । ग्यान धीरत गुणकार । आट करमको करु
 चूरमो । महमा मग दस वाररे । मा० ५ । खीम्यारी करु खीचडी
 सरे । संजम चावल दाल । गुपतिका गूजा भरुं स रे ।
 करणी करु कसार । जीमें मारा भाइ भतीजा । सुमती को
 परवाररे । मारा. ६ । एसा बांदो राखी फुदा । तीलक चडावो
 सीस । पांच ग्यानकी मोर असरफी । वेनड दे आसीस । दान
 सील तप भावानास । कोहू पुरो मन जागीसरे । मारा. ७ । वेन
 भायांरी अविचल जोडी । कदीय न होए बीजोग । मीली २ ने
 बीछडे सरे । ए करमारो रोग । अविचल थान मुगतपद पावो
 । कदीय न करणो सोगरे । मारा. ८ । ओगणीसैं वरसं आसठ
 सरे । जेपुरमें वरसाल । दूजे सावण सुद पख पुनम । करी
 संपूरण ढाल । जडाव कहे ए भाव राखडी । करता मंगल
 मालरे । मारा. ९ ।

॥ च्यार सरणा लीख्यते ॥

दास्त इद्रसुतीजीरो लीजे नाम । पहला मंगल भरिहंत देव ।
 चोसठ इद्र सारे सेव । मत्तो दीखापो सुगती पप । सरख तुमारो
 भरिहंत । १ । चोवरीस अतसे पांवीस पाव । सदा सासवो केवस
 नाव । पाती कर मारो कीपो अंत । सरख २ । राज तबी म्हा
 वरत लीया । दोप अठला दूरा कीया । चारे दीपे मगवत ।
 सरख ० ३ । समोसरबाफी रचंना मली । देखवकी आवे मन
 रली । दस सख केवली सो कोडी संत । सर ३ । बगन तीरर्थ
 कर बीस कया । ठठकस्य सब राखो मया । सेवमने वारो पर
 वंत । सर । ४ । मंगल दूबो । वास्त मंगल देसवरे । राजगीरी
 नमरी मली । दूजे मंगल रे । सिब अस्त गुप्त माजीया । अटल
 ओ गुबारे । ओतमें ओत बीराजीया । केवस म्यान बरे । सोक
 सोक प्रकसीया । सोक सोक प्रकस कीनो । नही कोद आवस
 जाव । आठ करम खपाए सीवा । सेवो सरख सुबाब ५ । से
 १ । तीजो मंगल । वास्त आदए आद । आद जिखे सई । ए
 वास्त छे । तीजए तीजए साब मवततो । गूब सतवस दीपवाए ।
 सावए साब सुगतनो पव । कळब परसा बीतवाए । बीपर ५ २
 आरब देसके आप तीर परवारवाए । उलाखो बीचरे आरब देस
 माई । दीपावे जिब धर्मने । खिम्या बाप संतोष संजम । तोडे
 आई करमने । तोडे । जिने अरुंधी ज्ञान लीजे । दीजे सुपाव दान
 ५ । दसा मुनीको सरब सेव । पावे अविचल पान ५ । पा.
 १ । चोवो मंगल । वास्त दूबो मंगलरी छे । चोवो मंगलरे परम

दयामें भाखीयो । भव जीवारे सेठो हीयामें राखीयो । अणु कंपारे
समकित लकसण जाणीए । करुणा कररे धर्मी पुरस पीछाणीए ।
लीजे पोखधरे कीजे खतम खामणा । च्यारु सरणारे पलक पलकमें
लीजीए । अभए सुपात्ररे । सब प्राणीने ढीजिए । उ. अभए
सुपात्र दान मोटा । केवली भाख्यां दोएए । जेपुरमांए जडावकु
। सरणा नित नित होए ए । स. १ ।

श्री मंधीरजीरो स्तवन लीख्यते

देसी गुजराती तागारी. । धन धन खेव वीदेह प्रभुजी जडड
बीराजे सायब श्री मींद्र हो राज म्हा राजा । जठ. वारे पुरखदारा
ठाठ । प्र. नाटक नाच देव पुलंदरुं हो राज । म्हा. १ । सीरपर
वीरख आसोक प्र. फीटक सिंघासण पगतल छाजतो हो राज
। म्हा. २ । वाणीरा धुकार । प्र. जाणु भार्दवो गहरो गाजतो राज
म्हा. २ । सुण समज भव जीव । प्र. देखी पोखडी दूरासु ला-
जता हो राज । म्हा. ओडी मूल मीथ्याते प्र. हाथ जोडीने
सेवा साजता हो राज । म्हा. । ३ । दरसणीरी अवीलाख । प्र.
वाणी पुणवाने तसे जीवडो हो राज । म्हा. । हुं छुं अधम अनाथ
। प्र. भाग बडाने मीलसी पीपडो हो राज । म्हा. ४ । नही
जाणुं तुम माग । प्र. सनन मुख आइने सेवा किम करुं हो राज
। म्हा. मारग ओगट घाट प्र. नदीए पूराणी । पाणी किम
तीरु हो राज । म्हा. ५ । वालम रया परदेस । प्र. सार सेवगनी
बोलो कूण करे हो राज । म्हा. हाजरने दीया तार प्र. दूर रहेसो
कोनी किम तीरे हो राज । म्हा ६ । इच्छा हमारी एम । प्र.

बाँय पकड़ने क्याउ माफने हो राज । म्हा राजा चर्च म्हालीने रह
 र्चा कने हो राज । म्हा अपछंदो बननीस । प्र दुरबल दो-
 मागीरी सन्या आपने हो राज । महा० ७ । खमन्यो मुज
 अपगब । प्र० माफी करीने मानो बीनती हो राज । महा० नही
 मागू कबगार प्र० सिब सुख दीखे डील करो मती हो राज ।
 महा । ८ । सबसट साल रसाल । प्र समत १६ से जेपुर
 सहरमें हो राज । महा बे कर जोड बडाव । प्र गाढ़ साबब सुद
 ठंडी सहरमें हो राज महा । ९ ।

श्री मधीरजीरो स्तवन ली०

। बेसी क्षेत्र विदेह बीगभीपाजी काँइ भी मित्र भिनराए
 । श्री मरुत क्षेत्रमें में बस्याजी माव आपो किय विद बाए । जी
 गुबकता प्रमूखी । मा पर महर करीन्योभी राज । किरपा कर दर
 सब दीजोभी राज । आकषी । १ । प्याठ तीरव आपरबी कड
 । कड नेहा कड दूर । जी कड मानइ गीबतीमें गीबो हो राखो क्यू नी
 इमूर । जी २ । नरा यावू नेह गहोभी । थोने दूग न आव
 दाय । दोस नही प्रभु आपरोभी । मार पोतारी अ न्तरायबी । ३ ।
 गुबकताने तारस्योभी । नही इदक्यरो काम । पापी पार ठवारसो ।
 पारो रहसी चुगा जूग नाम । जी ४ । आठ पहर हीरदामें रास्तु
 । मूछ नही खीच मात । दरसब किम देबो नही । या इपरब-
 वाली बाव । जी० ५ । रोगादी मुदर्या तिरखाभी काँइ । जनम
 मरबकी जोड । भारत छत्र आवे नहीभी कोइ पेसी बतानो

ठोर । जी. ६ । सडसट साल सखा वणीजी । कहे जैपुरमां
जडाव । और कलू मागूं नहीजी । थारा दरसणरो गणो चाचजी । ७।

उपदेशी लीख्यते

। देसी तूह २ याय आवजी द्रढमे० जोयोजो ज जगतका तनक
तमासा । हे तन, जूठ सव आसा हे तन, सपन के सारासा जोवो
आं. १ । देहय लेमो परण पदारो । दे. अदवीच होए गया जंगल
वासा । जो. २ । पूरे मासे पुत्र जजायो पू. भूम पडंता नीकल
गइ सासा हे भू. जो. २ । पावडीए चडता गिर पडीयो । उड
गया हस पडी रही आसा । हे उड गया हंस धरी रही आसा ।
जो. ३ । जुगत करी जीमणने वेठो । भू. रह गया हाथका दाथमे
गाग्य हे० ४ । कार्या माया वादल छावा । का. गले मीले जिम
पाणी पतासा हेग. ५ । अंतकाले एक सरण धरमको अं. प्रभूजी
समर ले सास उसासा हे प्र. ६ । जो. कह सडसट साल जडाव
जेपुरमें । कहे, देख देह मोए आमत हासा दे दे. जोजो. ७ ।

पुज्यजी महाराजका गुण लीख्यते

देसी कूण जाणे पराया मनकी । मनकी तनकी लगनकीजी
कुंण जाणे पूज थारा मनकी । आकणी । मैं अरज कराछा थाने
अब दरसण दीजो मानेजी । कूण. १। थे ग्यान गेले होए आजो।
थाका सीरब संग लाजोजी. कूण. २ । थाने चार वरस होय
आया । माने वस २ वसायाजी कूण. ३ । कांइ आप बड़ा उपकारी

करबीमें कसर हमारीजी ६ ४ कांइ तारक बीरद बीचारे ।
 मारा अस्त्रुष मतीय बीठारोजी । ६ ५ । मै गुनेगार क पारा
 ये मवजल तारखहाराजी कुश ६ । मेंबाइ माझबो प्यारो । जेपुर
 क्रिम लागे खारोजी । कुश ६ । ये सभी सरीखा राखो म्दाने
 एक नीजर कर भाओ जी ६ ५ ८ । पारा दरसबकी बलीहारी
 बाने याद कर नरनारीजी । ६ ५ असे पुत्र या ६ । वष बाण
 कीरपा बारी । पूरीजे भास हमारीजी । कुश १० । वडाव जेपुर
 के मा । नित करवें दरसब ताइजी । कुश ११ । इतिरूप्य ।

। चोवीसी लील्यते ।

दे प्रमास ठठ श्री संत बीरचंद का हरक २ गुण गाठ । रीखव
 अन्ति संमव अमिनंदब । मुमठ पदम ठर प्याठ । सुपारसर्पत्र
 सुवच सीतस जी । चरबा सीस नमाठ । प्र १ । ईस बातबी ।
 बीमस अयत बी । बर्म संत दीस प्याठ । कं ५ अरीमसी मुनि-
 सोर तबीक । दरसब नित ठठ जाठ । २ । नमी नेम पारस म्हा
 बीरबीरी । सिरपर भांश बराठ । अरमान गुलपर गुलमाला ।
 वपता पाप पुलाठ । प्र ३ । मव सद्गु में ममठी पक्ष । बर्म जा
 ठराठ । हाक इइ सतगल उफ्यारी । आत्मा पार पोछाठ । प्र ४ ।
 खू बी कर्म कीच में प्रसुजी । उन्नस कीच बीष बाठ । नी जेपुर
 माए अडाव कइत हे । तुम गुण सगर नाठ । प्र ५ । इति